ज्ञानपीठ लोकोदय ग्रन्थमाला—हिन्दी ग्रन्थाङ्क ६८

जनम क़ैद

गिरिजाकुमार माथुर
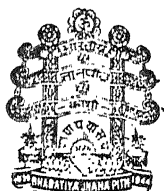
भारतीय ज्ञानपीठ • काशी

प्ररोचन

'जनम क़ैद' मेरे सात श्रव्य नाटकोंका संग्रह है। इन सभी नाटकोंमें श्रव्य चित्र ही अंकित मिलेंगे, दृश्यावलिके जो निर्देश स्थान-स्थानपर किये गये हैं वह मंचीय निर्देश न होकर नाटकके 'लोकेल' तथा वातावरण प्रस्तुत करनेके लिए दिये हैं। कविताकी भावनामयी भूमिके बाद वास्तविक दुनियाकी 'डिटेलभरी' ज़मीनके लिए मुझे नाटकोंका माध्यम अच्छा लगता है। इसीलिए मेरी रचना-प्रक्रियामें नाटक दूसरे स्थानपर आता है, आलो-चना तीसरेपर।

नाटक लिखनेकी ओर मेरा झुकाव १९३६ में प्रसाद तथा शेक्सपियरके संपर्कसे हुआ। हमारे घरमें पारसी स्टेजपर अभिनीत 'बेताब' तथा आग़ा हश्रके नाटकोंकी कुछ पुस्तकें थीं जो कच्चे मकानके धूल भरे वातावरणमें मुझे किताबोंमें इधर-उधर पड़ी मिल जाती थीं। उनकी भाषामें उर्दूकी भरमार रहती थी। इन नाटकोंके रुचिहीन वातावरण तथा इश्क़िया शेर आदिके कारण ही उन्हें बच्चोंकी पहुँचसे दूर रखा जाता था। उस समय नाटकोंकी कोई सुसंस्कृत परम्परा हमारे यहाँ बची नहीं थी और नाटक तथा नौटंकीके वातावरणमें बहुत अन्तर नहीं रह गया था। ऐसी स्थितिमें प्रसादजीकी साहित्यिक नाट्य कृतियोंने नाटकका गरिमामय रूप प्रस्तुत कर एक नई प्रेरणा प्रदान की। इसी प्रेरणासे इतिहासका विद्यार्थी होनेके नाते अपनी सांस्कृतिक विभूतिकी ओर मेरी दृष्टि गयी। किन्तु सुदूर पुरातनसे अधिक इतिहासके निकटतम पृष्ठ ही मुझे आकर्षित करते थे, विशेष रूपसे अठारहवीं और उन्नीसवीं सदीकी इतिहास-घटनाएं। क्योंकि उनमें चमत्कारकी मात्रा नहीं थी तथा आदमीकी सामान्य भावनाएँ, राग-द्वेष इत्यादि अपने जीवनकी वास्तविकतासे ही मेल खाते थे। इस

पृष्ठभूमिपर मैंने अपना सर्वप्रथम पञ्चअङ्कीय नाटक 'सिराजुद्दौला' लिखना आरम्भ किया। किन्तु न तो मैं ऐसे विषयका उस समय पूर्णतः निर्वाह कर सकता था और न लेखनीमें इतनी सामर्थ्य थी कि उसके विस्तारको ही सँभाल पाता। अतः 'सिराजुद्दौला' कभी पूरा नहीं हो सका। इसके बाद कितने ही नाटक मैंने लिखे और मुझे अनुभव हुआ कि एकाङ्की अथवा उससे भी लघु आकारके नाटक ही मेरी प्रकृतिके अधिक निकट हैं। ज़मानेकी तेज़ रफ़्तार और दबावोंके वही अधिक अनुरूप हैं। फिर जब बादमें मुझे श्रव्य-शिल्पका ज्ञान हुआ तो लगा कि मेरी नाट्य भावनाकी ज़मीन वही है। श्रेष्ठकला वह होती है जिसमें बाह्य उपादानोंका कमसे कम सहारा लिया जाता है। इस दृष्टिसे श्रव्य-शिल्पके आधारपर लिखे गये नाटकोंको मैं उत्कृष्ट कलाकी कोटिमें मानता हूँ।

अपने नाटकोंमें मैंने मध्यवर्गीय जीवनके 'सामान्य'को ही चित्रित किया है। वस्तुतः आम आदमियोंकी ज़िन्दगी विभिन्न रंगोंवाली सामान्य घटनाओंसे ही मिलकर बनती है, असामान्य या असाधारण बातें रोज़ नहीं होतीं और न उनके द्वारा जीवनकी स्वाभाविकताको आँका जा सकता है। वास्तविकता हमेशा सामान्य होती है और असामान्यता विकृति। यदि नाटकका माध्यम जीवनकी यथार्थताको अभिव्यञ्जित करनेके लिए है तो फिर उसे जीवनके सामान्य पक्षपर ही बल देना होगा। मैंने जीवनके विपर्ययोंको भी 'सामान्य'के माध्यमसे ही प्रस्तुत किया है। आम ज़िन्दगीमें हम हमेशा रोते ही नहीं रहते, हँसी और उदासी डोरीमें बटे हुए धागोंके समान बराबर साथ-साथ मिलकर चलती रहती हैं। 'कमल और रोटी' जैसे ऐतिहासिक घटनापर आधारित नाटकमें भी सभी पात्र उस युगके सामान्य जीवनसे उठाये गये हैं और इतिहासप्रसिद्ध व्यक्तियोंके बदले साधारण जनोंके द्वारा क्रान्तिकी सामाजिक गन्ध देनेकी चेष्टा मैंने की है।

मैंने अपने अधिकांश नाटकोंको पारिवारिक जीवनमें ही प्रस्थापित किया है तथा मध्यवर्गीय गृहस्थीके छोटे-छोटे सुख-दुःखको नाटकोंका विषय

बनाया है। यथार्थ जीवनके व्यंग्य विपर्ययको मैंने साङ्केतिक रूपसे व्यक्त किया है, उसे नाटकोंका सीधा आधार बनाकर एकाध मार्मिक स्थलपर प्रयुक्त किया है। पात्रोंकी भाषाको व्याकरण-सम्मत रखनेके बदले दैनिक जीवनकी बोलचालके निकट रखा है। इसी कारण वाक्योंमें जगह-जगह 'पेरेन्थेसिस' वाक्यांश, टुकड़ों आदिका प्रयोग मिलेगा। वास्तविक जीवनमें अमुक पात्र किस प्रकार बोलता, यही दृष्टि हर जगह रखी है।

नाटकोंकी पृष्ठिभूमिके सम्बन्धमें केवल इतना ही, शेष बात नाटक स्वयं कहेंगे।

—गिरिजाकुमार माथुर

• अनुक्रम •

ज

न

म

क़ै

द

•

: मनोवैज्ञानिक ट्रेजेडी :

दृश्य १

[स्थान—एक मध्यवर्गीय परिवारकी छोटे लॉनवाली कॉटेज और ड्राइंगरूमका बरामदा। संध्याका समय है, बरामदेमें कुछ फ्राकचेयर्स पड़ी हैं, बीचमें एक टेबिल। एक कोनेमें स्टूलपर फोन रखा है। एक बड़ी आरामकुर्सी पर बलराजके वृद्ध रुग्ण पिता माथेपर हाथ रखे घोर चिन्तामग्न दिखायी देते हैं। हाथमें मुड़ा हुआ एक ख़त है जिसे अभी-अभी उन्होंने खोला है। मेज़पर पानीका एक गिलास, दवाकी शीशी और चम्मच रखा है। वहीं एक बड़ा-सा ख़ाकी लिफ़ाफ़ा पड़ा है और मेज़पर तथा नीचे फटी काग़ज़की चिंदियाँ। सामनेकी कुर्सीपर बुशशर्ट और पैंट पहने सतीश बैठा है—स्वस्थ, सुन्दर, नौजवान। यह बलराजका मित्र और सत्याके पति केप्टेन महेन्द्रका सहपाठी है। पीछे ड्राइंगरूमका दरवाज़ा है जिसके परदेको खोल कर बलराज आता है]

बलराज—क्या ख़बर है पिताजी !

पिता—वही हमेशाका मजमून है। पता नहीं लगा। तलाश जारी है। बलराज, मालूम होता है इण्टेलिजेंस वालोंने एक ही मज़मूनके ख़त छपा रखे हैं। जैसे पहलेसे लिख कर रख लिये हों। इतने महीने गुज़र गये, लड़ाईमें पकड़े हुए तमाम क़ैदी वापस चले आ रहे हैं लेकिन [**साँस लेकर**] महेन्द्रका अब तक कोई पता नहीं। सत्याकी क़िस्मत ही ऐसी थी।

बलराज—वहिनकी क़िस्मतको क्यों दोष दे रहे हैं, पिताजी ! इसमें क़िस्मतकी क्या बात है ! क्यों न सतीश ?

सतीश—हाँ, सत्या भाभीकी क़िस्मतको क्या, महेन्द्रकी क़िस्मत कहिए। सारी लड़ाई क़रीब-क़रीब ख़त्म हो चुकी थी तब तक उन्हें फ्रण्ट पर जानेका हुक्म न मिला और मिला तो शादीके ठीक एक हफ़्ते बाद। [**साँस भरता है**]

बलराज—क्या बतायें सत्या तो एक हफ़्ते भी सुख न देख सकी। [**ठहर-कर**] आज सुबहसे अब तक रो रही है। जबसे वह ख़त पढ़ा है कि क़ैदियोंका हर कैम्प ढूँढ़ लिया गया पता नहीं चला, तबसे उसके आँसू थमते ही नहीं। शोभा समझा-समझा कर हार गयी। मुझसे तो बहिनका दु:ख नहीं देखा जाता·······

पिता—बलराज, मुझे इस बातका पहिले ही से डर था। फ़ौजी ज़िन्दगीका क्या ठिकाना है। आज आरामसे बैठे हैं कल सामने मौत नाच रही है। [**साँस भरकर**] लेकिन अब तो सब बातें अपने मनकी होती हैं, बुज़ुर्गोंकी कौन सुनता है!

बलराज—पिताजी, अब गुज़री हुई बातोंकी याद करनेसे क्या फ़ायदा? यह तो है नहीं कि फ़ौज वालोंकी शादियाँ न होती हों। फ़ौज भी एक कैरियर है।

सतीश—नहीं बलराज, बाबूजी ठीक कहते हैं। महेन्द्रने जब फ़ौजमें नाम लिखाया था तब सभीने मना किया था। उन्होंने तो मुझे भी भर्ती हो जानेको बहुत मजबूर किया था। लेकिन मैंने कहा, न बाबा, मैं तो यहीं रहकर बिजनेस करूँगा। [**किंचित् हँसकर**] मैं चूँकि उम्रमें ज़रा छोटा था इसलिए बेवकूफ़ करार दिया गया।

बलराज—ख़ैर ऐसे छोटे भी नहीं थे। महेन्द्र और तुममें दो ही सालका तो फ़र्क़ था।

पिता—नहीं सतीश, तुम्हीं अच्छे रहे। यहीं रहकर लड़ाईका पूरा फ़ायदा उठाया और अच्छी तरह अपना काम जमा लिया। अच्छा किया जो फ़ौजमें भर्ती नहीं हुए। [**साँस लेकर**] महेन्द्र बड़ा धोखा दे

गया हम सबको। अराकान पहुँचते ही जापानियोंका क़ैदी हुआ। वहाँसे वे उसे बटेविया ले गये। क़ैदमें जाने क्या-क्या मुसीबतें झेलीं होंगी। सतीश, हम और तुम तो यहाँ आरामसे बैठे रहे, पर महेन्द्रपर क्या-क्या गुज़री होगी, यह कौन जानता है। अराकानसे बटेविया....और अब....अब कहाँ है ?

सतीश—क्या बताया जाय बाबूजी, हमलोग भरसक कोशिश तो कर रहे हैं। चारों तरफ़ ख़तोंका जाल बिछा रखा है। अपनी तरफ़से तो हम कोई ऐसी जगह न छोड़ेंगे जहाँ महेन्द्रके पाये जानेकी ज़रा भी संभावना हो। आगे हमारी क़िस्मत........

पिता—लेकिन सतीश, इन दो बरसोंमें इतनी जगहें ढूँढ़ ली गयीं, जहाँ-जहाँ फ़ौजी क़ैदियोंके कैम्प थे वहाँकी नई-पुरानी सभी लिस्टें देख लीं गयीं, पर सब बेकार। अब यह टोकियोका ख़त भी देख लो। एकदम वही पुराना मज़मून है।

बलराज—[**झुंझलाकर**] पिताजी, आप तो वही बात बार-बार सोचते हैं और घबराते हैं। यह सही है कि महेन्द्रको अबतक वापस आ जाना चाहिए था पर अब क्या किया जाय। हर तरहसे पता लगा लिया। कोशिश करना ही तो हमारे हाथ है। [**ठहरकर**] लेकिन मेरा मतलब तो यह है कि आख़िर हम कबतक सोचते रहेंगे। इस तरह हमने सत्याकी ज़िन्दगी अधरमें अटका रखी है।

सतीश—हाँ, यह तो सच है, उनकी ज़िन्दगी एक उलझन बनकर रह गयी है।

पिता—इसी उलझनको तो दूर करना है सतीश। उसकी हालत मुझसे नहीं देखी जाती। न खाती है न पीती है, दिनभर सिवा रोनेके और कुछ नहीं, रातमें मुश्किलसे सोती है।

[**शोभा आती है**]

सतीश—नमस्ते शोभा भाभी !

शोभा—नमस्ते ।

पिता—शोभा बेटी, क्या हाल है सत्याका, दिनमें कुछ सोई या नहीं ?····

शोभा—क्या सोती हैं, आँखें बन्द करके पड़ी रहती हैं । हम समझते हैं सो गयी होंगी, लेकिन थोड़ी देर बाद देखो तो जाग रही हैं और आँसू बह रहे हैं ।

सतीश—[**साँस भरकर**] कितना दुःख उठा रही हैं । मैं भी इतना समझाता हूँ लेकिन कोई असर नहीं होता ।

शोभा—यह तो ज़िन्दगी भरका दुःख हो गया है सतीश बाबू ! लेकिन फिर भी आपके समझानेका सबसे ज़्यादा असर होता है । हमसे तो वह किसी तरह नहीं समझतीं । [**ठहरकर**] क्या कोई नई ख़बर है पिताजी ?

पिता—कोई ख़बर नहीं है शोभा ! रंगून, बर्मा, मलाया, सिंगापुर, सुमात्रा, जावा, फिलीपीन, जापान सब जगह ढूँढ़ ली गयीं, सब जगहोंसे न पाये जानेके ख़त आ गये····फिर महेन्द्र कहाँ है ?

बलराज—यह सवाल मत पूछिए पिताजी ! मेरी समझमें तो अब ढूँढ़ना बेकार है । न जाने यह दुविधा कब मिटेगी ।

शोभा—तो क्या, यह समझ लें कि····

बलराज—[**बात काटकर**] कुछ समझनेकी ज़रूरत नहीं है शोभा···· तुम जाओ सत्या अकेली है····अकेलेमें घबरायेगी । उसने कुछ खाया ?

शोभा—मैं तो कहकर थक गयी, कुछ नहीं खाया अब तक । आप ही देखिए ।

बलराज—अच्छा, मैं देखता हूँ । सतीश, तुम यहाँ हो ना ?

सतीश—हाँ, हाँ तुम देख आओ····[**बलराजका प्रस्थान**]

पिता—सतीश बेटा, उसने कुछ नहीं खाया····उफ़ मैं क्या करूँ, ख़ुद बीमार रहता हूँ । [**खाँसता है**] आज बलराजकी माँ होती तो

[**गला भर आता है**] तो सत्याकी यह हालत....कैसे बरदाश्त होती उसे ?

सतीश—बाबूजी, आप फ़िक्र क्यों करते हैं, हम लोग तो मौजूद हैं। उनकी देख-रेखकी आप कोई चिन्ता न करें, आपकी तबीयत तो ठीक है न ?

पिता—अब क्या ठीक होगी सतीश ! [**हँसकर धीरेसे**] यह घाव तो शायद अब ज़िन्दगीके साथ ही जायेगा। बुढ़ापेमें यह भी देखना नसीब था। भाग्यने उम्रपर जो मुहर लगा दी है वह तो मिट नहीं सकती। यह देखो—[**लिफ़ाफ़ा उठाता है**] यह ख़ाकी लिफ़ाफ़े आज दो सालसे लगातार चले आ रहे हैं। हर बार लगता है जैसे महेन्द्रकी ख़बर अब लाये....अब लाये....लेकिन [**ठहरकर**] सबमें एक ही मज़मून होता है। दो सालसे कोई फ़र्क़ नहीं....इन लिफ़ाफ़ोंमें सत्याकी ज़िन्दगी....

सतीश—[**बात पलटकर**] अरे हाँ, वह तो मैं कहना भूल ही गया था बाबूजी....चीनके कौंसल जनरलका ख़त आया है....उन्होंने निजी तौरपर हमें मदद देनेका वायदा किया है....मैं काफ़ी दिनोंसे वहाँ से पत्र-व्यवहार कर रहा था।

पिता—[**ज़रा स्वस्थ होकर**] क्या लिखा है उन्होंने....मुझे तुमने पहिले नहीं बताया। कहाँ है वह ख़त....

सतीश—अभी दिखाता हूँ [**पोर्टफोलियोसे ढूँढ़कर ख़त निकालता है और खोलकर वृद्धके हाथोंमें देता है**] लिखा है कि हम पूरी तरह चीनमें भी ढूँढ़नेकी कोशिश करेंगे....शांघाईके पास फ़ौजियों का एक कंसन्ट्रेशन कैम्प था। वहाँ शायद पता लग जाय। मैंने उत्तर दे दिया है।

पिता—[**पुनः उदास होकर**] दे दो सतीश। लेकिन जवाब मैं जानता हूँ। [**साँस भरकर**] जवाबमें जो कुछ होगा वह मुझे अभीसे

पता है। [**खाँसता है**] उफ़···आज खाँसी फिर बढ़ गयी [**बलराज वापिस आता है**]

सतीश—घबराइए मत बाबूजी, अभी हम चीनमें और तलाश करायेंगे···· तब तक निराश होनेसे कोई फ़ायदा नहीं है····बलराज !

बलराज—हाँ। लेकिन सतीश, कितनी तलाश अभी और की जायेगी ? इस तरह सत्याकी सारी जिन्दगी घुल-घुलकर तलाश ही में बीत जायेगी···और आख़िरी फैसला कभी न होगा।

पिता—क्या फैसला करना चाहते हो बलराज ? आजकल तुम्हारी कोई बात मेरी समझमें नहीं आती। [**ठहरकर**] ख़ैर···यह बताओ, सत्याने कुछ खाया ?

बलराज—नहीं, कुछ नहीं खाया। मेरे जाते ही उसने फिर रोना शुरू कर दिया। मुझसे तो यह अब बर्दाश्त नहीं होता। यह दो साल इसी तरह आँसुओंमें बीते हैं। अब यह सब ज़ब्तके बाहर हो गया है पिता जी।

पिता—तो बेटा, तुम्हीं बताओ क्या करें ?

बलराज—[**ठहरकर**] अगर हम यह मान लें कि महेन्द्र [**विराम**] अब इस संसारमें नहीं है····

पिता : [**हाँफकर**] बलराज !

बलराज—तो सत्या कमसे कम अपनी आइन्दा ज़िन्दगी फिर बना सकती है, फिर बसा सकती है।

पिता—बलराज !

बलराज—मैं ठीक कहता हूँ पिताजी, नाराज न होइए। इसीमें सत्याकी भलाई है। आखिर उसकी शादी हुई न हुई बराबर थी। और अभी तमाम जिन्दगी उसके सामने है। सतीश भाई, तुम क्या कहते हो, तुम्हारी राय सबसे ज़्यादा ज़रूरी है।

सतीश—यह तो सही है बलराज कि उनकी हालत नहीं देखी जाती···· [**संकोचसे**] उनकी आइन्दा ज़िन्दगी किसी तरह फिर बन जाय, इसमें हम सबको ख़ुशी ही होगी। लेकिन, लेकिन····

पिता—नहीं, यह नहीं हो सकता, बलराज! नहीं हो सकता। महेन्द्र ज़रूर वापिस आयेगा। तुम नहीं····नहीं समझ सकते बलराज, इस समस्याका यह हल कभी नहीं हो सकता। यह जन्म भरका काँटा है। महेन्द्रके वापस आनेमें ही सत्याकी भलाई है। महेन्द्रको वापिस आना ही पड़ेगा।

बलराज—और अगर वापिस न आये तो····

पिता—तो····तो क्या! नहीं नहीं, उसे वापिस आना पड़ेगा (**गला भर आता है**) सतीश!

सतीश—बाबूजी!

पिता—सतीश, मेरे पास आ जाओ बेटा। तुम्हें देखकर दिल भर जाता है। जाने क्यों विश्वास-सा होने लगता है कि महेन्द्र मिल जायगा।

सतीश—मैं यहीं तो हूँ बाबूजी, आप घबराइए मत····

पिता—मेरा हाथ पकड़ लो सतीश····हाँ अब ठीक है। ओह, महेन्द्र जब मेरा हाथ पकड़ कर उठाता था, कुछ ऐसा ही लगता था।

बलराज—महेन्द्रके इतने गहरे दोस्त जो ठहरे।

पिता—[**ग़ौरसे देखकर**] तभी बलराज, तभी। ओह····[**खाँसता है**] महेन्द्रने तो हमारी कमर ही तोड़ दी। ज़िन्दगीकी सारी उम्मीदें ख़त्म हो गयीं।····अब तो मुझसे चला भी नहीं जाता बेटा, सतीश!

सतीश—आराम कीजिए बाबूजी! [**आरामकुर्सी पर सँभाल कर लिटा-सा देता है**] बलराज भाई, शोभा भाभी वहाँ उनके पास हैं न?

बलराज—हाँ समझानेकी कोशिश कर रही है। देखिए पिताजी, अब भी सोचनेका मौक़ा है। हम लोग यूँ ही दिन बिता रहे हैं। महीनों पर महीने निकलते जाते हैं लेकिन कोई पता नहीं चलता। आख़िर कब तक सत्या इस तरह रहेगी। यह हाल रहा तो मुझे लगता है वह ज़्यादा ज़िन्दा भी नहीं रह सकती।

सतीश—बलराज भाई, तुम तो सबसे ज़्यादा घबराते हो।

बलराज—माफ़ करो सतीश, मेरा मन ठिकाने नहीं है। क्या करूँ, बहिन की हालतने मुझे पागल कर दिया है। [**सोचकर**] लेकिन सतीश, मैं जो कहता हूँ उसीसे यह दुःख मिट सकता है। और कुछ समझ में नहीं आता। अब महेन्द्रकी तलाशमें हमें ज़्यादा उम्मीद नहीं रखनी चाहिए।

सतीश—लेकिन सवाल तो उनको समझानेका है, उनके मान जानेका है। और ऐसी हालतमें उन्हें किस तरह यह सलाह दी जा सकती है? कहेगा भी कौन?

बलराज—तुम! तुम्हारी ही बात सत्या सबसे ज़्यादा मानती है।

सतीश—[**सोचकर**] उनसे कहूँ····नहीं नहीं [**ठहरकर**] इतना तो न घबराओ बलराज, इस तरह हताश मत होओ। सब ठीक हो जायगा।

पिता—सच बेटा, सब ठीक हो जायगा [**साँस भरकर**] अब तक तो सब ग़लत हुआ है।

सतीश—आप तो निराशावादी हो गये हैं पिताजी! [**सोचकर**] यह ठीक है बलराज कि यों उनकी ज़िन्दगी बरबाद होते देखी नहीं जा सकती। पर····मैं तो यह कह रहा था पिताजी कि वह····क्या कह रहा था····हाँ वह चीनी कौंसल जनरलका ख़त····

बलराज—[**किञ्चित् झुंझला कर**] देखो सतीश, यह इतने दिन क़रीब-क़रीब इसी तरहके सोच-विचारमें निकल गये हैं और अब तक

कोई फ़ायदा नहीं हुआ। इधर सत्या दिन-दिन घुलती जा रही है। न रातको चैन, न दिनको। यह तो ठीक है कि दुःख इंसान पर ही आते हैं, लेकिन बड़ीसे बड़ी घटना घटती है और ख़त्म हो जाती है। थोड़े दिन उसकी अपार पीड़ा होती है, दुख होता है फिर धीरे-धीरे आदमी भूलने लगता है, धीरे-धीरे दुनियाके सब काम करने लगता है। यह भूल न होती तो आदमी ज़िन्दा न रहता। सत्याके केसमें इसका बिल्कुल उल्टा है। एक घटना दो सालसे लगातार घटती जा रही है, न घटनाका अन्त होता है, न दुःखका और न उस दुःखको भूलनेका मौक़ा आता है। इस तरह कितने दिन उसकी ज़िन्दगी और चल सकेगी ?

पिता—[**घबड़ाकर**] सतीश बेटा, बताओ क्या किया जाय। [**हाथ मलकर फिर मुट्ठियाँ बाँधते हुए**] क्या किया जाय। हे भगवान्....

सतीश—यह तो मैं मानता हूँ बलराज कि उनकी हालत बड़ी नाज़ुक हो गयी है। मैं भी देख रहा हूँ कि उनकी सेहत दिन-दिन गिरती जा रही है। बिल्कुल पीली पड़ गयी हैं, वरना अभी कुछ दिन और....

बलराज—तो उसे दिन-दिन इसी तरह गिरने दिया जाय और हम हाथ पर हाथ रखे बैठे रहें ?

सतीश—हाथ पर हाथ रखे तो नहीं बैठे। इतनी दौड़-धूप तो जारी है।

बलराज—यह हाथ पर हाथ रखना ही है। हमारी आँखोंके सामने वह एक टूटे फूलकी तरह मुरझायी चली जा रही है और हम कुछ नहीं कर सकते। उसके मुरझानेका क्रम नहीं रोक सकते—बस यही ख़्याल मुझे पागल बना देता है और मैं चाहता हूँ कि उसे जैसे भी हो, बचा लूँ। एक ही बहिन है।

पिता—सत्याके बारेमें ऐसा मत कहो बेटा ! उसे कुछ नहीं होना चाहिए।

उसकी ज़िन्दगीपर कोई आँच नहीं आनी चाहिए। वर्ना इससे पहले मेरी ज़िन्दगीका ख़ात्मा समझो।

सतीश—नहीं बाबूजी ! आप विश्वास रखें। उन्हें कुछ नहीं होगा।

बलराज—लेकिन जो हालत है उससे तो हम देखतेके देखते रह जाँयगे।

सतीश—नहीं-नहीं, ऐसी बात नहीं होगी।

पिता—[**सतीशका हाथ पकड़कर**] हाँ, ऐसे ही कहो बेटा। सत्याके बारेमें कुछ भी और सोचना... [**गला भर आता है**]

बलराज—पर बात यही है सतीश। असलियतको हम कबतक टालते रहेंगे, अब सच्चाईका सामना करना ही पड़ेगा। महेन्द्रकी तलाशमें अब जितने दिन और गुज़रेंगे, यह समझ लो, सत्याके जीवनकी उतनी घड़ियाँ घट जाँयगी। अब तो एक ही चारा है...इधर या उधर।

पिता—यही ख़्याल तो मुझे और खाये जा रहा है। उधर महेन्द्रके न मिलनेका दु:ख, इधर सत्याकी दिन-दिन गिरती हालत। सतीश, यह ऐसी मजबूरी है जिससे भगवान् ही पार लगाये तो लग जाय, वर्ना नावमें तो पानी भर ही चुका है।

बलराज—मेरे कहनेका तो यह मतलब है कि दिन फ़िज़ूल गुज़रते चले जा रहे हैं। हमें आगेका ध्यान भी तो कभी-न-कभी करना ही पड़ेगा। आज नहीं कल। मान लीजिए महेन्द्र नहीं मिले और जिसका हमें डर है वही निकला। तब हमारे सामने यह सवाल फिर आयेगा। उसे आज ही सोचना क्या बुरा है। आख़िर तब भी हमें सोचना ही पड़ेगा।

पता—कैसे सोच लें बलराज। यह कैसे मान लें कि महेन्द्र—नहीं-नहीं... [**कुर्सीसे आधा उठ-सा जाता है**]

बलराज—पिताजी, आप तो एकदम भावावेशमें बह जाते हैं। सतीश,

भाई तुम भी अपनी राय दो न। तुम इस बारेमें बिलकुल ख़ामोश हो।

सतीश—कुछ समझमें नहीं आता, क्या राय दूँ! इधर उनका दुःख भी सिरसे ऊपर हो गया है उधर महेन्द्रका अबतक कुछ पता नहीं। ऐसी हालतमें क्या किया जाय ?

बलराज—जो मैं कहता हूँ। सत्याको फिरसे नयी ज़िन्दगीके लिए तैयार किया जाय।

पिता—[**काँपकर**] बलराज !

बलराज—पिताजी, आप ज़रा ग़ौर कीजिए।

[**कुछ देरके लिए एकदम सन्नाटा छा जाता है**]

पिता—[**साँस भरकर**] जब तुम लोगोंकी यही राय है तो दिलपर पत्थर रखकर इस बातपर भी, [**रुककर**] इस बातपर भी [**एकदम पलटकर**] कैसे ग़ौर करूँगा सतीश ?

सतीश—बाबूजी, आप, आप ज़रा, [**वृद्धको बिठाते हुए और शीशी खोलकर चम्मचसे दवा निकालते हुए**] लीजिए, यह दवा पी लीजिए।

बलराज—आप समझते होंगे मैं कितना नीच हूँ....जो महेन्द्रके बारेमें अभीसे ऐसा सोचता हूँ....लेकिन सत्याकी हालतने मुझे मजबूर कर दिया है कि मैं उसे फिरसे ख़ुश देखनेके लिए कुछ भी कर डालूँ।

[**शोभा घबराई हुई आती है**]

शोभा—सत्या बहनको जाने क्या हो गया है, अब तक चुप थीं और आँसू भी पोंछ डाले थे।....अब जाने क्या-क्या बातें कर रही हैं। कभी कहती हैं, ख़ाकी दीवार नहीं टूटती। फिर कहने लगीं, भाभी.... घरमें जितने लिफ़ाफ़े हैं सबको जला दो....

पिता—[**चौंककर**] क्या, क्या हुआ ? बलराज जल्दी जाकर देखो।

सतीश, डाक्टरको फोन कर दो। ख़ाकी दीवार और लिफ़ाफ़े····
उफ़····

शोभा—मुझे बताइए क्या करूँ! वह तो जाने क्या-क्या कहे जा रही हैं····

[**बलराज फोनके पास जाता है**]

पिता—[**आधा उठते हुए**] जाओ बेटा सतीश, जल्दीसे जाओ, तुम जाकर देखो····

सतीश—अच्छी बात है [**वृद्धको फिर कुर्सी पर लिटाकर**] आप मत उठिए बाबूजी! घबराइए मत। मैं अभी देखता हूँ।

[**पर्दा उठाकर जाता है। कुछ देरके लिए सन्नाटा**]

बलराज—[**फोन बिना किये वापिस आता है**] तो बोलिए पिताजी···इस उलझनको और अधिक बढ़ानेसे क्या फ़ायदा है?

शोभा—क्या कोई खास बात है, मैं भी सुन सकती हूँ?

पिता—क्या बताऊँ बेटी शोभा! बलराजने ऐसा सवाल खड़ा कर दिया है जिसको न सोचते बनता है न छोड़ते। इधर कुआँ है उधर खाई····

बलराज—अब कुआँ और खाईका सवाल ही नहीं है। अब तो सिर्फ़ एक ही सवाल है····सत्याकी ज़िन्दगी····

शोभा—तो फिर आप क्या करनेको कहते हैं····उपाय ही क्या है?

बलराज—उपाय है····पिताजी मान जायें तो····

पिता—[**सिर पकड़कर**] मेरे मानने न माननेसे क्या होता है। [**सिर झंझोड़कर**] मुझसे यह सब मत कहो। मैं न सुन सकता, न यह सोच सकता।

शोभा—लेकिन बात क्या है? क्या उपाय आप बता रहे हैं?

बलराज—यह कि सत्या अपनी ज़िन्दगी फिर शुरू करे। महेन्द्रके लिए अब और ठहरना सत्याकी ज़िन्दगी खत्म कर देना है।

शोभा—कैसी बातें कर रहे हैं आप [**हँसकर**] बहिन और भाई दोनों एकसे हो रहे हैं।

बलराज—नहीं शोभा, यह हँसीकी बात नहीं है। ग़ौर करनेकी बात है।

शोभा—लेकिन ऐसा क्या हो गया। क्या महेन्द्रजीके बारेमें पता लग गया कि····

बलराज—लग गया ही समझो। अब तक नहीं लगा, अब आगे क्या लगेगा। अब तो चाहिए कि सत्या फिरसे शादी कर ले और महेन्द्रको भूल जाय।

शोभा—औरतके लिए भूलना सम्भव नहीं है।

बलराज—तुम तो पुराने ख़्यालातकी ही रहीं।

शोभा—लेकिन सत्या बहिनसे कैसे यह बात कही जायगी? कौन कहेगा?

बलराज—कहनेको क्या है? धीरे-धीरे उसके मनमें यह बात बिठानी पड़ेगी।

शोभा—लेकिन कहेगा कौन?

बलराज—सतीश।

शोभा—[**धीरेसे**] यह तो मैं जानती थी।

बलराज—[**चौंककर**] क्या जानती थीं?

पिता—[**आँखोंपरसे हाथ हटाकर**] क्या जानती थीं बेटी?

शोभा—[**रुककर**] कुछ नहीं····यही कि [**सोचते हुए**] आप एक न एक दिन यही सोचेंगे।

बलराज—अच्छा, मैं तो समझा कि····[**सोचते हुए**] ख़ैर। तो बोलिए पिताजी! आप क्या चाहते हैं?

पिता—क्या कहूँ बेटा, मुझे यह भी देखना नसीब था। [**साँस लेकर फिर सख़्त होकर**] बलराज, तुम यह सब सोच तो रहे हो, लेकिन कौन ग़ैर आदमी शादी करनेको राज़ी हो जायगा? और ऐसी अनहोनी सूरतमें [**फिर सिर पकड़ लेता है**]

बलराज—ग़ैर आदमीकी कोई बात नहीं।

शोभा—तो और कौन?

बलराज—आदमी तो घरमें ही हो सकता है। आप लोगोंके समझने और माननेकी बात है।

पिता—[**ताज्जुबसे**] तुम्हारा मतलब है कि····

बलराज—हाँ, सतीशसे। बोलिए, क्या कहते हैं····

पिता—हे भगवान्! यह मैं क्या सुन रहा हूँ। [**खाँसता है**] सतीशसे सत्या····उफ····नहीं, नहीं। नहीं [**हाथोंसे मुँह ढक लेता है**]

[**दरवाज़े पर खटखट होती है**]

शोभा—बलराज, जल्दी देखो कौन है [**खाँसता है, साँस बढ़ गई है**]

[**बलराज बाहर चला जाता है**]

शोभा—साँस बढ़ रही है पिताजी, आप उठिए नहीं। एक चम्मच दवा दूँ।

पिता—[**खाँसते हुए**] नहीं, रहने दो। दवासे अब कुछ न होगा।

शोभा—ऐसा मत सोचिए पिताजी! [**शीशी खोलकर**] एक चम्मच पी लीजिए।

पिता—मैं कुछ नहीं सोच रहा शोभा। कुछ भी नहीं सोच रहा। दिमाग़ बिल्कुल खाली हो गया है। वह तो मैं इसलिए कह रहा था कि दवामें अब कुछ असर नहीं रहा। [**बनावटी तरहसे किंचित् हँसकर**] बहुत दिनसे पी रहा हूँ न?

बलराज—[**वापस आते हुए**] इण्टेलिजेंसवालोंका ख़त है पिता जी!

पिताजी—[**घबड़ाकर**] क्या लिखा है? महेन्द्रका पता चल गया? इधर लाओ [**पढ़कर**] उफ़ [**खाँसता है**] उम्मीद रखना बेकार है। पूरा ख़्याल है कि लड़ाईमें ही काम आये—[**खाँसकर**] बलराज [**ज़ोरसे**] शोभा!

[**आवाज़ सुनकर अन्दरसे सतीश जल्दी-जल्दी आता है**]

सतीश—[**आते हुए**] क्या हुआ?

बलराज—यह ख़त आया है ।

[सतीश ख़त पढ़ता है]

सतीश—[साँस भरकर और माथे पर हाथ रखकर] क़िस्मतके आगे क्या चारा है !

बलराज—ख़ैर सतीश, तुम सत्याके पास ही रहो—हम लोग यहाँ पिताजी को देखते हैं ।

सतीश—अच्छी बात है ।

[सतीश फिर भीतरके कमरेकी ओर वापिस चला जाता है]

दृश्य–२

[भीतर आँगन पार करके एक सजा हुआ सोनेका कमरा, जिसके एक कोनेमें तकियेदार पलंग है । कोनेमें लम्बे शीशेवाली ड्रेसिंग टेबिल जिसके सामने छोटा कुशन रखा है । पलंगके पास एक छोटी टेबिल है जिसपर लिफ़ाफ़ोंका ढेर लगा है, इनमें ज़्यादातर ख़ाकी लिफ़ाफ़े हैं । कुछ पलंगपर भी पड़े हैं । पलंगके पास एक गद्दीदार कुर्सी है जिसपर सतीश बैठा है । पलंगपर सत्या कुहनी टिकाये अधलेटी है । सामने तिपाईपर चाय रखी है । बातके बीचमें पर्दा खुलता है]

सतीश—ज़रा समझनेकी कोशिश करो सत्या !

सत्या—[चौंककर] क्या ? तुमने मेरा नाम लिया । सत्या भाभी नहीं कहा ? क्यों नहीं कहा ? क्यों ?

सतीश—नहीं, अब नहीं । देखो मेरी तरफ़ । यह बात ठीक नहीं कि तुम खाना न खाओ । इससे क्या फ़ायदा है । इसके मानी यह हैं कि मैं भी आजसे अनशन शुरू कर दूँ । और घरके सब लोग भी ।

सत्या—तुम क्यों शुरू कर दोगे अनशन ?

सतीश—मेरी मर्ज़ी। मैं अब तुम्हारा दु:ख बँटा लेना चाहता हूँ, इसलिए।

सत्या—[**साँस लेकर**] नहीं सतीश, मेरा दु:ख कोई नहीं बँटा सकता। यह ग़लत है। और जो चीज़ ग़लत है वह सही नहीं हो सकती। इस तरह मेरा दु:ख और बढ़ेगा।

सतीश—लेकिन तुम चाहती ही यह हो। दूसरे भी आपके साथ ही साथ घुलेंगे यह विश्वास रखिए।

सत्या—क्यों घुलेंगे? मैं ही खुद घुल जाना चाहती हूँ। मेरा दु:ख तो अब शायद ही दूर हो सके। मैं तो अब कुछ नहीं चाहती सतीश। ज़िन्दा भी रहना नहीं चाहती [**आवाज़ एकदम करुण हो जाती है**]

सतीश—यह नहीं हो सकता, यह कभी नहीं हो सकता। हमारे यहाँकी यह फिलासफी नहीं है। कष्टोंसे ऊपर उठकर जीवित रहना, दु:ख-सुखको एक परछाईंकी तरह आता-जाता समझना हमारा सारा दर्शन, सारा फलसफ़ा रहा है। सोचो सत्या।

सत्या—[**काँपकर**] फिर तुमने सत्या कहा! सतीश, तुम यह क्या कर रहे हो?

सतीश—मैं ठीक ही कर रहा हूँ। मेरी तरफ़ देखो।

सत्या—नहीं। [**मुँह फेरकर**] नहीं। पहिले बताओ तुम क्या चाहते हो?

सतीश—अनजान बननेसे क्या फ़ायदा है, सत्या। ख़ैर, इस वक़्त तो मैं यह चाहता हूँ कि यह चाय ठंडी हो रही है और हमारी राह देख रही है।

सत्या—देखने दो। मैं भी तो अबतक राह ही देख रही थी। सतीश, ज़िन्दगीमें अब कुछ बाक़ी नहीं, जो मैं फिरसे वही सब करने लगूँ। दो सालसे ज़्यादा हो गये और कोई ख़बर नहीं।

सतीश—राह देखना अब बेकार है। महेन्द्रको अब तुम भूल जाओ। यह

देखो, अभी-अभी यह लिफ़ाफ़ा आया है। इसीसे तुम्हें मालूम हो जायगा।

सत्या—[**एकदम चौंककर**] लिफ़ाफ़ा ! ओह, नहीं-नहीं; उसे मत निकालो। मत निकालो उसे। मैं नहीं देख सकती।

सतीश—[**ताज्जुबसे**] क्यों, क्या बात है ? इसमें क्या है। तुम चुप क्यों हो गयीं सत्या ?

सत्या—नहीं-नहीं, मैं इसे हर्गिज़ नहीं देख सकती। [**आँखें हाथोंसे बन्द कर लेती है**] इसे अपनी जेबमें रखो सतीश ! छिपा लो। बहुत दूर, वहाँ, वहाँ ले जाओ। मैं नहीं देखूँगी।

सतीश—बात क्या है ? इतना क्यों डर गईं ? ख़ैर····यह लो। मैंने रख लिया। अब तो आँखें खोलो।

सत्या—[**साँस लेकर**] उफ़ ! आँखें बन्द कर लेने पर भी चारों तरफ़ वही दिखते हैं। सपनोंमें भी हज़ारों ख़ाकी लिफ़ाफ़े। वह भी ऐसा ही लिफ़ाफ़ा था जिसमें उन्हें एकदम लड़ाईपर चले जानेका हुक्म मिला था। उस दिनसे इन लिफ़ाफ़ोंने आज तक पीछा नहीं छोड़ा। लिफ़ाफ़ोंकी दीवार। सतीश, इस दीवारको तोड़ दो। इस दीवारको तोड़ दो किसी तरह। यह दीवार नहीं टूटती, सतीश। वह, वह, इस दीवारमें वह बन्द हो गये हैं सतीश—

सतीश—सत्या, यह तुम क्या कह रही हो ?

सत्या—मैं कुछ नहीं कह रही। कुछ नहीं। कहाँ कह रही हूँ। वह, वह, वह दी-वा-र [**काँपती है**]

सतीश—आँखें खोलो सत्या, ऐसी कोई दीवार नहीं है। कहीं कोई दीवार नहीं है।

सत्या—नहीं, वह दीवार नहीं टूटती। काश, उसे कोई तोड़ पाता। ख़ाकी दीवार। उनकी वर्दी भी ख़ाकी थी। उस दिन वह पूरी वर्दी पहिनकर गये थे।

सतीश—सत्या [**ज़ोरसे**] देखो, मैं उस दीवारको अभी तोड़े देता हूँ। लो देखो, अभी तोड़ता हूँ। आँखें खोलो।

सत्या—[**आँखें बंद किये हुए**] तुम तोड़ दोगे ? सच। कैसे ?

सतीश—ऐसे [**लिफ़ाफ़ा फाड़ देता है। सत्या आँखें खोलती है**] ऐसे और ऐसे। इसी तरह यह दीवार खण्ड-खण्ड होकर टूट जायगी।

सत्या—[**शान्तिकी साँस**]

सतीश—मैं यह दीवार तोड़ दूँगा। बिलकुल इसी तरह। क्या तुम्हें मुझपर विश्वास नहीं। बोलो सत्या !

सत्या—हाँ, मुझे सत्या ही कहो। कहो। मुझे और कुछ किसीने नहीं कहा। उन्होंने तक नहीं।

सतीश—पहिले तुम मुझे सतीश कहो।

सत्या—[**बिलकुल सुदूर खोई हुई आवाज़में**] सतीश !

सतीश—सत्या !

सत्या—[**चौंककर**] नहीं-नहीं। मेरा हाथ छोड़ दो। यह क्या हो गया सतीश ? यह तुमने क्या किया ? नहीं, यह ग़लत है। यह नहीं हो सकता। यह अब कभी नहीं हो सकता।

सतीश—क्यों नहीं हो सकता ! सत्या, यही होना चाहिए। तुम अपनी ज़िन्दगी कबतक बरबाद करोगी ? ऐसे कबतक चल सकता है।

सत्या—नहीं, [**हाथ छुड़ाकर**] हमेशा ऐसे ही चलेगा। सतीश, मेरी ज़िन्दगीमें अब ऐसा कुछ नहीं रहा जो मैं किसीको दे सकूँ। यह ज़िन्दगी ख़ाली हो गई है, ख़त्म हो गई है। अब इसके बारेमें सोचना फ़िज़ूल है। मैं शून्य हूँ और शून्यसे कोई क्या पा सकता है ?

सतीश—तुम क्या जानो। तुम क्या नहीं दे सकतीं। तुम्हें पाकर क्या नहीं मिल जायगा। मैं तो इसकी कल्पनासे ही सिहर उठता हूँ। तुम कहती हो, तुम शून्य हो—सत्या, पर शून्यसे

ही सारा निर्माण हुआ है, सारी दुनिया निकली है। इसी शून्यमें फिर एक नया स्वर्ग बस सकता है। सिर्फ़ तुम्हारे इशारेकी देर है।

सत्या—यह क्या कह रहे हो सतीश ? मत कहो, काश, इस समस्याका यह हल हो सकता। [**साँस भरकर**] लेकिन अब तो ज़िन्दगी सिर्फ़ राह देखनेमें ही ख़त्म होगी। इसका सिर्फ़ यही हल है।

सतीश—कबतक राह देखोगी ? सत्या, इससे तो अब कोई फ़ायदा नज़र नहीं आता।

सत्या—ज़िन्दगीभर राह देखनी पड़ेगी। वह कभी भी आ सकते हैं। किसी दिन भी लौट सकते हैं। अगर वह लौट आये तो।····तो नहीं सतीश—इस समस्याका कभी अन्त नहीं होगा।

सतीश—कैसे नहीं हो सकता। इस तरह तुम्हारी फूल-सी ज़िन्दगी बरबाद हो जाय, यह मैं नहीं देख सकता। मुझे तुम्हारी हालतने मज़बूर कर दिया है कि····सत्या ज़रा समझनेकी कोशिश करो।

सत्या—क्या कोशिश करूँ !

सतीश—क्या मैं फिर कहूँ ? मेरी तरफ़ देखो। तुम्हें मैं बहुत-बहुत सुख दूँगा।

सत्या—सुख ! शादी ? नहीं-नहीं। किसकी शादी होगी [**आँखें बन्द कर लेती है**] शादी [**खिलखिला कर हँस पड़ती है**] [**फिर चुप होकर और सोचकर**] मैं जानती हूँ कि मेरा जीवन तो बरबाद हो ही चुका है लेकिन मुझे किसी दूसरेकी ज़िन्दगी बरबाद करनेका क्या हक़ है !

सतीश—दूसरेकी ज़िन्दगी खराब होगी या अच्छी, इसका फ़ैसला तो किसी दूसरेपर छोड़ दो। देखो सत्या, दुनियाका यह नियम है कि विनाश

के बाद ही रचना होती है। पतझरपर ही वसन्त आता है—और फिर जो एक हफ़्तेकी विवाहित रहे—वह कोई विवाहित है ?

सत्या—नहीं सतीश, नहीं।

सतीश—सोचो सत्या, एक बार सब पिछला भूलकर ज़रा सोचो तो सही। तुम तो सोचनेसे भी इनकार कर रही हो।

सत्या—क्या सोचूँ ?

सतीश—यही जो मैं कह रहा हूँ····अच्छा, एक बार मेरी तरफ़ देखो।

सत्या—नहीं।

सतीश—क्यों ?

सत्या—मुझे डर लगता है।

सतीश—[**खुश होकर**] तुम्हें मुझसे डरका अहसास हो रहा है सत्या ! तो इसका मैं यह अर्थ समझूँ कि····

सत्या—[**बात काटकर**] जो चाहो समझो [**ठहरकर**] तुम यह सब क्या कर रहे हो सतीश !

सतीश—[**पास आकर**] सूखी लता फिरसे हरी हो रही है सत्या [**हाथ थाम लेता है**]।

[**दूरसे चूड़ियोंकी आवाज आती है**]

सत्या—हटो, शोभा भाभी आ रही हैं।

दृश्य–३

[**बाहरी ड्राइंगरूम, जिसमें आज सजावट अधिक है। एक ओर एक बड़ी-सी टेबिल लगी है जिसपर चीनीके बर्तन रखे हैं, और चायका सामान। ड्राइंगरूममें बलराज और सतीश बैठे हैं। शाम ६ बजेका समय**]

बलराज—रमेश और मोहन अब तक नहीं पहुँचे सतीश। पाँचका वक़्त दिया था।

सतीश—आते ही होंगे। इंतज़ाम तो ठीक है न।

बलराज—सब ठीक है। कल सिर्फ़ गिने-चुने बीस-पच्चीस मेहमानोंको बुला लेंगे। ज़्यादा शोर मचानेसे क्या फ़ायदा है [**साँस लेकर**] चलो अच्छा हुआ। सत्या मान गयी, वर्ना उसकी ज़िन्दगी बेकार बरबाद हो जाती। [**शोभा आती है**] शोभा, सत्या तैयार हुई? तुम उसके पास ही रहना। कहीं अकेलेमें फिर कुछ और न सोचने लगे।

शोभा—तैयार हो रही हैं, मैं वहीं थी। वैसे तो ख़ुश ही नज़र आती हैं।....तो क्या [**ठहरकर**] आज चायपर सिर्फ़ शादीकी खबर ही देंगे अपने दोस्तोंको? और रजिस्ट्रेशन?

सतीश—रजिस्ट्रेशन कल हो जायगा। उसमें क्या देर लगती है। सारी बात तो सत्याके मान जानेकी थी।

शोभा—[**धीरेसे**] सुनिये....आपने महेन्द्रजीकी खोज करनेके लिए चीन लिखा था....कहीं ऐसा न हो कि....

बलराज—शोभा; अब फिर महेन्द्रका नाम न लेना। भूलकर भी वह चर्चा मत चलाओ। हर्गिज़....सतीश तुम सत्याके पास जाओ।

सतीश—अच्छी बात है। लो वह तो यहीं आ रही हैं। बलराज, तुम लोग ज़रा हट जाओ। [**बलराज, शोभा चले जाते हैं**]

[**सत्याका प्रवेश**]

सतीश—ड्रेसिंग हो गया रानीका?

सत्या—सतीश, यह सब क्या हो रहा है? मेरी समझमें कुछ नहीं आ रहा है। कुछ भी नहीं।

सतीश—सब ठीक हो रहा है सत्या! कैसी चाँद-सी लग रही हो। यह

बिन्दी कितनी खूबसूरत लगती है तुम्हें। अच्छा लाओ, यह फूलोंके गजरे भी पहिना दूँ।

सत्या—पहिन लूँगी। मन नहीं होता।

सतीश—लाओं मैं पहिना दूँ। आज मेरे हाथसे पहिन लो। इधर लाओ····

सत्या—क्या कर रहे हो सतीश! मेरा मन जाने कैसा हो रहा है। समझ बिलकुल काम नहीं कर रही।

सतीश—अब कलसे हमारी नयी ज़िन्दगी शुरू होगी। सत्या····[**साँस भरकर**] कितना भाग्यशाली हूँ मैं। तुम नहीं समझ सकोगी।

सत्या—मुझे तो कुछ समझमें नहीं आ रहा है। सब लोग मुझे इस तरह देखकर क्या कहेंगे ?

सतीश—कहेंगे एक चाँदकी जगह दो हो गये।

[**बाहर बरामदेमें कुछ आवाज़ें**]

बलराज—आओ भाई रमेश, नमस्ते मोहन! आओ-आओ।

रमेश—हलो सतीश! भाई, बहुत अच्छा हुआ। चाहिए भी यही था। आख़िर सत्याजी की ज़िन्दगी बेकार ही बरबाद हो जाती। क्यों न मोहन ?

मोहन—मुझे तो यह सुनकर बड़ी ही खुशी हुई। शादी कब है ?

बलराज—कल रजिस्ट्रेशन हो जायगा। और शामको दावत।

रमेश—भाई कांग्रेचुलेशन्स!

मोहन—सत्या जी, आपको भी मुबारिक हो।

[**सब बैठते हैं। भीतरसे शोभा अपनी दो मित्रों सहित आती है। नमस्कारके उपरान्त**]

सतीश—बैठो भाई। शोभा भाभी, तो फिर देर क्यों की जाय ? चाय बनाइए न ?

शोभा—अभी लीजिए।

रमेश—भई सतीश, हमें सुनकर बड़ी ख़ुशी हुई। और सत्याजी, आपने भी बिल्कुल ठीक किया। आख़िर इस तरह....

शोभा—हाँ, हाँ, और क्या। शुगर कितनी....

रमेश—एक चम्मच!

सतीश—मुझे तो तीन ही दीजिएगा।

मोहन—सतीश, बड़े होने पर भी तुम्हारी चीनीकी लत नहीं छूटी....

सतीश—भाई, बिना शक्करकी मिठासके तो ज़िन्दगी बिलकुल ही कड़वी हो जाय।

[**सब हँसते हैं**]

शोभा—ये लीजिए....

रमेश—तो पहिले टोस्ट तो प्रपोज़ किया जाय....क्यों मोहन!

मोहन—हाँ, हाँ।

रमेश—अच्छा तो [**विराम**] मिस्टर सतीश और मिसेज़ सत्याकी सेहतके लिए...

मोहन
बलराज
शोभा
कल्पना
रेखा
—आमीन। [**दरवाज़ा खटकता है**]

[**करुण पृष्ठ संगीत आरम्भ होता है**]

सत्या—कौन है? दरवाज़ा किसने खटखटाया?

सतीश—कोई भी नहीं है।

सत्या—नहीं, कोई है। देखो, ज़रूर कोई है।

सतीश—कोई नहीं है। बलराज, ज़रा देख लो।

बलराज—अच्छा [**बलराज बाहर जाता है, फिर एक लम्बा ख़ाकी**

लिफ़ाफ़ा हाथमें लिये लौटता है। लिफ़ाफ़ा खोलनेकी आवाज़]
कुछ नहीं, ख़त है।

सत्या—[**सोफ़ेसे खड़े होकर**] ख़ाकी लिफ़ाफ़ा···उफ़ उसे यहाँ मत लाओ····मत लाओ भैया····

सतीश—कोई बात नहीं है सत्या ! ज़रा मुझे दो बलराज।

सत्या—नहीं, नहीं, मैं इस लिफ़ाफ़ेको नहीं देख सकती। इसे फाड़ दो···· जला दो····

सतीश—ठीक है बलराज ! फाड़ दो, क्या ज़रूरत है।

सत्या—भैया, वही ख़ाकी लिफ़ाफ़ा, वही, उफ़····

सतीश—बलराज, क्यों खोल रहे हो ? मैं कहता हूँ ले जाओ उधर न ! फाड़ दो।

सत्या—नहीं, नहीं; फाड़ो मत। देखने दो। भैया, ज़रा बताओ। इस लिफ़ाफ़ेमें क्या है ? भैया····

सतीश—सत्या, पागल मत बनो। बलराज, भाई क्यों पढ़ रहे हो ? फाड़ दो न !

बलराज—भाई, कोई ऐसी बात नहीं है। सब ठीक है। पढ़नेमें क्या हर्ज़ है ?

सत्या—लिफ़ाफ़ोंकी दीवार····सतीश····नहीं····नहीं। यह सब क्या हो रहा है ? क्या हो रहा है—[**गिरने-सी लगती है**]

रमेश—सतीश, ज़रा सम्भालो सत्याको !

सतीश—यह क्या कर रही हो सत्या ! आँखें खोलो।

बलराज—सत्या, सुनो डरनेकी कोई ज़रूरत नहीं है। इसमें लिखा है····

सत्या—मत पढ़िए, मत पढ़िए भैया !

बलराज—कुछ नहीं सत्या। घबराओ मत। इंटेलिजेंसवालोंका ख़त है। लिखा है, आपके पिछले ख़तका हम अबतक कोई जवाब न दे सके। कैप्टेन महेन्द्रका कोई पता नहीं है और आइन्दा भी कोई

उम्मीद नहीं। इसलिए अब उनकी फाइल क्लोज़ की जा रही है। सत्या, देखो यह तो अच्छा ही हुआ।

सतीश—सत्या, आँखें खोलो।

[**पृष्ठ संगीत ऊँचा हो जाता है**]

सत्या—नहीं सतीश, अब नहीं। मुझे माफ़ करो। उनकी फाइल ही क्लोज़ हो गयी। उफ़, ख़ाकी लिफ़ाफ़ेमें यह लिखा है। [रोकर] सतीश, उस फाइलके काग़ज़ोंमें मेरी ज़िन्दगी भी क़ैद हो गई है। हमेशाके लिए क़ैद हो गई है····

[**पृष्ठ संगीत अधिक ऊँचा होकर धीरे-धीरे कम होता हुआ विलीन हो जाता है। पर्दा गिरता है**]

म

ध्य

स्थ

•

: सामाजिक व्यंग्य :

दृश्य-१

[एक मध्यवर्गीय घरका बैडरूम, जिसमें दो खिड़कियाँ दिखाई देती हैं। खिड़कियोंपर रंगीन पर्दे पड़े हुए हैं। कमरेमें दो दरवाजे हैं, एक जो ड्राइंगरूममें खुलता है और दूसरा बीचकी गैलेरी में। रातका वक़्त है। कमरेमें दो अच्छे पलंग बराबर-बराबर बिछे हुए हैं। एक पलंगपर मनोहर चादर ओढ़े सोता नजर आता है। उसकी पीठ दूसरे पलंगकी ओर है। इस दूसरे पलंगपर लीला बैठी स्वेटर बुन रही है। एक कोनेमें पलंगोंसे कुछ दूर रेडियो रखा है। गैलरीका जो हिस्सा दरवाजेसे दिखाई देता है उसमें एक टेलीफोन रखा नजर आता है। कार्निसपर एक टाइम-पीस रखी है। जिसमें रातके ११ बजा चाहते हैं। रेडियो धीरे-धीरे चल रहा है और अन्तिम एनाउंसमेण्टकी आवाज़ आती है]

रेडियो—इस समय रातके ग्यारह बजा चाहते हैं, अब हमारी तीसरी सभाका कार्यक्रम समाप्त होता है।

[रेडियोकी विलीन होती ध्वनि। हलके ख़र्राटेकी आवाज़]

लीला—[उठकर रेडियो बन्द करती है। फिर पलंगपर आकर बैठ जाती है। फिर धीरेसे कहती है] देखना, क्या सो गये !

मनोहर—[नींदमें ही] हूँ····ऊँ····

लीला—बड़ी जल्दी नींद आ गयी आज। [विराम, जिसमें नींदकी साँसें सुनाई दें] इतनी जल्दी सो गये ?

मनोहर—[ऊँघते हुए] ऐं····हाँ····

लीला—मैंने कहा बड़ी जल्दी सो गये····ग्यारह ही तो बजा हैं।

मनोहर—ऊँ····हूँ····सोने दो लीला।

लीला—मालूम होता है, आज कुछ काम नहीं करना, अभीसे सो गये।

मनोहर—क्या कह रही हो ?

लीला—मैंने कहा आज जल्दी नींद आ गई। अभी तो ग्यारह ही बजा है।

मनोहर—तो क्या रातभर जागता रहूँ ? [**जम्हाई लेकर**] सुबहसे शाम तक तो दफ़्तरमें जुता रहा। बस अब मैं सोऊँगा, बोलो मत !

[**जम्हाई लेकर फिर सोनेकी कोशिश करता है**]

लीला—मुझे तो नींद नहीं आ रही। मैं क्या करूँ [**ठहरकर**] देखना, कल तुम दफ़्तरमें सरलाकी शादीकी बात जरूर पक्की कर लेना।

मनोहर—हूँ, अच्छा····

लीला—सुना भी कि यों ही कह दिया, अच्छा। रोज़ रातमें कह देती हूँ और तुम सुबह दफ़्तर जाकर भूल जाते हो। आज फिर मौसीका टेलीफोन आया था। सरलाकी शादीके लिए बहुत फ़िक्र है।

[**ख़र्राटेकी आवाज़**]

लीला—फिर सो गये। सोते-सोतेमें सुनते हैं नहीं और रोज़ कह देते हैं 'अच्छा'। सरलाकी बात कह रही हूँ मैं।····

मनोहर—[**फिर जागकर ऊँघते हुए**] क्या कहा ?

लीला—मैंने कहा मौसीका टेलीफोन आया था।

मनोहर—[**घबड़ाकर**] क्या दफ़्तरसे टेलीफोन आया है ? [**चादर सिरसे हटाकर**] किसका है ?

लीला—दफ़्तरसे नहीं, मौसीका टेलीफोन।

मनोहर—[**झुँझलाकर**] एख्खे, मौसीका टेलीफोन। खामख़ाह ऐसी अच्छी नींदसे जगा दिया। आया है तो मैं क्या करूँ, तुम सुन लो मुझे सोने दो।

लीला—अभी नहीं, दिनमें आया था। सरलाकी शादीके लिए बहुत फ़िक्रमें हैं।

मनोहर—तो मैं क्या करूँ ? इस वक़्त मुझे नींद आ रही है।

लीला—तुम्हें रोज़ याद दिला देती हूँ कि ब्रजमोहनलालके लड़केसे सरला की पक्की कर लो, पर तुम वापिस आकर कह देते हो, आज भूल गया, कल ज़रूर बात कर लूँगा। तुम्हारे ही दफ़्तरमें साथ काम करते हैं और तुम्हें इतनी-सी बात करनेकी फ़ुर्सत नहीं मिलती।

मनोहर—[**चिढ़कर**] तुम्हें क़सम है जो तुम मुझे सोने दो।

लीला—[**खिसियाकर**] मैं सोनेके लिए मना तो नहीं कर रही। सो जाओ पर यह बात ज़रा ध्यानसे सुन लो। यह काम जैसे भी हो कराना है—

मनोहर—[**पूर्ववत् चिढ़कर**] अभी जाऊँ ब्रजमोहनलालके घर ?

लीला—तुम भी हद कर देते हो। [**खिसियानी हँसीके साथ**] अभी जानेको मैं कब कह रही हूँ।

मनोहर—नहीं-नहीं अभी चला जाऊँ ? तुम्हारा यही तो मतलब है ! तभी तो अंकुश लिये पीछे पड़ी हो। न तुम्हें चैन न तुम्हारी मौसीको।

लीला—[**नरम पड़कर**] बात यह है कि ब्रजमोहनलालका लड़का बहुत अच्छा है। कितने ही घरोंसे उसकी बात चल रही है। तुम देर-पर-देर करते जा रहे हो, फिर ऐसा अच्छा लड़का हाथसे निकल जायगा। इसलिए कहती हूँ कि उनसे पक्की कर लो। तुम्हारे दोस्त भी हैं, तुम्हारा कहना नहीं टालेंगे।

मनोहर—अच्छा बाबा, अच्छा। डेढ़ महीनेसे तुमने मेरा पीछा लिया है। हर रोज़ वही क़िस्सा, और वह भी जब मुझे अच्छी नींद आने लगती है तभी तुम छेड़ती हो। दिन भर कुछ नहीं कहतीं।

लीला—दिन भर तुम घरपर ही तो बैठे रहते हो जो तुमसे कहूँ। न तुम्हें फ़ुरसत मिलती न मुझे चैन। एक टाँगसे सुबहसे इतनी राततक फिरती रहती हूँ। अब जाके वक़्त मिलता है तो तुम कहते हो नींद ख़राब कर दी। मुझे तो मौसीसे यह कहते अब शर्म आने लगी है कि तुम आज भी भूल गये, कब तक कल-कल कहूँ।

मनोहर—तो तुम क्या करनेको कहती हो, कहो तो अभी चला जाऊँ। कह तो दिया।

लीला—बेकार नाराज़ क्यों होते हो। आरामसे सो जाओ। बस कल दफ़्तर जाते ही सारी बात पक्की कर लेना। सरलाकी जन्मपत्री भी उस लड़केसे बहुत अच्छी जुड़ी है। कहीं तुम्हारी भूलसे लड़का हाथसे न निकल जाये। मुझे तो बड़ी फ़िक्र है।

मनोहर—मेरी भूलसे। यह अच्छी रही। शादी हो तो मेरी वजहसे, न हो तो मेरी वजहसे। लड़का हाथ-वातसे कुछ नहीं निकलेगा मैंने कह दिया। मैं जब चाहे तै करा दूँगा, किसी दिन भी, पर रातको सोते वक़्त नहीं।

लीला—तुम तै करा दो तो देखना, मौसी जनमभर तुम्हारा एहसान नहीं भूलेंगी। सच कहती हूँ, वह तो इतनी-इतनी तुम्हारी तारीफ़ करती हैं कि बस क्या बताऊँ ?

मनोहर—एहसान नहीं भूलेंगी तो मुझे क्या कुछ खज़ाना दे देंगी।

लीला—इसमें लेने-देनेकी क्या बात है जी, जैसी मेरी बहिन वैसी तुम्हारी। बस तुम फ़ौरन पक्की करा दो फिर इन्हीं जाड़ोंमें मौसी शादी कर देंगी। हमें भी तो कुछ-न-कुछ तैयारी करनी पड़ेगी। मुझे तो बड़ी घबराहट हो रही है। इतना सारा काम सिरपर है। सभी सामान बाज़ारसे जाकर लाना है। सबके कपड़े, अपनी तैयारी, फिर [**रुककर**] सरलाके लिए साड़ियाँ और एकाध जेवर भी तो तुम दोगे न ?

मनोहर—[**व्यंग्यसे**] कपड़े, सामान, जेवर, हूँ ! और वह भी अभीसे। सरलाके पैदा होते ही तुमने क्यों नहीं कहना शुरू किया, यही ताज्जुब है। शादी भी तै करवाऊँ, दौड़-धूप भी करूँ, और ऊपरसे साड़ी, जेवरका चन्दा भी दूँ। खूब रही।

लीला—अरे-ऽ तो क्या तुम सरलाको साड़ी जेवर भी नहीं दोगे ?

मौसी तो तुम्हारी तारीफ़ोंके पुल बाँधती रहती हैं। तुम अपनी बदनामी कराओगे ?

मनोहर—देखो लीला, मुझे ऐसी बदनामी-नेकनामीका कोई डर नहीं। [साँस लेकर] डर सिर्फ़ मुझे इस वक़्त अपनी नींदकी तरफ़से है जिसे आज तुम क़त्ल करनेपर तुली हुई हो।

लीला—क्या बुरी-बुरी बातें करते हो। अच्छा, सो जाओ अब। बिल्कुल नहीं बोलूंगी, रात भी बहुत हो गई है।

मनोहर—[मुँह ढाँककर] चलो तुम्हें यह ख़याल तो हुआ।

लीला—हाँ, लेकिन देखना, कल भूलना मत। ब्रजमोहनलालसे ज़रूर बात कर लेना ! मौसी टेलीफोनपर फिर मुझसे पूछेंगी। उनका दिनमें कई बार टेलीफोन आता है।

मनोहर—[जम्हाई लेते हुए] अच्छा भाई, अच्छा।

[मुँह ढककर, दो-चार करवटें लेकर सो जाता है। लम्बा विराम जिसमें घड़ीकी टिक्-टिक् सुनाई देती है। फिर टेलीफोनकी घंटी कुछ देरतक बजती रहती है।]

मनोहर—[ऊँघते हुए] क्या है ?

[कोई नहीं बोलता]

[फिर कुछ जागकर] क्या कह रही हो। [पूर्ववत् मौन जिसमें फोनकी घंटी सुनाई दे] यह टेलीफोन कहाँ बज रहा है। [फिर एकदम जागकर] एख्खै, यह तो हमारा ही है, नाकमें दम कर दिया। जाने कौन है इस वक़्त। [ठहरकर] मैंने कहा लीला, ए लीला, ज़रा टेलीफोन तो जाकर देखो।

[लीलाकी झपकी लग गई है]

मनोहर—अरे क्या सो गई लीला ? [ठहरकर] मुझे जगाकर और आप सो गई। वाह····वा····वा। जाने किसका फ़ोन है। यह कम्बख़्त सोने थोड़ी देगा। बजने दो मैं क्या करूँ, रातमें भी

लोगोंको चैन नहीं। लीला, ए लीला ! [**लीला पूर्ववत् सोती रहती है**]
सोती हो तो सोती रहो। मैं भी नहीं उठता। मुँह ढँकके सोये जाता हूँ जो सुनाई न दे। बजता रहे मेरी बलासे····
[**करवट बदलकर और चादर कसकर लपेटकर लेट जाता है। टेलीफोनकी घण्टी निरन्तर बज रही है।**]
[**झुँझलाकर, चादर फेंककर**] एख्खे, जान ले ली, अब क्या ख़ाक नींद आयगी। कोई फोन नहीं उठाता, लेकिन फोन करनेवालोंको इससे क्या पड़ी है····[**मुँह चिढ़ाकर**] बस लिये खड़े हैं, देखें कब तक कोई नहीं उठायेगा। बड़ा वक़्त है इन फोन करनेवालोंके पास। इतनी मर्तबा लीलासे कहा कि रातको दस बजेके बाद फोनका रिसीवर नीचे उठाकर रख दिया करो। मगर,. म····म····गर मैं कहता हूँ लीला, क्या बनकर सो रही हो कि मेरी ही नींद हराम हो। लीला, ए लीला [**हिलाता है**] अरे, यह तो बिलकुल सो गई। चलो सोने दो बेचारीको। दिनभरकी थकी है। मैं ही देखूँ।
[**उठकर चप्पल पहिनता है और बदन झटकाता हुआ गैलरीमें जाता है। टेलीफोनका रिसीवर झटकेसे उठाकर जोरसे बोलता है।**]
जी, जी, हाँ—कहाँसे बोल रही हैं आप। अच्छा····अच्छा जी-जी-जी—मैं मनोहर हूँ फर्माइए—जी नहीं, रातकी कोई बात नहीं····तकलीफ····[**किंचित् हँसी**] नहीं-नहीं····कोई बात नहीं···· जी ? जी हाँ, हाँ सो गई····हाँजी, बच्चे भी। हाँ - आँ····रात काफ़ी हो गई, ज़रा जल्दी सो जाते हैं। सुबह स्कूल दफ़्तरके लिए जल्दी उठना पड़ता है। नहीं····नहीं····कोई बात नहीं···· हाँऽऽ अभी तो ग्यारह ही बजा है····जी हाँ सारी रात पड़ी है।

फर्माइए इस वक़्त कैसे टेलीफोन किया····हाँ····हाँ····बच्चे सब ठीक हैं····क्या कहा आपने ? जी····रिजल्ट ? किसका रिजल्ट ? ····दिनेशका रिजल्ट ? जी हाँ, वह तो कभीका आ चुका····हाँ तिमाही इम्तिहान था····उसको तो डेढ़ महीना भी हो गया···· ····हाँ [**जम्हाई-सा लेता हुआ**] अच्छे नम्बरोंसे पास हुआ। लेकिन यह तो उसका इन्टरनल, मेरा मतलब भीतरी ए····ए···· घ····घरेलू इम्तिहान था—

[**फोनपर हाथ रखकर**]

एख्खे सारे घरकी कथा पूछेंगी, अपनी नहीं कहेंगी। नहीं····नहीं ····नहीं····आपसे बात नहीं है। मैं आपसे अपनी किसी बातके बारेमें नहीं कह रहा था। वह तो यों ही ए····ए····मैं कह रहा था कि····क्या कह रहा था, हाँ ! वह दिनेशके इम्तिहानकी बात। जी····जी····आपकी दुआ है····हाँऽऽ दफ़्तर तो मैं रोज़ ही जाता हूँ। क्यों, कोई खास बात है ? जी हाँ····मैंने कहा न बच्चे सो गये हैं; हाँ लीला भी [**अचकचाकर**] मेरा मतलब 'वो' भी सो गईं [**संकोचसे**] जगाऊँ ? जी आप कहें तो जगाऊँ। क्या मुझसे ? हाँ हाँ फर्माइए क्या बात है, मुझे बता दीजिए मैं लीला [**जल्दीसे**] मेरा मतलब उनसे कह दूँगा····अच्छा कोई बात नहीं····जी हाँ ब्रजमोहन लाल हाँ, हाँ मेरे दफ़्तरमें ही काम करते हैं····हाँ बता चुकी हैं। उनसे मैंने बात की ? जी क्या कहा ? हाँ, हाँ, वो-वो मैंने बात की थी····और-और····कर लूँगा····जल्दी···· कल····हाँ····कल ही लीजिए····बात यह है कि दफ़्तरमें ज़रा काम ज़्यादा रहता है फुरसत नहीं मिल पाती और यह फुरसतकी बातें हैं····नहीं आप बेफ़िक्र रहें····नहीं, नहीं भूलूँगा····चायपर बुला लूँ ? किसको ? ब्रजमोहनलालके लड़केको ? अच्छा····ब्रजमोहन-लालको खुद····अच्छा, ठीक है देखूँगा····न होगा तो ऐसा ही

करूँगा। और फर्माइए···हाँ-आँ···ख़याल तो है तै हो जायगी···· मेरी तारीफ़ क्या है जी, वाह···मैं किस काबिल हूँ। सब आप बुजुर्गोंकी कृपा है···हाँ-हाँ···ज़रूर ख़याल रक्खूँगा···जी नमस्ते।

[**फोन पटक देता है**]

धत् तेरेकी हद हो गयी। इतना लम्बा फोन और आधी रातको। हे भगवान्, तुमने यह फोनको अवतार क्यों दिया? और बात क्या, वही कुत्तेकी तीन टाँग। [**दाँत पीसकर**] जीमें आता है इन्हें रातभर फोन करता रहूँ हर पाँच मिनटपर।

लीला—[**करवट लेती है; फिर ऊँघती हुई धीरेसे**] किससे बातें कर रहे थे?

मनोहर—जी, आपकी महामाया मौसीजीसे। आप भी कहें तो नम्बर मिलाऊँ?

लीला—[**घबराकर**] मौसीका? क्या हुआ?····उन्हें कुछ हो तो नहीं गया।

मनोहर—उन्हें तो कभी कुछ नहीं होगा, लीला, वह तो अमरबेल खाकर आयी हैं पर मुझे ज़रूर कुछ न कुछ हो जायगा।

लीला—क्यों बुरी-बुरी बातें करते हो। बेचारी बहुत फ़िक्रमें हैं। क्या करें तुम उनका काम कर नहीं देते और उनको घबराहट बढ़ती जाती है। घबराहटमें आके फोन कर दिया होगा।

मनोहर—उनकी घबराहट बढ़ रही है तो मुझे अपनी ज़िन्दगीसे क्यों घब-राये दे रही हैं।

लीला—अच्छा चलो सो जाओ। जिसके सिरपर बीतती है वही जानता है। जब तुम अपनी रानीका ब्याह करने खड़े होगे तब पता चलेगा।

मनोहर—अभी तो उसके लिए दस साल हैं। लेकिन तुम चाहो तो मुझे

अभीसे कहना शुरू कर दो। दस सालकी हर रातमें कुड़ैच लगाओ ताकि हर रात ऐसी ही बीते।

लीला—अच्छा, अच्छा, क्यों अपनी नींद ख़राब करते हो। सो जाओ।

मनोहर—[**साँस लेकर**] अब क्या करूँगा सोकर ? एक बार तुमने कहा सरलाके लिए, एक बार लम्बी अलिफ लैला बयान करके उन्होंने याद दिला दी, अब एक बार तुम फिर मुझे याद दिला दो, अभी तो रात बहुत पड़ी है।

लीला—[**हँसकर**] अब सो भी जाओ न !

मनोहर—ऐक्खं, सोचता हूँ····कलसे लम्बी छुट्टी ले डालूँ····और अब यही काम तब तक करता रहूँ जब तक कि तुम्हारी बहिन, भतीजी, मौसी, बुआ, चाची, ताई, माई, वग़ैरह वग़ैरह–यहाँ तक कि पड़ोसियों तककी लड़कियोंकी शादियाँ न हो जाँय।

लीला—सो जाओ, सो जाओ।

मनोहर—[**साँस लेता है**] सोऊँगा, लेकिन अभी तो शुरुआत है जागनेकी।

[**फोनकी घण्टी फिर बजती है**]

फिर बजा लीला फोन ! अच्छा तुम ठहरो, कल टेलीफोन न कटवा दूं तो मेरा नाम नहीं····[**फोन तक जाता है।**] हलो····हलो····हलो जी—जी हाँ मैं मनोहर····हाँ····हाँ जाग रहा हूँ····नहीं अभीसे कैसे सो जाता····नहीं मुझे अभी नींद नहीं आई ····मैं तो बड़ी देरसे सोनेका आदी होता जा रहा हूँ····जी हाँ बड़ी देरसे····जी-ई-ई-जल्दी सो जानेका कहा था ? जी ग़लती हुई···· जी क्या ? लीला मेरा मतलब उनसे····अच्छा-अच्छा····कह दूँगा। कोई और हुक्म····आपकी मेहरबानी है····

[**फोन बन्द कर देता है**]

लीला—[**गुस्सेसे**] अब यह किसका फोन था ?

मनोहर—[**गैलरीसे आते हुए**] श्रीमती लीलादेवीकी परमपूज्या एक हज़ार एक सौ आठ मौसीजी महारानीका ।

लीला—[**गुस्सेसे**] उन्होंने फिर फोन किया । मुझे क्यों न बुलाया !

मनोहर—उन्होंने सिर्फ़ यह कहनेको फोन किया था कि लीलासे कह देना कि कल सुबह उन्हें टेलीफोन कर ले ।

लीला—क्या ?

मनोहर—[**बैठते हुए**] जी, आप चाहें तो अभी फोन कर लीजिए ।

लीला—[**उठकर गैलरीकी ओर जाते हुए**] अच्छा तुम अब सो जाओ । मैं अब सुबह ही उनसे बात करूँगी ।

मनोहर—लेकिन तुम जा कहाँ रही हो क्या मौसीके घर ?

लीला—नहीं फोनका रिसीवर नीचे उतार कर रखनेको ।

मनोहर—नहीं-नहीं अभी चार-छै फोन और आ जाने दो । मज़ा तो तब है जब पहिले उनका नौकर, फिर लड़का, फिर ख़ुद तुम्हारे मौसा जी इस वक़्त आयें और बादमें सुबहके पाँच बजे तुम्हारी मौसी भी आ जाँय ।

लीला—खैर, अब कुछ ऐसी बात नहीं होगी । तुम जल्दीसे यह काम कर दो, तो तुम्हारी मुसीबत भी मिटे, उनकी भी ।

मनोहर—भई कह तो दिया कि कर दूँगा । कितनी बार कहोगी । न हो इसी बातका एक रिकार्ड बनवा लो ।

लीला—हाँ-हाँ वह तो तुमने कह दिया । बस कल········

मनोहर—अच्छा हुज़ूर सलाम ! [**चादर ओढ़कर सो जाता है**]

[**दृश्य परिवर्तन। चार महीने बाद । स्थान वही। सिर्फ़ कमरेकी जगह अब ड्राइंगरूम है । शामका वक़्त है । लीला बैठी हुई पूर्ववत् बुन रही है ।**]

लीला—अबतक दफ़्तरसे नहीं आये । साढ़े सात बज चुका, जाने कहाँ रोज़ रह जाते हैं ।

[दरवाज़ेपर आवाज़ होती है। दरवाज़ा खुलता है। मनोहर-का प्रवेश]

आ गये, आज फिर तुमने इतनी देर कर दी। कहाँ रह गये थे ?

मनोहर—[बदन अकड़ाकर और अँगड़ाई लेकर] ऐं-हे-है—

[कोट उतारता और वहीं कोचपर फेंक देता है]

लीला—क्या बात है, तबीयत तो ठीक है न ?

मनोहर—एख्खे, ए-हे-हे।

लीला—बात क्या है, ज़रा हाथ दिखाना बुख़ार तो नहीं है।

मनोहर—[कराहते हुए] हाँ, बुख़ार है। बड़ी देरसे चढ़ा है।

लीला—[हाथ थामकर] हाथ तो ठण्डा है, यों ही कहते हो।

मनोहर—[कराहकर] हाथ ठण्डा है तो क्या हुआ लीला, दिल और दिमाग़पर तो भरपूर एक सौ आठ डिग्री बुख़ार चढ़ा है—

लीला—कुछ बताओगे भी या यों ही—

मनोहर—देखो, लीला चार महीने पहिले ही मैंने कह दिया था कि मुझ पर यह बुख़ार मत चढ़ाओ वर्ना ज़िन्दगीभर नहीं उतरेगा।

लीला—क्या हुआ ?

मनोहर—वही जो होना था। इतनी दौड़-धूप करके सरलाकी शादी पक्की की, फिर शादी हुई, दुनियाभरके झगड़े निबटाये, रात-दिन जागा, पागलोंकी तरह मारा-मारा फिरा। अब शादी हो गई। सब काम ठीक निबटा दिया तब भी चैन नहीं है। अब उनके रोज़ के झगड़ों-शिकायतोंको सुनो, पेशी करो, आज ब्रजमोहनलालके घर जाओ तो कल सरलाकी माँको समझाओ। फुल टाइम सर्विस है यह, समझीं। तुम यहाँ आरामसे हो, लड़की-लड़केवाले वहाँ आरामसे हैं और सरला व सरलाके दूल्हेका तो पूछना ही क्या ? [साँस लेकर] लेकिन मेरी शामत नहीं मिटी। दोनों तरफ़से

तुहमत, दोनों तरफ़का बीच-बचाव। अच्छा बेपैसेका नौकर उनको मिल गया।

लीला—आज फिर कुछ बात हो गई क्या ?

मनोहर—होती किस दिन नहीं है यह क्यों नहीं कहतीं। एक दफ़्तर शाम को पाँच बजे तक वहाँ करता हूँ, दूसरा कभी ब्रजमोहनलालके घर, कभी तुम्हारी मौसीके घर।

लीला—मौसी कल कह तो मुझसे भी रही थीं कि अच्छे भिखमंगोंसे पाला पड़वाया। रोज़ कुछ न कुछ माँग पेश करते रहते हैं। आज यह भेजो, कल वह, यह नहीं दिया वह नहीं दिया, और जो भेजा जाता है वह उन्हें एक आँख नहीं सुहाता। हर बातमें नुकता-चीनी। पर मैंने तुमसे डरके मारे नहीं कहा। कल सुबह ही तो उन दोनोंको तुमने एक घण्टे तक समझाया था। मौसी कह रहीं थीं कि ये लोग ऐसे निकलेंगे, यह नहीं मालूम था। ब्रजमोहनलाल तुम्हारे दोस्त हैं, तुम्हें तो सब मालूम था।

मनोहर—हाँ कह तो दिया सारा क़सूर मेरा ही है। किसीकी लड़की ब्याह गई, किसीको सामान मिला, किसीको सुन्दर-सी बीवी मिल गई, क़सूर मेरा हो गया। मुझे तोहमत मिली।

लीला—इसमें तोहमतकी क्या बात है जी, तुमसे तो यों कहते हैं कि तुम पर लड़के-लड़कीवाले दोनोंको विश्वास है।

मनोहर—बड़ा विश्वास है। चार-पाँच महीनेसे ज़िन्दगी तबाह है। हर वक़्त यही सुनता रहता हूँ कि अच्छे नीचोंसे पाला पड़वाया। मैं सब कुछ जानता था इसलिए क़सूर मेरा है। तुम्हारी मौसीके घरसे यही बात ब्रजमोहनलालके घरसे भी और अपने घरमें तुम भी यही कहती रहती हो। तिसपर रोज़ पेशियाँ, रोज़ झगड़ोंके निबटारे, रोज़ भागदौड़, रोज़ टेलीफोन।

[टेलीफोनकी घंटी बजती है]

लो फिर बजा फोन । ज़रूर यह दोनोंमेंसे किसी एकका होगा । जाओ तुम ही सुनो । [**कराहनेका नाट्य करते हुए**] मुझसे तो उठा भी नहीं जाता । अभी वहींसे आया हूँ ।

लीला—हाँ, मैं जाती हूँ ।

[**टेलीफोन**]

हाँ मैं लीला हूँ मौसी....क्यों, क्यों, क्यों, अरे तुम तो रोने लगी । इसमें रोनेकी क्या बात है....घबराओ मत मौसी,मैं इनसे अभी कहती हूँ....फोन करके बता दूँगी... [**फोन बन्द कर देती है**] [**आते हुए**] मौसीका फोन था...रो रही थीं कि सरलाको बुलाया था पर उसकी सासने मना कर दिया । ऐसी ही तकलीफ देती रहती है वह सरलाको । रो रही थीं...सरलाका बहुत मन था आनेको—

मनोहर—[**मुँह चिढ़ाते हुए**] क्यों झूठ बोल रही हो । जिस दिनसे शादी हुई है सरला तो वहाँसे आनेका नाम भी नहीं लेती । ज़रूर इसमें सरलाकी भी मर्जी होगी । नई-नई शादी है, मियाँ बीवीमें सलाह हो गई होगी । चन्द्रमोहन उसे एक दिनको नहीं छोड़ना चाहता ।

लीला—फ़िज़ूल बात मत करो । तुमसे मौसीने यह कहा है कि तुम अभी ब्रजमोहनलालके घर जाकर उनकी बीबीको समझाओ ।

मनोहर—अच्छा । आँय मैं तो नहीं जाता [**कराहनेका नाट्य**] मुझे बुख़ार चढ़ा है—हाँऽऽ ।

लीला—क्यों बेकार बात करते हो । चले जाओ बड़े अच्छे हो । मौसी फूट-फूटकर रो रही थीं ।

मनोहर—तो शादी क्यों की थी अपनी बेटीकी । घरपर ही उम्र भर क्यों न रखा ? मैं तो नहीं जाता ।

लीला—अभी तो कपड़े पहने हुए हो । ज़रा देरको चले जाओ ।

मनोहर—लीला ! तुम मुझे देख रही हो—हाँ [**कराहकर**]

लीला—क्या मतलब ?

मनोहर—मेरी सूरत इन चार महीनोंमें तुमने ग़ौरसे देखी····हाँ आं ।

लीला—हाँ देख तो रही हूँ, क्या है ?

मनोहर—तुम्हें कोई फर्क़ नहीं लगता । पता है इसी भागदौड़में मेरा दस पौण्ड वज़न कम हो गया है····

लीला—[**घबराकर**] सच ? मैंने तो ग़ौर नहीं किया ।

मनोहर—सच लीला, इसीलिए तो कहता हूँ····ऊँ····कि कुछ मेरी तरफ़ यानी अपनी तरफ़ यानी अपने घरकी तरफ़ भी तो देखो····

[**फोन फिर बजता है**]

हद हो गई फोन करनेकी भी । कल कनेक्शन न कटवा दिया तो मेरा नाम नहीं । जाओ लीला सुनो····

[**लीला फोनके पास जाती है**]

लीला—फोर-एट-फाइव-नाइन ! जी, जी हाँ, जी नमस्कार ! हाँ जी हैं । अभी बुलाती हूँ····[**वापिस आकर**]

ब्रजमोहनलालका फोन है वह तुम्हें बुला रहे हैं ।

मनोहर—कुछ कहते भी हैं या सिर्फ़ 'बुला' रहे हैं ।

लीला—यही कहा कि बुला दो बड़ा ज़रूरी काम है । तुम्हें शायद उनके घर जाना पड़े ।

मनोहर—क्या ख़ाक काम है । वही झगड़ा होगा । मैं तो नहीं जाता ।

लीला—तो मैं क्या कह दूँ ?

मनोहर—कुछ कह दो, गुसलख़ानेमें हैं, खाना खा रहे हैं, सो गये या मर गये, कुछ भी कह दो ।

लीला—ठीक बताओ क्या कह दूँ ? फोन अभी रखा है । जाओ दो मिनट बात कर लो ।

मनोहर—मैं हरगिज नहीं जाऊँगा लीला !

लीला—तो फिर जल्दी बताओ क्या कह दूँ ? इतनी देरसे फोन रखा है ।

मनोहर—[सोचते हुए] ओफ़्फ़ो–इ–त–नी दे–र–से फो–न । [एकदम मुसकराकर और चुटकी बजाकर] यह ठीक है····लीला कह दो कि सरला और चन्द्रमोहनको इसी वक़्त यहाँ भेज दीजिए ।

लीला—[अचरजसे] क्या कहा ? सरला और चन्द्रमोहनको । वह यहाँ क्या करेंगे ?

मनोहर—चाय पियेंगे, खाना खायँगे, गप लड़ायेंगे । कुछ-न-कुछ करेंगे । कह दो यह बहुत ज़रूरी है । आज सारा फैसला यहीं होगा ।

लीला—[संकोचसे] तो कह दूँ । पर मैंने तो खानेकी कुछ तैयारी नहीं की । मुझे तो घबराहट होने लगी । [जाती है]

मनोहर—और हाँ, कह देना कि सरलाकी सासको भी भेज दें क्योंकि तुम्हारी मौसी भी यहाँ अभी आयेंगीं ।

लीला—[वहींसे] मौसीसे तुमने कहा है यहाँ आनेको ?

मनोहर—नहीं कहा तो अब कह दूँगा । जाओ, जल्दी फोन ख़त्म करो ।

[लीला चली जाती है]

लीला—हलो, जी ? जी नहीं····मैं ही हूँ । वह कह रहे हैं कि आप मिसेज़ लाल, सरला और चन्द्रजीको अभी यहाँ भेज सकें तो अच्छा हो । जी हाँ, आफ़िससे अभी ही आये हैं····कुछ नहीं । ज़रा ऐसे ही, बैठेंगे, चाय पियेंगे । भेज दें तो अच्छा होगा । तबीयत ज़रा ठीक नहीं है । वही दोनों आ जाते तो अच्छा रहता····जी हाँ, इन्तजार करेंगे । क्या कहीं और जा रहे थे, दोनों ? [फोन पर हाथ रखकर मनोहरको देखती है]

मनोहर—[दूरसे ही कहता है] तो क्या हुआ इधरसे होते जाँय । ज़्यादा देर नहीं रोकेंगे ।

लीला—[पूर्ववत् फोन करते हुए] ये कह रहे हैं कि इधर होते हुए

चले जाँय । हाँ ज़रूर भेज दीजिए । अच्छा, नमस्कार । [**वापिस आती है**]

मनोहर—कह दिया ? क्या बोले ब्रजमोहनलाल ?

लीला—कुछ पसोपेशमें पड़ गये, फिर कहने लगे कि ऐसी ही ज़रूरी बात है तो अभी भेजता हूँ पर शायद उनकी बीवी नहीं आ पाएँगी ।

मनोहर—अब मज़ा आया, अब पता लगा कि दिनभर काम करनेके बाद भागदौड़ कैसी होती है । कितनी देरमें आयेंगे सरला-चन्द्रमोहन ?

लीला—बस अभी जल्दी ही आ जाँयगे । कहीं और जानेकी तैयारीमें थे । अब इधर होकर जाँयगे । तब तक कुछ नाश्तेका इन्तज़ाम करूँ । तुम भी हाथ-मुँह धो लो ।

मनोहर—पहिले एक प्याला गर्म चाय मुझे दे दो ।

लीला—अच्छा, [**नौकरको आवाज़ देकर**] नन्दू····ऐ नन्दू ! चाय ले आ ।

[**भीतरसे आवाज़ आती है**]

नन्दू—ला-रा हूँ साब !

मनोहर—तुम्हीं ला दो एक प्याला बनाकर । ज़रा जल्दीसे । मैं भी तब-तक वाश कर लूं ।

[**नौकर चायकी ट्रे लेकर आता है और मेज़पर रख देता है । लीला चाय बनाती है । इतनी देरमें मनोहर, जो कोट वहीं फेंककर बैठ गया था, कोट उठाकर अन्दर टाँगता है । फिर ड्राइंगरूममें आकर टाई उतारता है । लीला उसे चाय देती है**]

लीला—अरे नन्दू, डबल रोटी मक्खन है या नहीं ?

नन्दू—है साब । अभी तो आधीसे जादा रखी है ।

लीला—तो जल्दीसे टमाटर और ककड़ी ले आ । मैं काटकर उनकी सेंड-विच बना दूँ ।

नन्दू—अच्छा साब ! कुछ और बनाना है, हलुआ-अलुआ ?

लीला—हाँ हलुआ और बेसनकी पकौड़ी, जा जल्दीसे बना। तब तक मैं सेंडविच बना दूँ। सब्जीकी टोकरी ले आ।

नन्दू—लाया साब।

[जाता है और टोकरी ले आता है]

[इतनी देरमें लीला कोचके कवर और बैंकरेस्ट ठीक करती है]

मनोहर—[चायका प्याला रखते हुए] सरला आज पहली मर्तबा शादीके बाद यहाँ आयेगी। मेरे ख़यालसे कुछ प्रेज़ेण्ट देना चाहिए न? क्यों?

लीला—अच्छा, उस दिन याद है प्रेज़ेण्टके नामसे कितने नाराज़ हुए थे। अब इस वक़्त कहाँसे प्रेज़ेण्ट दोगे? वह दोनों अभी आते ही होंगे। अब बाज़ार जानेका वक़्त है!

मनोहर—अभी उस दिन तुम तीन नई साड़ियाँ लाई हो, उसीमें से एक अच्छी-सी दे दो न! है तो तुम्हारी बहिन ही।

लीला—[टमाटर काटते हुए] अच्छा जी, यह खूब रही। मेरी ही जूती मेरे ही सर।

मनोहर—अब तुम ज़्यादा गड़बड़ न करो। जाओ जल्दीसे निकालकर लाओ तो एक सिलेक्ट कर लें।

लीला—भई, यह बहुत गड़बड़ है। तुम तो सब काम आख़िरी वक़्त करते हो। अब नाश्तेका इन्तज़ाम करूँ या साड़ी निकालूँ।

मनोहर—ये छोड़ दो। नन्दू कर लेगा। जाओ तुम साड़ियाँ निकाल लाओ। तब तक मैं कपड़े बदल लूँ।

[लीला नौकरको टोकरी देती है। नौकर चला जाता है। लीला फिर अन्दर जाती है, फिर तीन साड़ियाँ निकालकर ले आती है और मनोहरको दिखलाते हुए]

लीला—लो देख लो, तुम्हीं चुन लो, मुझे तो सभी पसन्द हैं।

मनोहर—भई ये काम अपने बसका नहीं है। आदमी चाहे कुछ करे औरतके व्यक्तित्वमें झाँक नहीं सकता और फिर औरतों-की पसन्द ? इस जगह तो बड़े-बड़े एक्सपर्ट पानी भरते नज़र आयेंगे।

लीला—अब ज़्यादा वक़्त ख़राब मत करो। सरला आती ही होगी। न तो मुझे काम करने देते हो न ख़ुद अपना काम करते हो।

[मनोहर अन्दर जाते हुए]

मनोहर—यह सब काम तुम्हारा है, तुम जानो।

[लीला साड़ियाँ उलटती-पलटती है और उनमेंसे एक पसन्द करके एक बड़ेसे रेशमी स्कर्टमें उसे संभालकर बाँध देती है। नौकरको आवाज़ देती है जो आकर सब्जीकी टोकरी ले जाता है। मनोहर कपड़े बदल कर बाहर आ जाता है। और कोचपर बैठकर अख़बार पढ़ने लगता है]

लीला—अख़बार वख़बार बैठकर न पढ़ो।

मनोहर—ऐख्खे, तो क्या टहल-टहल कर पढ़ूँ ?

लीला—अच्छा, अच्छा !

[दरवाज़ेपर आवाज़ होती है। दरवाज़ा खुलता है। चन्द्रमोहन और सरलाका प्रवेश]

चन्द्रमोहन—नमस्ते मनोहर चाचा !

मनोहर—आओ चन्द्रमोहन आओ। अच्छे वक़्तपर आ गये। सरला अच्छी तो हो ?

सरला—जी हाँ, जीजा जी।

मनोहर—बैठो, बैठो। सरला चाय पिओगी ?

चन्द्रमोहन—जी नहीं, अभी पीकर आये हैं।

मनोहर—सवाल किससे और जवाब किसका ! हाँ भई क्यों न हो····

लीला—अच्छा···अच्छा····एक प्याला तो पिएँ आप भी, चन्द्र जी !

मनोहर—पहिले चाय पियो, फिर खाना खाओ, और आज रात तुम दोनों यहीं रहो।

चन्द्रमोहन—घरपर सब राह देखेंगे। रहनेके लिए आप क्यों तकलीफ़ करते हैं।

मनोहर—ऐख्खे, यह क्यों नहीं कहते कि यहाँ रहनेमें तुम दोनोंको तकलीफ़ होगी। तभी तो जल्दीसे घर वापिस जाना चाहते हो। [**हँसता है**]

चन्द्रमोहन—नहीं तो, यह बात नहीं।

लीला—हद करते हो तुम भी····

मनोहर—अच्छा चाय तो पियो। [**चाय पीनेका दृश्य, फिर चाय पीते हुए**] सरला, खुश तो हो न ?

सरला—[**संकोच से**] जी ?

मनोहर—बहुत खुश—हाँ भई क्यों न हो। चन्द्रमोहन अच्छे लगे न ?

सरला—[**हँसकर**] आप भी जीजा जी [**लज्जित हो जाती है**]

मनोहर—और चन्द्रमोहन तुम ! सरला कैसी लगीं। [**हँसकर**] ऐख्खे, सरलाके नामसे तो आँखें खिल जाती हैं। हाँ भाई क्यों न हो।

लीला—क्या हो रहा है तुम्हें, मैं सरलाको भीतर ले जाती हूँ। सरला, चलो इन्हें तो मज़ाक सूझ रहा है।

मनोहर—अरे नहीं, नहीं, नहीं। ठहरो, ठहरो। देखो लीला, मैं कहता था न कि दोनोंके मनमें कितनी मिसरी घुल रही है। तभी तो सरला वहाँसे आनेका नाम नहीं लेती थी।

सरला—[**संकोचसे**] यह बात तो नहीं है। पर कोई आने दे तब न !

मनोहर—[**हँसते हुए**] हाँ, हाँ यही तो मैं भी कह रहा हूँ। [**किञ्चित् मुड़कर**] देखो चन्द्रमोहन, तुम दोनोंको मैंने इसलिए बुलाया है कि मैं जो कहूँ वह तुम कहोगे।

चन्द्रमोहन—जो कहें। आपकी आज्ञा हो तो मैं···

मनोहर—हाँ वह तो मैं जानता हूँ। अच्छा, मैं तुम दोनोंसे कुछ कहलवाना चाहता हूँ। कहोगे ?

चन्द्रमोहन—जी !

मनोहर—और तुम सरला ?

सरला—[**धीरेसे**] मैं···· जीजी, मैं कुछ नहीं कहूँगी।

मनोहर—यह नहीं हो सकता। अच्छा चन्द्रमोहन, तुम ज़रा सरलाकी तरफ़ देखो—

चन्द्रमोहन—[**लज्जित होकर**] जी।

मनोहर—जी क्या, देखो न ! घरमें तो रात-दिन देखते रहते होगे, यहाँ एक मिनट नहीं देख सकते। देखो। अच्छा ठीक। अब मैं जो कहूँ, वह कहो। कहो, सरला, तुम मेरी पत्नी हो या हनी, बर्डी, स्वीटी कुछ कह दो आजके फैशनमें। कहो—कहो न !

चन्द्रमोहन—पर चाचा जी, बात क्या है ?

मनोहर—पहिले कहो तो सही।

चन्द्रमोहन—अच्छा लीजिए [**कुछ लज्जित होकर, फिर कुछ रुककर**] 'तुम मेरी पत्नी हो।'

मनोहर—'सरला' भी तो कहो !

चन्द्रमोहन—अच्छा–स–र–ला।

मनोहर—ठीक। अब सरला तुम कहो : चन्द्रमोहन, तुम मेरे पति हो या डियर, डार्लिंग, प्रियतम, कुछ सही।

सरला—जीजी, अन्दर चलो।

मनोहर—जा नहीं सकतीं। पहिले कह दो। कहो।

सरला—मैं तो नहीं कहती।

मनोहर—ऐख़्खे, यहाँ नहीं कहतीं और घरपर ?

सरला—जीजी, मैं भीतर जाती हूँ।

मनोहर—यों नहीं जा सकतीं। अच्छा, कुछ भी कह दो।

सरला—मुझसे नहीं कहा जायगा जीजी····

मनोहर—कुछ भी कह दो–कह दो 'ए जी' [**हँसता है**] कहो 'ए जी' तुम····

सरला—जीजी, क्या करूँ ?

लीला—कह दे न, उसमें क्या हर्ज है, कह दे

सरला—ए जी [**शरमा जाती है**]

मनोहर—अच्छा फिर यही सही। देखो चन्द्रमोहन, यह तुम्हारी पत्नी हैं या हनी, बर्डी, स्वीटी कुछ सही···और सरला यह तुम्हारे पति हैं या डियर डार्लिंग, ए जी सही। तुम पति यह पत्नी, लेकिन मैं कम्बख़्त बीचमें कौन हूँ।

चन्द्रमोहन—आप, यानी क्या मतलब ?

मनोहर—मतलब यह है कि जब तुम्हारी शादी भी नहीं हुई थी तबसे अब तक मुझे चैन नहीं मिला। अब शादी भी हो गयी, तब भी तुम्हारी माँ और सरला की माँ मुझे चैन नहीं लेने देतीं। भई, यह तुम्हारा मामला है, तुम पति-पत्नी हो। अब इसे सँभालो। वर्ना कहो तो मैं अपना ट्रान्सफर यहाँसे करा लूँ।

चन्द्रमोहन—क्यों, क्या वात हो गई चाचा जी····

मनोहर—रोज़ ही होती रहती है। तुम्हारी माँ और तुम्हारी सासकी रोज़ कुछ-न-कुछ शिकायतें, झगड़े, मुक़दमे, और बीचमें घसीटा मैं जाता हूँ।

चन्द्रमोहन—जी अच्छा ! मुझे मालूम नहीं था। बताइए मैं क्या करूँ ?

मनोहर—तुम सब कुछ कर सकते हो। नम्बर एक, अपने घरका फोन हटवा दो।

सरला—पर जीजाजी, इससे तो बड़ी तकलीफ़ हो जायगी।

मनोहर—अच्छा, नहीं हटा सकते तो उसमें ताला डाल दो और चाभी अपने पास रखो, यह तो ठीक है।

चन्द्रमोहन—हाँ, यह हो सकता है।

मनोहर—नम्बर दो, अपनी माँके ख़त सरलाकी माँके नाम उनसे डाकमें डालनेके लिए ख़ुद लिया करो। और बाहर जाकर उनकी चिमनी फाइलिंग कर दिया करो।

चन्द्रमोहन—यानी।

मनोहर—यानी फाड़ दिया करो, जला दिया करो। ताकि वह तुम्हारी सासके पास न पहुँचे और किस्से न चलें।

चन्द्रमोहन—अच्छा, यह भी सही।

मनोहर—और तीसरे यह कि सरलाको अभी हफ़्तेमें कमसे कम एक बार और बादमें महीनेमें कमसे कम दो बार एकाध-दिनकी कैज़ुअल लीव देकर इनके घर भेज दिया करो।

लीला—बड़े ख़राब हो तुम। कैसी-कैसी बातें कहते हो।

मनोहर—भई, क्या करें। हमें अपनी ज़िन्दगी भी तो रखना है। और फिर हम कौन ? न तीनमें न तेरहमें। तुम जानो और सरला जाने।

चन्द्रमोहन—तीन तेरहमें क्यों नहीं, आप उन दोनोंके बीचमें हैं चाचा जी !

मनोहर—नहीं भाई, सच कहता हूँ यह बीचका रास्ता बड़ा ख़तरनाक होता है।

[सब हँसते हैं। यवनिका]

ब

रा

त

च

ढ़े

•

[एक मध्यवर्गीय घरका भीतरी बरामदा। तीसरे पहरका वक़्त है। बरामदेमें एक होल्डाल बाँधा जा रहा है। एक ट्रंक तथा छोटा अटैची खुला रखा है। कपड़े, सामान बिखरे पड़े हैं। प्रकाश भाग-दौड़ कर रहा है। बीच-बीचमें आवाज़ें लगाता जाता है। रामसिंह, अरे कहाँ चला गया, क्लॉकमें चारके घंटे बजनेकी आवाज़]

प्रकाश—[सामान जमाते हुए बदहवासीमें] लो, साढ़े चार तो यहीं बज गये, डेढ़ घण्टा आगरेकी ट्रेन छूटनेका रह गया और रामसिंह अब तक नहीं आया, बरात स्टेशनपर ज़रूर चली गई होगी। रमा, अरे भई रमा, तुम कहाँ हो। मुझे जल्दी हो रही है और आप जाने किस मटरगश्तीमें लगी हैं। यह नहीं कि झटपट सारा सामान ठीक करके बँधवा दें। रमा, मैं कहता हूँ रामसिंह कहाँ गया है। [झुंझलाकर] रमा, किधर चली गई।

रमा—शोर क्यों मचाते हो। तुम्हारे पीछे ही तो खड़ी हूँ।

प्रकाश—अरे भाई, 'हाँ' तो कह दिया करो। मुझे जल्दी पड़ी है, पुकार रहा हूँ और आप चुपचाप पीछे खड़ी हैं। हाँ कहनेमें तोले भर की ज़बान ही तो हिलती है। रामसिंह कहाँ है ?

रमा—तुम्हींने तो उसे लांड्रीसे कपड़े लाने भेज रखा है। अब पूछते हो कहाँ है।

प्रकाश—तो अब तक क्यों नहीं आया। पहले ही क्यों न बता दिया। अब क्या करें ...सारी कमीजें और पेंट तो लांड्रीमें हैं। तुमने मेरा होल्डाल भी नहीं सजाया...

रमा—पीछे मुँह करके देखो, सब सजा दिया है।

प्रकाश—देखूँ···वाह बड़ा अच्छा सजाया है। कम्बल सबसे नीचे घुसा दिया। दरी सबसे ऊपर। अहा हा···बड़ा अच्छा सजाया है। क्या कहने हैं। और चादरें कहाँ हैं, गद्दे से नीचे।

रमा—नहीं, सिरहाने, तकियोंके नीचे रखी हैं।

प्रकाश—कहाँ हैं [**खखोलकर**] इस ऊपरवाले ख़ानेमें तो नहीं हैं।

रमा—उधर तकिये कहाँ हैं। चादरें तकियोंके नीचे इधर रखी हैं।

प्रकाश—वाह, बड़ी अच्छी नीचे रखी हैं। पैतानेके ख़ानेमें तकिये रख दिये।

रमा—होल्डालमें सिरहाना पैताना क्या होता है जी? दोनों तरफ़ एकसा बोरा होता है।

प्रकाश—धन्य हो महाराज, होल्डाल बोरा होता है। क्या कहने हैं, बोरा होता है। अरे, जिस खानेके नीचे उठानेका हैंडिल लगा होता है वह सिरहाना होता है, दूसरा पैताना, समझीं। अच्छा, चादर कितनी रख दीं।

रमा—दो चादर रख दीं।

प्रकाश—[**अचम्भेसे**] क्या, सिर्फ़ दो। मैंने तो कहा था कि छै चादरें रखना।

रमा—बरात ठहरेगी तीन दिन और उसके लिए छै चादरें। क्या एक दिनमें दो चादरें बदलोगे।

प्रकाश—अरे भाई, कह तो दिया बरातका मामला है। दो तो आने-जानेमें ही मैली हो जायेंगी। रह गईं चार तो तीन दिनके लिए तीन और एक एक्स्ट्रा···इमरजेंसीके लिए।

रमा—मुझे क्या है एक दर्जन ले जाओ।

प्रकाश—एक दर्जन तो मैंने तौलिये रखनेको कहे थे। रख दिये?

रमा—एक दर्जन तौलिये? हाय अम्मा। एक दर्जन तौलिये क्या तुम लड़कीवालेके घर बाँटने ले जा रहे हो?

प्रकाश—तुम मुझे बरातमें जाने नहीं दोगी। मालूम हो गया। अब क्या ख़ाक जाऊँगा, न चादरें रक्खीं, न तौलिये, न कमीजें आईं, न पतलून, न रामसिंह आया और न तुम···मेरा मतलब है कि ख़ैर तुम तो यहीं हो।

रमा—और यह गर्म सूट क्यों सूटकेसमें भर लिये हैं? अब गर्म सूटका मौसम है?

प्रकाश—तुम तो समझती नहीं रमा, कभी रातमें बारिश हो जावे तब? उस वक़्त गरम कपड़े निकालने पड़ेंगे या नहीं। बस बातें बन्द करो और मेरी तैयारी हो जाने दो। तीन बार मुंशीजीके घरसे बुलावे आ चुके हैं, बरात जरूर स्टेशनपर चली गई होगी।

रमा—मैं कहती हूँ तुम बेकार बरातमें जा रहे हो। सीधे-सीधे घर बैठो। मुसीबत मोल लेना है तो तुम जानो···

प्रकाश—क्या कहने हैं तुम्हारे रमा। अरे एक तो अपने जिगरी दोस्त और साथी राजूकी शादी, दूसरी तरफ़ तुम्हारी रिश्तेदारी भी। मैं उसकी बरातमें न जाऊँगा तो ज़िन्दगीभरकी तोहमत हो जायेगी।

रमा—पूरनकी बरातमें भी जब तुम ज़िद्दम-ज़िद्दा गये थे तब भी यही कहते थे, जिगरी दोस्तकी शादी। फिर जब बरातसे लौटे तबकी याद है। दरवाज़ेपर तुमको देखकर एक मिनट मैं पहचान भी नहीं पाई थी। बालोंमें धूल, शेव बढ़ी, मुँहपर इंजनके कोयलेकी स्याही, आँख सूजी हुई क्योंकि कोयला पड़ गया था, उँगलीपर खिड़की गिर जानेसे पट्टी बँधी, कपड़े हलवाइयोंसे भी ज़्यादा चीकट, पैरोंमें चट्टियाँ पहने क्योंकि नये जूते कोई चुरा ले गया था। देखकर हैरान रह गई थी कि यह तुम हो या कोई उचक्का है। फिर तीन दिन बुख़ार चढ़ा रहा।

प्रकाश—भाई, तुम तो समझती नहीं। हरवक़्त ऐसी दुर्गत थोड़े ही होगी। एक तो वह गर्मियोंकी बरात थी। अब कौन गर्मी है। फिर बरात आगरे जैसे शहरमें जा रही है। अतरौली थोड़े ही जा रही है।

रमा—अच्छा जी, तुम जानो। कह दिया अपना फर्ज़ पूरा किया। [**पीछेके कमरेमें चली जाती है। दूरसे**] इतना बड़ा सूटकेस ले जा रहे हो और अटैची भी। [**फिर वापिस आकर**] लो यह तुम्हारे एक दर्जन तौलिये।

प्रकाश—मैं सोचता हूँ कि अब आठ ही ले जाऊँ, काफ़ी होंगे। रामसिंह नहीं आया अब तक। और हाँ, तुमने खानेके लिए सब चीज़ें टिफिन कैरियरमें रख दीं न ?

रमा—रख तो दीं, पर तुम बरातके साथ खाना क्यों ले जा रहे हो ? एक चीज़ भी तुम्हारे पल्ले नहीं पड़ेगी। अरे बरातमें जाओ तो बरातके साथ खाओ।

प्रकाश—क्या कहने हैं तुम्हारे रमा। तभी तो कहता हूँ कि तुमने हाई-जीन ग़ौरसे नहीं पढ़ा। बरातका खाना तो मास प्रोडक्शन होता है। हम अपनी साफ़ चीज़ें खायेंगे। और हाँ, फलोंकी टोकरी और ऊपरका नाइट बेग कहाँ है ?

[**दरवाज़ा खटकता है···रामसिंहका प्रवेश**]

प्रकाश—बड़ी जल्दी आया तू रामसिंह। एक घण्टा लाण्ड्रीमें लगा दिया। तुझसे कहा था कि दस मिनटमें सारे कपड़े लेकर वापस आना। एं····

रामसिंह—शाब, हम उधर गिया तो कपड़ेपर इशतिरी नहीं बना था।

प्रकाश—तो अब तक इस्तरी ही करा रहा था। क्या कहने हैं। हद हो गई।

रामसिंह—नहीं शाब, उधर सादीके घरका छोटा भाई भी वहाँ खड़ा रक्खा था।

[प्रकाश, रमा हँसते हैं]

प्रकाश—खड़ा रक्खा था। क्या खड़ा रक्खा था ?

रमा—राजूका भाई होगा। वह भी अपने कपड़े लांड्रीसे लेने आया होगा।

प्रकाश—[चुटकी बजाकर] तो इसका मतलब यह है कि बरात अभी स्टेशन नहीं गई····मजा आ गया। जल्दी करो, जल्दी करो। रामसिंह तू अटैची इधर उठा ला। [रामसिंह जाता है] रमा, ज़रा मेरा शेवका सामान देना। हाँ जल्दी, ओ रामसिंह।

राम—[पिछले कमरेसे तेज़ीसे वापिस आकर] जी शाब !

प्रकाश—ज़रा लोटा गिलास भी ले आ।

राम—जी शाब ! अभी लायगा। [दौड़ कर जाता है]

प्रकाश—[फिर पुकार कर] ए रामसिंह !

राम—हाँ शाब ! [लौट आता है]

प्रकाश—[स्वतः] सेंटकी शीशी कहाँ गई ?

राम—नहीं मालूम शाब !

प्रकाश—अरे तुझसे नहीं पूछता। तू होल्डाल बाँध दे।

राम—शमेट रक्खा है साब !

प्रकाश—नहीं होल्डाल नहीं····हाँ गिलास रख दे।

राम—होगा शाब।

[दरवाज़ा खटकता है]

प्रकाश—रमा, देखना कौन है, रमा, मेरे छै जोड़ी रेशमी मोज़े किधर चले गये····सूटकेसमें हैं ही नहीं, रेशमी रूमाल भी ग़ायब हैं।

[प्यारेमोहनकी आवाज़]

प्यारे—अजी प्रकाश साहब, झटपट दरवाज़ा खोलिए····

रमा—राजूके बहनोई प्यारेमोहन मालूम होते हैं····। रामसिंह दरवाज़ा खोल दे····

प्यारे—हुज़ूरेवाला, तशरीफ़ ले आऊँ भीतर ?

प्रकाश—आइए, आइए प्यारेमोहन जी [**दरवाज़ा खुलता है**]

प्यारे—[**खाँसते हुए प्रवेश**] आ जाऊँ, लाइन क्लियर है न ?

प्रकाश—आइए तशरीफ़ लाइए। बस मैं जल्दी-जल्दी तैयारी ही कर रहा था। तैयार ही समझिए। अब कुछ देर नहीं। रामसिंह, मेरे जूते ले आ···

प्यारे—वल्लाह, प्रकाश बाबू, आपने तो बरातमें जानेकी वह ज़ोरदार तैयारी की है मानो आप अपनी ही शादी करने जा रहे हैं····

प्रकाश—[**किञ्चित् हँसी**] अजी अपनी हुई की तो याद भी अब नहीं रही। दूसरोंकी शादीमें ही आनन्द लेना रह गया है।

प्यारे—तो एक दफ़े फिर अपनी शादीकी याद ताज़ा करलो। रमाजीसे फिर रचा लो।

प्रकाश—अब क्या ज़रूरत है उसकी, पुरानी बात फिरसे नई तो हो नहीं सकती।

प्यारे—जनाबेमन, ऐसा मत कहिए, सच तो यह है कि शादी चीज़ ही ऐसी है। मेरा मतलब है कि जो बिन ब्याहे हैं उसका मन तो करता ही है कि देर सबेर वह भी दूल्हा बनें, मगर जो ब्याहे हुए हैं उनका भी दिल धड़क-धड़क कर कहता रहता है कि एक बार फिर दूल्हा बना जाय, चाहे बीबी वही रहे। उसमें कोई हर्ज़ नहीं। दूल्हा बननेका मज़ा ही ऐसा है, हुज़ूरेवाला कि जो अब तक दूल्हा नहीं बना वह भी पछताता है और जो बन चुका है, फिर नहीं बन सकता वह भी पछताता है।

प्रकाश—लेकिन बड़े भाई, दोनोंके पछतावे अलग-अलग क़िस्मके होते हैं यह आप क्यों भूले जा रहे हैं। शादी होनेके बाद जो बरबादी

गले पड़ती है····उसे बरबादी कहिए चाहे गृहस्थीकी आबादीका [illegible]····वह भी तो ख़यालमें रखिए। आपके पछतावेवाली बात-को मैं ज़रा दूसरे पहलूसे देखता हूँ। यानी क्वाँरा ज़रूर यह सोच कर पछताता है कि मैं अब तक दूल्हा क्यों न बना, पर ब्याहा इसलिए पछताता है कि मैं दूल्हा बनकर दूल्हा ही बना क्यों न रहा, यह बाक़ीकी मुसीबत क्यों गले पड़ गई?

प्यारे—देखिए हुज़ूर, यह फिलासफ़ीकी झाड़-पोंछ आप करते रहेंगे, तो हम आप दोनों राजूकी बरातसे झड़-पुँछ जायँगे यानी मेरा मतलब यह कि बरात चली जायगी और छिपकलीकी दुमकी तरह हम आप यहीं तड़पते रह जायेंगे इसलिए रामसिंह···

राम—खड़ा हूँ शाब!

प्यारे—शाहबका शामान बाहर कारमें रक्खो। टैम नहीं रहा प्रकाश बाबू, जल्दी चलिए शाब।

[सब हँसते हैं]

प्रकाश—चलिए, अब मैं बिलकुल तैयार हूँ।

प्यारे—[कानमें] बरातमें जानेके पहिले हर बरातीको चाहिए कि अपनी शादीकी याद ताजा करके चले। तभी वह दूसरेकी शादीका आनन्द ले सकता है। इसलिए चलनेके पहिले ज़रा भीतर जाकर सलाम तो कर आओ।

[प्रकाश हँसता है]

प्रकाश—खूब याद दिलाई। बरात चढ़नेकी बदहवासीमें सब कुछ भूल गया था। चार दिन तक घरके इंतजामके लिए····ऐं···अरे मेरा पर्स कहाँ है?

प्यारे—देखा, कह रहा था न कि सलाम कर आइये। असली माल तो भीतर ही रह गया है।

प्रकाश—[हँसता हुआ भीतरके दरवाज़ेमें चला जाता है] 'मिस'

[इस बीच प्यारेमोहन एक प्रचलित गानेकी ध्यून गुनगुनाता है और बाहरसे ड्राइवरको बुलाकर उसके हाथ सामान देता जाता है। थोड़ी देर बाद प्रकाश तथा नौकरका प्रवेश]

प्रकाश—हाँ, और देखो रामसिंह, बहुत ध्यानसे रहना। समझे। लो यह दो रुपये तुम्हारे लिए।

राम—शाब, ज़रूर शाब, मक्खी भी नहीं चींकेगा।

रुकाश—चलिए प्यारेमोहनजी, मैं हाज़िर हूँ।

प्यारे—ये कहिए कि तनसे। मन तो पीछे ही छूट गया। [दोनों हँसकर चले जाते हैं]

[शोरगुल, शहनाईकी आवाज़, औरतोंके गानेकी आवाज़]

आवाज १—सब सामान ट्रकमें लद गया कि नहीं ?

आवाज़ २—एक ट्रक तो गई दूसरी तैयार है।

आवाज़ ३—अरे खानेके टोकरे। किधर गये, चाची ?

स्त्री-स्वर—ये हैं इधर। उठा ले जाओ जल्दी।

आवाज़ १—और सुराहियाँ।

स्त्री-स्वर—अरे-अरे यह सोभेका बक्स मत उठाओ। यह मुंशीजीके साथ रहेगा। मैं कह रही हूँ, मत उठाओ। श्यामू ए श्यामू, अरे जाने कहाँ चला गया।

आवाज़ २—राजू कहाँ है, जीजी जल्दी करो भाई, गाड़ीका वक़्त हो गया, रस्में अब ख़त्म करो···उठाओ नौशेको। मोटर तैयार है।

[गानेकी आवाज़ें तेज़ हो जाती हैं]

आवाज़ ३—सुनती नहीं हो, मुंशीजी नाराज़ हो रहे हैं, बस रीतें अब बन्द करो। फिर बरात नहीं जा पायगी।

मुन्शी—[**आते हुए**] बस बन्द करो यह औरत पुराण। बहुत रीतें हो चुकीं। समझीं, ट्रेन टाइम निकला जाता है।

[**गाना मन्द पड़ जाता है**]

मुन्शी—श्यामू, कहाँ हैं तेरे मामा शौकतराय।

मामा शौकतराय—जी, जी, जी फरमाइए, मैं यही हूँ।

मुन्शी—भई, कुछ वक़्तका भी ख़याल है, बन्द करवाइए यह सब और नौशेको कारमें बिठवाइए। बरातियोंकी लिस्ट कहाँ है, सब आ गये कि नहीं, नाम मिला लिये सबके।

मामा शौकत राय—जी, लिस्ट मिला ली, गोया चैक कर ली। इन औरतोंने नाकमें दम कर दिया, ग़लत कहता हूँ जी, नौशेको निकलने ही नहीं देतीं।

मुन्शी—मैं पूछता हूँ सब बराती आ गये हों तो फ़ौरन स्टेशनके लिए रवाना होइए, वक़्त नहीं रहा।

मामा—जी रवाना होइए ? एक खेप तो चली गई। असबाब और बराती दोनोंकी। अब हमीं लोग रह गये हैं।

मुन्शी—और कोई तो नहीं रहा। लिस्ट दिखाइए...

मामा—[**काग़ज़ निकालकर**] जी, यह देखिए, सब टिक लगा दिये हैं।

मुन्शी—हूँ, अपने, मेरे, श्यामू, राजू, रामू और बिल्लूके नामपर भी आपने 'टिक' लगा रखा है, यह क्यों ?

मामा—अजी हम तो गये ही समझिए। ग़लत कहता हूँ जी ?

मुन्शीजी—हूँ, सभी तो आगये मगर प्रकाश और प्यारेमोहन दिखाई नहीं देते। ये लोग कहाँ हैं।

मामा—जी प्रकाश और प्यारेमोहन। हाँ, यह लोग नहीं दिखे। नाकमें दम कर दिया। पता नहीं कहाँ हैं ? श्यामू, अरे श्यामू !

श्यामू—[**बाहरसे**] जी मामा जी।

मामा—अच्छा लिख लेता हूँ दो कम हैं । बक्से गिनो ।

श्यामू—ऐ भोला, अरे हज्जाम, तू उधर बक्से गिन ।

भोला—हज्जाम-अज्जाम मत कहियो भैया । मैं तो नाई-ठाकुर हूँ ।

श्यामू—अच्छा-अच्छा चल गिन, इधर मेरी तरफ़ बत्तीस बक्से हैं ।

मामा—टोकरी पन्द्रह, कनस्तर सत्रह, पोटलियाँ तेरह ।

श्यामू—धीरे-धीरे बोलिए । कोई मशीन तो हूँ नहीं ।

मामा—आजकलके लड़के बड़े मुँहज़ोर हो गये हैं । ग़लत कहता हूँ जी ?

श्यामू—हाँ, बिलकुल ग़लत कहते हैं । आगे तो बोलिए । देर हो जायेगी ।

मामा—बड़े बदतमीज़ हो । हाँ पोटलियाँ तेरह ।

श्यामू—यह तो बादमें हैं मामा जी ।

मामा—बादमें क्या लिखा है, क्या ? कनस्तर सत्रह, पोटलियाँ तेरह··· प्रकाश बाबू, प्यारेमोहन, जीजा जी···यह सब क्या गोलमाल है । असबाबकी लिस्टमें प्रकाश बाबू कहाँसे आ गये···

[**प्यारेमोहन तथा प्रकाशका प्रवेश**]

प्यारे—लीजिए मामा साहब, यह प्रकाश बाबू आ गये । असबाबकी लिस्ट पर 'टिक' लगा दीजिए ।

मामा—क्या मतलब ? ओ हो प्रकाशबाबू, आपने तो औरतोंके साज सिंगारको भी मात कर दिया, इतनी देरमें आप तैयार हो पाये, कमाल है भाई । आजकलकी हवा क्या है बस, ग़लत कहता हूँ जी ?

प्रकाश—नमस्ते शौकत मामा····

श्यामू—मुझे दीजिए लिस्ट मामाजी, प्रकाशबाबूका नाम इसमें कहाँसे हो सकता है । आपने दूसरी तरफ़ काग़ज़ उलट लिया होगा ।

मामा—ज़बान न चलाओ । असबाबकी ही लिस्ट है ।

प्यारे—[**चुटकी बजाकर**] मज़ा आ गया । देखा प्रकाशबाबू····देरमें

आनेका नुक़सान। आप असबाबकी लिस्टमें दर्ज हैं। ताकि कहीं छुट न जायें।

श्यामू—[**हँसकर**] ओ हो बड़ी ग़लती हो गई। असबाबकी लिस्ट तो ऊपर ही ख़तम हो गई है। नीचे जगह थी। जब आप दोनों नहीं आये तो मुंशीजीके कहनेपर याददिहानीके लिए आप दोनोंका नाम मैंने लिख दिया था।

प्यारे—यानी कि मेरा नाम भी। मैं कोई होल्डाल हूँ?

मामा—या कन्स्तर। कोई बात नहीं। यह आजकलके लड़के, बस कुछ न पूछो बिलकुल पलीता हैं। ग़लत कहता हूँ, जी?

प्यारे—जी! देखा प्रकाशबाबू, श्यामूकी नज़रमें मैं हूँ होल्डाल और आप हैं कन्स्तर [**हँसी**]

प्रकाश—[**झेंपते हुए**] अजी जो चाहे कहिए। अभी तो बरात चढ़नेकी शुरूवात है। सिर मुड़ाते ही ओले पड़ रहे हैं।

मामा—अच्छे खासे बाल और जुल्फे बनाये खड़े हैं और कहते हैं कि सिर मुंड़ा रखा है।

प्रकाश—मामा शौकतराय, आप नहीं समझ सकते। यह नये ज़मानेकी बातें हैं।

मामा—अच्छा-अच्छा, जेबमें रखो अपना नया ज़माना। भोलाराम कहाँ गया, श्यामू, तुम प्रकाश बाबूका सारा सामान ट्रकमें रख दो।

श्यामू—हाँ, रख रहा हूँ।

प्रकाश—अरे-रे, क्या करते हो श्यामू। मैं अपना सामान अपने साथ ही रखूँगा। अरे ठहरो, वह अटैची तो ऊपर ही रहने दो। सुनो तो, अरे भाई, मैं कह रहा हूँ कि तुम तो मालगाड़ीकी तरह सारा सामान ट्रकमें फेंक रहे हो। देखो-देखो, वह नाइट-बैग मैं ऊपर ही रखूँगा और अटैची भी।

श्यामू—ऊपर कोई सामान नहीं रह सकता। सब एक साथ ही रहना ठीक है वर्ना किसीका भी सामान नहीं मिलेगा, समझे प्रकाश बाबू !

प्रकाश—अरे भाई, मुझे रेलमें बैठते ही चैंज करना पड़ेगा। दो-एक कपड़े हैंडी चाहिए। वह अटैची और ओवर नाइट-बैग मेरे साथ ही रहने दो।

श्यामू—अच्छा बस, यह नाइट बैग ले लीजिए। वह डे बैग सामानके साथ गया। ड्राइवर, चलाओ ट्रक।

प्रकाश—अरे, अटैची तो निकाल लेने दो।

प्यारे—श्यामू, भाई, तुम समझते नहीं, बरातमें जा रहे हैं। सजधजके जाना चाहिए। क्रीम सेंटकी खुशबू कहाँसे उड़ेगी अगर वह अटैची प्रकाश बाबूसे अलग हो गई। आख़िर नौशैका तो मुँह ढका ही रहता है। नौशेकी शान-शौक़त ख़ूबसूरती तो बरातियोंसे से ही जानी जाती है न ?

प्रकाश—अजी छोड़िए सजधजको। हम तो बराती हैं। ख़ूबसूरत तो उसे लगना चाहिए जिसकी शादी हो रही हो। अगर बारातका हर आदमी नौशा लगने लगा तो लड़की वालेकी मुसीबत ही समझिए।

प्यारे—तभी तो मैंने कहा प्रकाश बाबू, ज़रा सँभलकर चलिएगा। कहीं आपपर वहाँ किसीकी नज़र पड़ गई और किसीने पसन्द कर लिया तब ? तब क्या होगा ?

[**सब हँस पड़ते हैं**]

मुंशीजी—[**द्वारसे आते हुए**] बस जिधर देखो उधर मटरगश्ती ही नज़र आती है। शौक़तराय, अब क्यों देर लगाई जा रही है।

मामा—ये प्रकाशबाबू अब आये हैं। इनका सामान रखा जा रहा था। सामानकी ट्रक गई। बस अब आप कारमें बैठिए।

मुंशीजी—कमाल करते हैं आप भी प्रकाश बाबू। अच्छा अब फ़ौरन चलिए।

[गाना ऊँचा हो जाता है]

मामा—लीजिए नौशा आ रहा है। प्रकाश बाबू चलिए, अपने राजूसे तो मिलिए। आइए प्यारेमोहन जी, अपना नेग तो ले लीजिए।

मुंशी—नेग-दस्तूर ही चलते रहेंगे। वहाँ लड़कियाँ सब नौशेको रोके खड़ी हैं, बर-रुकाईके पाँच सौ माँगती हैं.... यानी हर बहिनके सौ रुपये। प्यारेमोहनको वहाँ ले जाइए, वह भी शामिल हों। वक़्तका कोई ध्यान नहीं, शौकतराय जल्दी करो।

प्यारे—अजी हमें कुछ नहीं चाहिए। बस बरात चढ़ जाय।

मामा—लड़कियो, बस बहुत देर हो गई, नौशेको कारमें बैठने दो।

लड़कियाँ—तो दो न मामा जी आप ही पाँच सौ।

मुंशी—शौकतराय, जाओ सौ देकर मामला निपटाओ, समझे।

[गाना तेज़ होता है]

भोला—मेरो भी नेग मिले मुंशी जी। घरके नाईको काहे भूल जात हो।

मुंशी—अरे चल, तुझे तो बादमें भी मिल जावेगा। पंडित जी चलिए मंत्र पढ़िए।

भोला—सिलक की कमीज, धोती जोड़ा, गर्म कोट और पच्चीस रुपैया।

मुंशी—अच्छा ले यह पाँच रुपये। चलो शौकतराय, बैण्ड बजवाओ। प्रकाश बाबू, आप राजूके साथ बैठ रहे हैं न, श्यामू तुम, बच्चे प्यारेमोहन और शौकतराय उस कारमें चलो....

[बैंड बजता है, मिसाफिर विराम के बाद स्टेशन इफेक्ट]

प्यारे—अजो उतरिए प्रकाश बाबू, राजूको भी उतारिए, ट्रेन तैयार खड़ी है, अब बरातियोंकी चाल छोड़ दीजिए।

प्रकाश—आप तो जनाब मज़ाककी हद कर देते हैं, हर वक़्तकी हँसी भी ठीक नहीं होती। उतर रहा हूँ।

प्यारे—अर रररररर, रूठ गये, जनाब, मज़ाक शादी-विवाहमें ही नहीं होगा तो कब होगा, इतनी-सी बातपर बिगड़ेंगे तो आगे क्या होगा, ख़ैर, आगे-आगे देखिए होता है क्या ?

प्रकाश—अब तो कमर कस ही ली है, जो होगा देखा जायगा। चलिए अब।

प्यारे—आप नौशेको लेकर आगे चलिए। हम श्यामू और बच्चे आते हैं।

[**शोरगुल**]

मुंशीजी—[**घबराये आते हैं**] अरे पण्डितजी कहाँ गये। पण्डितजी कहीं दिखाई नहीं पड़ते। ट्रेन छूटनेमें सिर्फ़ बीस मिनट बाकी रह गये हैं, अब क्या होगा ! बारात कैसे जायगी, शौकतराय, तुम कहाँ भागे जा रहे हो ?

मामा—वह खानेके टोकरे बाहर ही रह गये हैं, रास्तेमें कैसे काम चलेगा ?

मुंशी—ग़ज़ब हो गया, और सोभेका सन्दूक़ कहाँ है।

मामा—सन्दूक़....सन्दूक़ तो आप वाली कारमें था।

मुंशी—शरम नहीं आती आपको, आपसे कहा था अपने ही पास उस सन्दूक़को रखिए, जाइए दौड़कर देखिए, वह खो गया तो बस।

मामा—तो वह खानेकी टोकरियाँ....

मुंशी—भाड़में गईं टोकरियाँ....यहाँ हज़ारोंका माल खोया जा रहा है, आप सन्दूक़को देखिए, प्यारेमोहन, अरे श्यामू, तुम सब कहाँ गये ? [**भोला दौड़ा आता है**]

भोला—क्या है मुंशीजी ?

मुंशी—भोला, तू दौड़के जा, खानेके टोकरे बाहर रह गये हैं।

भोला—अच्छा मुंशी जी।

मुंशी—अरे देख, जल्दी आना, ट्रेन छूटनेका वक़्त हो रहा है।

भोला—बहुत अच्छा मुंशीजी।

मुंशी—अरे पण्डितजी तो वह उधर आसन लगाये बैठे हैं। ओ पण्डित, ओ पोंगा। [**पास आकर**]

अरे पण्डितजी ट्रेन छूट रही है, और तुम यहाँ समाधि लगाये हो····यह क्या हो रहा है ?

पण्डित—यात्रापर प्रस्थानके पूर्व प्राणायाम करना आवस्यक होता है, मुनसीजी, जिशशे शमश्त यात्रा मंगलमय हो। मैं श्वश्ति कामना कर रहा था, चलिए अब बिलम्ब क्या है। लग्नशारिणीके अनुसार इश शमय वारसूल, दिसासूल, नक्षत्रसूल, समयसूल, जोगिनी वास आदि सब सुभ हैं, विवाह अत्यन्त सुभ होगा मुंसीजी।

मुंशी—अति शुभ तो होगा ही मगर अभी तो नाकों चने चबाने पड़ रहे हैं। इधर आप ट्रेन टाइमपर समाधि लगानेके लिए ग़ायब, उधर सोभेका सन्दूक़ नहीं मिल रहा है।

पण्डित—चिनता मत कीजिए मुंसीजी, मुहूर्त अति उत्तम है। शन्दूक कहीं नहीं जा शकता।

मुंशी—अच्छा, आप फ़ौरन उठकर ट्रेनमें बैठिए। लीजिए स्टापर डाउन हो गया।

[**प्रकाश भागा आता है**]

प्रकाश—मुंशीजी, सामानमें ट्रंक नहीं मिल रहा है। और मेरा टिफिन कैरियर भी गायब है।

मुंशी—तो मैं क्या करूँ। हर चीज़ इसी वक़्त गायब होना है।

प्रकाश—लेकिन अब क्या होगा। मैं कैसे चल सकता हूँ जब कि मेरा सामान ही खो गया।

मुंशी—अजी चलिए बैठिए। [**गाड़ीकी सीटी बजती है**] वहीं सामान में इधर-उधर हो गया होगा।

मामा—सन्दूक़ मिल गया। बैठिए आप गाड़ीमें।

प्रकाश—पर मेरा अटैची और टिफिन कैरियर यहीं कहीं छूट गया है।

मामा—अब देखा जायगा, चलिए-चलिए ।

[**गाड़ीकी दूसरी सीटी बजती है**]

प्यारे —[**जाते हुए**] चलो श्यामू, अब बैठ लो ट्रेन छूटी । तो समझ लिया तुमने मेरा प्लान । आगरे पहुँचकर प्रकाश बाबूकी किरकिरी न कराई तो मेरा नाम प्यारेमोहन नहीं ।

श्यामू—हाँ, बड़ा मज़ा रहेगा । प्रकाश बाबू बड़ी शान बघारते हैं । अपने को जाने क्या समझते हैं । इनको मज़ा चखाना ही चाहिए····

प्रकाश—प्यारे मोहनजी, मेरा अटैची····अरे यह तो आपके हाथमें है ।

प्यारे—घबराइए मत । गाड़ीसे अब मत उतरिए ।

[**ट्रेन सीटी देकर चल पड़ती है । कुछ क्षणों तक उसकी आवाज़ आती रहती है फिर क्रमशः बैंड बाजेमें मिल जाती है । रिकार्ड बज रहे हैं**]

प्रकाश—क्या जनवासा दिया है लड़की वालोंने । वाह ! वाह !! वाह !!! एक तो इतनी तंग गली कि एक-एक आदमी क्यूमें निकले । जबसे यह बनी होगी तबसे धूप इसकी क़िस्मतमें ही नहीं लिखी । तिसपर यह मकान । तोबा है । चारों तरफ सील इतनी गोया यह कोई तहखाना है । ऊपरसे मच्छर और खटमल, बदनमें चौबीसों घण्टे आग लगी रहती है । खटमलोंके मारे ज़मीनपर बिस्तर बिछाकर सोते हैं तो कमर और पीठ अकड़ जाती है । अजीब आफ़त है । सारे मकानमें एक नल, नहानेके लिए लाइन लगाओ । एक बूँदकी धार बन-बनकर पानी आता है । क्या नल है और वह भी ग्यारह बजे अन्तरध्यान । छै तौलिये खो गये । पता नहीं क्या ज़मीन खा गई । इधर निकाला उधर गायब ।

राजू—[**मिनमिनी आवाज़में**] क्या कर रहे हो प्रकाश, मैं इस वक़्त अकेला हूँ । ज़रा इधर ही आ जाओ ।

प्रकाश—यह कौन भुनभुना रहा है, समझमें नहीं आता ।

राजू—अरे मैं राजू हूँ प्रकाश, ज़रा इधर मेरे पास आओ।

प्रकाश—वाह रे राजू, तुमने तो अपनी बोलीसे लुगाइयोंको भी मात कर दिया।

राजू—अरे चुप रहो, मैं नौशा हूँ। नौशेको ऐसे ही शरमा-शरमाकर बोलना चाहिए, ही-ही-ही।

प्रकाश—अबे तो मेरे सामने तो ऐसे न बोल। यह स्वांग बाहर वालोंके लिए ख़ासतौरसे ससुराल वालोंके लिए ही रिज़र्व रखो।

राजू—ही ही ही, ससुरालके लिए। उसीके लिए तो यह सारा तामझाम है, प्रकाश, ससुराल—ही-ही-ही।

प्रकाश—ससुरालके नामसे तो बाँछे खिलने लगती हैं, क्या कहने हैं··· और ताम-झाम तो ससुरालके लिए ऐसा है कि उसने तुमको बजरबट्टू ही बनाकर छोड़ा है।

राजू—सच कहना प्रकाश, मैं इस वक़्त अच्छा लगता हूँ कि नहीं, शीशे में अपना चेहरा देखता हूँ तो अपनी सूरतपर यक़ीन नहीं आता। जो आता है मुझे ही देखनेको लालायित आता है। ही-ही।

प्रकाश—अरे क्या बात है, तुम्हारी ख़ूबसूरतीकी? इस वक़्त तो उसमें इस धजने चार चाँद लगा दिये हैं। दुरंगे तिरंगे कपड़े, जुल्फ़ोंसे तेल चू रहा है। आँखोंमें ऐसा चौड़ा काजलकी आँखें नहीं सुरमादानी लग रही हैं, कनपटीपर टिमकना, माथेपर हलदी-चावलका पोता, सिरपर चमकी पन्नी लगे मौरछत्र, कलाईमें लाल डोरोंका मोटा गुच्छा जिसमें सुपारी, पानका पत्ता, घास, लोहेके छल्ले जैसी नायाब चीजें बँधी हैं, गुलाबी रंगका पाजामा, गोटे किनारी से बनी अचकन। क्या बात है तुम्हारी ख़ूबसूरतीकी।

राजू—और देखो प्रकाश, कहीं हमें नज़र न लग जाये। ही-ही-ही। इसलिए यह रेशमी रूमालमें छोटा-सा रोली लगा चाकू है।

प्रकाश—सच कहते हो राजू, कहीं तुम्हें नज़र न लग जाय [गाने लगता है—"नजर लग जायेगी, नजर लग जायेगी"]

[बर्तन और शकोरा गिरने तथा टूटनेकी आवाज़]

प्रकाश—अरे रे, धत तेरेकी, ओ भोलाके बच्चे, कक्कूके हाथमें क्यों वह शकोरा दिया था, हाय-हाय, सारा तरकारीका शोरवा मेरे बिस्तरोंपर गिरा दिया, नास कर दिया मेरे कम्बल तकको, हाय-हाय-हाय, अरे, मेरा सुपर फाइन कम्बल।

राजू—ही-ही-ही-ही, प्रकाश, दोस्तकी शादीमें आये हो, कोई मज़ाक थोड़े ही है, अपने दोस्तके लिए कठिनाइयाँ न उठाओगे तो क्या घरकी रानी सहजमें मिल जायगी, घरकी रानी, प्रकाश, ही-ही-ही····

प्रकाश—अरे शादी तो तुम्हारी हो रही है। यहाँ तो बरबादी ही बरबादी है, बरातके पहिले दिनसे। टिफिन कैरियर पकवानोंसे भरा का भरा खोया, आधे दर्जन चादर और तौलिये खो गये····चलो वह किस गिनतीमें है। अब कम्बल और बिस्तर बच्चेने नास कर दिये, आय हाय, हाय, मेरा सुपरफाइन कम्बल।

राजू—छोड़ो भी यार कम्बलका ग़म, यह अफ़सोसका मौक़ा थोड़े ही है, हमारी शादी हो रही है····ही-ही-ही····शादी ! और तुम मनहूसियत फैला रहे हो, कोई बात हुई, ही-ही····

प्रकाश—अरे भाई चाँदी तो तुम्हारी है, ज़ेवर मिलेगा, सामान मिलेगा, शान शौक़तसे बिरादरीमें धाक जमेगी और ब्याजमें नई नवेली दुलहिन मिलेगी।

राजू—ब्याजमें कैसे वाह जी, वह तो मूल धन ही है कैपीटल इनवेस्टमेंट···· ही-ही-ही····

[दरवाज़ा खटकता है]

प्यारे—अजी, मैंने कहा राजू साहब, यह लीजिए अपनी सारी ख़ुदाई एक तरफ़से यानी अपने साले चम्पालाल उर्फ़ मुन्ना बाबू उर्फ़ पटाख

साले यानी हमारे साले आप और आपके साले ये, समझे राजू साहेब। मिलिए

राजू—ही-ही-ही-ही····क्या नाम बताया चम्पाला····ही-ही-ही।

प्यारे—हाँ-हाँ चम्पा ही कहो, यही अच्छा लगता है, साला चम्पा और बीवी भी चम्पा····मेरा मतलब चम्पाकलीकी तरह, ये मुन्ना और वे मुन्नी [**हँसता है**]

प्रकाश—आप भी हद करते हैं प्यारेमोहनजी, कहीं ऐसा मज़ाक किया जाता है। कुछ ऐटीकेटका भी तो ध्यान रखा कीजिए।

प्यारे—एटीकेट, पेटीकेट या कोट अपने पास ही रहने दीजिए प्रकाश बाबू, शादीका वक़्त है, साले-सालियोंसे मज़ाक होना ही चाहिए, और तिसपर इस वक़्त लालपरीके उड़नखटोलेपर हम सवार हैं····हा-हा-हा····

राजू—ही-ही-ही····अजी चम्पालालजी····

प्यारे—नहीं जी चम्पा, कुछ बोलिए तो····

चम्पालाल—मैं तो समझता था कि आपके इलाहाबादमें अमरूद ही अमरूद नहीं होते आदमी भी होते हैं पर आप लोगोंको देखकर तो यही ख़याल होता है कि अमरूदकी फसल ही ज़्यादा होती है, और वह भी कच्चे और कसैले····

प्यारे—बोले····बोले····बोले····अरे वाह रे मेरे मिट्टीके शेर, चम्पो।

[**खटपट होती है**]

[**बैंडोंकी ध्वनि**]

मामा—[**नशेमें झूमते हुए**] यह क्या हुल्लड़ मचा रखा है, ग़लत कहता हूँ जी, जिधर देखिए उधर चिल्ल पों····बन्द कीजिए ये बकवास, द्वारचारकी तैयारी कीजिए, बरात चढ़ रही है।

प्यारे—चढ़ रही है, किसपर चढ़ रही है; पहाड़पर या क़िलेपर मामू जान····

मामा—क़िलेपर [हँसता है] हाँ भाई, ठीक है क़िलेपर, लड़की वालों-का घर क़िला ही समझो, उसीपर हमारे राजूको फ़तह पाना है, [हँसता है] माई डियर राजू, बेटा झेंपो मत, झेंपनेकी क्या बात है, यह चढ़ाई तो सबको करनी पड़ती है।

राजू—ही-ही-ही····मामाजी····

प्यारे—मामूसाहब ? इनसे मिलिए, राजूके साले चम्पालाल। अरे मैं भूल गया चंपाजी, चंपा, चंपी, मुन्ना, मुन्नी····[हँसता है]

चम्पालाल—अच्छा अब इजाजत दीजिए, द्वारचारका मुहूर्त न निकल जाए। तैयारी कीजिए।

प्यारे—अर्र्र्र् चले चंपाजी, अच्छा भाई तुम्हारे दरवाज़ेपर ही अब चोंचें लड़ेंगी। टू टू बीक्स होंगी

[मुंशीजीका प्रवेश]

मुंशी—शौकतराय, बस फिर वही ढील-ढाल। राजूको तैयार करो। द्वार-चारका वक्त हो गया। उठो झटपट, प्रकाश····आपको सिंगारमें ज़्यादा वक्त लगता है जल्दी कीजिए। फ़ौरन तैयार हो जाइए।

प्रकाश—लेकिन मेरा सूट ही नहीं मिल रहा मुंशीजी। समझमें नहीं आता कहाँ गया।

प्यारे—सूट नहीं मिल रहा। अफ़सोस, हे भगवान् अब क्या होगा, प्रकाश बाबूका सूट नहीं मिल रहा। अब द्वारचारका टाइम इनको कैसे सूट होगा।

प्रकाश—[झल्लाकर] आपको मज़ाक सूझ रहा है, अब मैं क्या पहिन-कर चलूँगा। बताइए।

प्यारे—हाँ-हाँ, बताइए। मैं बिलकुल सीरियस हूँ।

मामा—आप और सीरियस [हँसता है]

मुंशी—जल्दी करो। क्या ढील-ढाल मचा रखी है। दरवाज़ेका मुहूर्त

टल जायगा। दस मिनटमें सबको तैयार हो जाना चाहिए। पंडत ऐ पंडत।

पण्डित—आयुस्मान् मुंसीजी, क्या आज्ञा है।

मुंशी—कै बजेका मुहूर्त है पंडत ?

पण्डित—आहा हा, अत्यन्त मंगलकारी मुहूर्त है। महासुभ····द्वारचार घटिकायन्त्रशे रात्रि ग्यारह बजकर शत्ताइश मिनट शाढ़ेदस शेकिंड-पर होनेका आदेस है। तद्नुशार निसामुखसे तेरह घड़ी आठ पलपर।

मुंशी—कुछ पल्ले नहीं पड़ता। बहरहाल हमारे हिसाबसे साढ़े ग्यारह बजे रातका मुहूर्त है। बस पन्द्रह मिनट बाक़ी हैं। शौकतराय, बस चलनेका इन्तजाम करो। प्यारेमोहन, तुम राजूको तैयार करो। प्रकाश बाबू, आपका सूट मिला कि नहीं [**धीरे**] इनके यही नख़रे हैं। सूट नहीं मिलता तो दूसरा निकाल लें, क्या एक ही लाये थे····

प्यारे—क्या पता, मेरे सामने जब सामान जमा रहे थे तो दर्जनोंकी बातें करते थे।

प्रकाश—मैं सब सुन रहा हूँ, आप मेरी परेशानीका अन्दाज़ा नहीं लगा सकते। सुबह शाम मेरी एक-एक करके तमाम चीज़ें खोती जा रही हैं। अब क्या ख़ाक द्वारचारके लिए चलूं ?

मुंशी—हो क्या गया प्रकाश बाबू ?····

प्रकाश—अजी मुंशीजी, बस कुछ मत पूछिए, मुझे यह नहीं मालूम था कि बरातमें चलना इतना मँहगा पड़ेगा। अब देखिए मैंने द्वारचारपर पहननेको अपना सबसे अच्छा सूट निकाला था, निकालकर उधर वाश करने गया, वापिस आकर देखता हूँ तो कमीज़ और एक मोज़ा पड़ा है। सूट, टाई, रूमाल गायब हैं।

जाने कौन ले गया। सबसे ताज्जुबकी बात तो यह है कि मोज़े जोड़ीमेंसे एक मोज़ा रह गया है। एक गायब है।

मुंशी—तो दूसरा सूट झटपट निकाल लीजिए, क्या मुज़ायका है। बरात में तो चलना ही पड़ेगा।

प्रकाश—माफ़ कीजिए। मैं इस तरह नहीं जा सकूँगा।

मुंशी—यह क्या कहते हैं आप, अच्छा इधर-उधर देख लीजिए। यहीं कहीं होगा कौन ले जा सकता है। शौकत सब तैयारी हो गई। और हाँ, श्यामू कहाँ है ?

मामा—अभी थोड़ी देर पहिले तो यहीं था।

प्यारे—अजी नहीं वह तो बड़ी देरसे घूमने गये हैं।

मुंशी—इन लड़कोंकी अक़्लपर तो पत्थर पड़ गये हैं, घूमकर अबतक नहीं लौटे। कुछ ख्याल नहीं है।

प्यारे—शामको ताज देखने गये थे। कहते थे क़िला भी देखेंगे।

मामा—तो कहीं क़िलेमें ही तो बन्द नहीं रह गया।

प्यारे—नहीं-नहीं यह नहीं हो सकता।

मुंशी—पर तुम तो कहते थे शौकतराय कि वह अभी यहीं था।

मामा—हाँ-हाँ यहीं था····यही तो मैं कह रहा हूँ।

प्यारे—कहाँ था अभी मामूजान। आप तो भूल जाते हैं।

मुंशी—धत्तेरेकी, तुम दोनोंपर खूब चढ़ी है। कहिए प्रकाश बाबू, मिला आपका सूट ?

प्रकाश—सब जगह देख लिया, कहीं नहीं है। मैं नहीं जाऊँगा। आपलोग जाइए।

राजू—यह कैसे हो सकता है प्रकाश ····मैं भी नहीं जाऊँगा।

मुंशी—पागल मत बनो राजू ····चुप रहो। नौशेको चुप रहना चाहिए।

राजू—जी अच्छा, ही-ही-ही।

मुंशी—क्या ही-ही-ही करता है ।

राजू—जी कुछ नहीं, ही-ही-ही ।

पण्डित—ये न बद्धो बलीराज दानवेन्द्र महाबले····तुरन्त प्रस्थान कीजिए मुंसीजी, सुभमुहूर्त टला जाता है ।

[**बैण्ड तेज हो जाता है**]

मामा—चलो बेटा राजू ····

राजू—प्रकाश, तुम नहीं चलोगे ।

प्रकाश—नहीं, तुम लोग जाओ ।

[**पदचापें**]

प्यारे—[**झूमते हुए**] कोई बात नहीं प्रकाश बाबू, एक आदमी जनवासे-की हिफ़ाजतके लिए भी तो चाहिए, अच्छा टा····टा । खूब गुज़रे-गी जब मिल बैठेंगे दीवाने दो [**हिचकी**] दो नहीं एक····

[**सन्नाटा**]

प्रकाश—अच्छे बरातमें आये । रमा ठीक कहती थी । ख़ूब करारी चपतें पड़ीं । अब बेटा प्रकाश, बरातका नाम न लेना समझे, मगर [**साँस लेकर**] सूट बड़ा बुरा गया ।

[**दरवाज़ा भड़से खुलता है**]

प्रकाश—कौन ? अरे श्यामू ! बरात चली गई और तुम, अच्छा ! कुछ होश है कि आप क्या पहने हैं ।

श्यामू—ओ प्रकाश बाबू वाह-वाह-वाह मैं तो डर गया कि कोई चोर है अच्छे मिले । आप बरातके साथ नहीं गये ।

प्रकाश—हुँ, बरातके साथ नहीं गये । तो मेरा सूट आप पहिनकर चंपत हो गये थे । यह बात है । हूँ····

श्यामू—क्या कहा, आपका सूट । जी यह तो मेरा, एँ, यह क्या ? पर यह तो मैंने निकालकर अपने ट्रंकके ऊपर रखा था ।

प्रकाश—जी नहीं मैंने निकालकर ट्रंकके ऊपर''''ओफ ओ अब मालूम पड़ा''''आपका ट्रंक बराबर ही रखा है। शायद जल्दीमें आपके ट्रंकपर ही रख दिया था। फिर मैं वाश करने चला गया लौटकर देखता हूँ कि सूट गायब है।

श्यामू—तो देखिए यह मेरी ग़लती तो नहीं। आपने मेरे ट्रङ्कपर अपना सूट क्यों रखा। मैं समझा कि मैंने अपना ही निकालकर रखा है [**चुटकी**] कामेडी आफ़ मैनर्स या एरर्स। लेकिन देखिए प्रकाश बाबू यह सूट मेरे बदनपर एकदम फिट है। जैसे मेरे नापका ही बनाया गया था। बस अब यह मुझे प्रेजेण्ट कर दीजिए।

प्रकाश—जाइए जाइए, ले जाइए। सब ले जाइए, पूरा सूटकेस अपने बक्सेमें उलट लीजिए। मैं आज रात ही इलाहाबाद वापिस चला जाऊँगा।

श्यामू—क्या ग़ज़ब करते हैं आप? लीजिए मैं सूट उतारे देता हूँ। आप पहन लीजिए।

प्रकाश—जी नहीं, मैं पहना कपड़ा कैसे पहन सकता हूँ। पहले ड्राई क्लीन करवाना पड़ेगा। [**प्यारेमोहन वापस आते हैं**]

प्यारे—लीजिए हम भी वापिस आ गये प्रकाश बाबू। आपकी कोशिश बड़ी ज़बरदस्त है। देखिए झटपट उठिए आपको लड़की वालेके घर रस्म निभाने चलना है।

प्रकाश—मुझे कुछ मतलब नहीं रस्म-वस्मसे। समझे, आप जाइए।

प्यारे—अजी यही तो मौक़ा बरातियोंको मिलता है कि वह भीतर औरतोंमें जाकर अपनी आँखें ठण्डी करें। बस आपको और हमें एक पूजन करनी पड़ेगी। पीठपर नाज़ुक हाथोंसे हल्दीके छापे लगवाने पड़ेंगे और एवजमें एक-एक सूटका कपड़ा मिलेगा।

श्यामू—चलिए प्रकाश बाबू, यह मौक़ा हाथसे मत जाने दीजिए। हमारा

भी मारकेट बढ़ेगा। बस रस्मके लिए बढ़िया कपड़ोंकी ज़रूरत नहीं।

प्यारे—चलिए उठिए। उठाओ श्यामू इन्हें जबरदस्ती, उठिए।

प्रकाश—अच्छा-अच्छा छोड़ दीजिए। मैं चलता हूँ, मन तो नहीं है पर क्या करूँ।

[**विलयन**]

[**गानेकी आवाज़ें, औरतोंके हँसनेकी आवाज़ें**]

सरोज—ओहो, शान्ती, उस बजरबट्टूको तो देख, कैसी कौवेकी नज़रसे हम सबको देख रहा है।

शान्ती—इस कौवेकी दुम न रंगी तो मेरा नाम शान्ती नहीं। अरी किरन इधर तो आ तीन लाजू-काजू आये हैं।

किरन—किधर हैं, अच्छा, हाँ चाल तो देखो उस लम्बूकी, जैसे लंगूर उछल रहा हो।

[**हँसती है**]

सरोज—लंगूर, हाँ ठीक है। यह नौशेका बहनोई है प्यारेमोहन।

शान्ती—और वह छोटा लंगूर ?

किरन—छोटा लंगूर नहीं, भूरे मुँहका बन्दर।

सरोज—वह नौशेका भाई है, श्यामसुंदर, श्यामू कहा जाता है, चम्पा भैया बता रहे थे।

किरन—और वह तीसरा कौन है, भीगी बिल्लीकी तरह।

शान्ती—भीगी बिल्ली या बिल्ला।

सरोज—हाँ बिल्ला कहो री बिल्ला। अहा-हा, क्या लड़कियोंकी तरह शर्मा रहे हैं बिल्लेजी।

किरन—इनमें यह बिल्ला सबसे तमीज़दार लग रहा है। बाक़ी दोनों ऐसे उछल-कूद कर रहे हैं, नज़रें दौड़ा रहे हैं मानो कबूतर दाना देख रहा हो।

[**हँसती है**]

सरोज—यह नौशेका दोस्त है प्रकाश। इसकी दुरगत जरूर बनाना, समझीं।

[क्रास फेड]

प्यारे—देखो प्रकाश बाबू, सँभल-सँभलकर पग धरना। काँटोंकी फुलवारी है। कोई काँटा चुभ न जाय।

श्यामू—वह बीचवाली लड़की प्रकाश बाबूको बड़ी ललचाई आँखोंसे देख रही है।

प्यारे—आज चाँदी है तुम्हारी, प्रकाश बाबूके भाग्य खुल गये, कहो पसन्द है ?

प्रकाश—अजी चुप रहिए। लेडीज़के सामने तमीजसे पेश आना चाहिए।

[क्रास फेड]

शान्ती—क्या कानाफूसी कर रहे हैं तीनों बन्दर। सरोज, इनकी रोलकाल पुकारो।

किरन—[ताली बजाकर] हाँ यह अच्छा रहेगा। बड़ा मज़ा आयगा।

[सब एक साथ हँसती है]

[ताली बजाकर]

किरन—शान्ती, सरोज, आइए····आइए····तैयार हो जाइए सब।

सरोज—हाज़रीन, अब ब्यूटी एण्ड दी बीस्टका कम्पटीशन होगा।

[सब हँसते हैं]

शान्ती—पहले इनकी रोलकाल लो।

किरन—हाँ-हाँ, जल्दी करो।

सरोज—सभा शान्त हो। लंगूर लोगोंकी पहले हाज़िरी होगी।

प्यारे—बुरे फँसे हो प्रकाश।

प्रकाश—अरे, चुप रहो। अब कर्मोंका फल भोगो।

श्यामू—मज़ा आ गया आज। बरातमें आनेकी पूरी क़ीमत वसूल हो गई।

सरोज—लंगूर नम्बर एक ।
श्री प्यारेमोहन हाज़िर हैं ?
प्यारे—हाज़िर हुजूर !
शान्ती—लंगूर नं० दो ।
श्री श्यामसुन्दर हाज़िर हैं ?
श्यामू—हाज़िर, सरकार ।
किरन—नं० तीन ।
श्री प्रकाशनारायण हाज़िर हैं ?
शान्ती—लंगूर कह लंगूर । लंगूर नं० ३ ।
किरन—मैं नहीं कहती ।
सरोज—अच्छा देखते ही मुहब्बत हो गई । तू नहीं कहती तो मैं कहती हूँ ।
प्यारे—देखा प्रकाश, वह फिदा है आपपर ।
प्रकाश—श्, श्, श्····
सरोज—लंगूर नं० तीन श्री प्रकाशनारायण हाज़िर हैं ?
प्रकाश—जी मौजूद हूँ ।
शान्ती—आय हाय, बड़े नखरेमें बोले ।
सरोज—लगाओ दो हाथ, हल्दीके पहले इन्हींके ।
शान्ती—लो यह लो ।
प्यारे—अरे-रे भागो श्यामू ।
सरोज—भागके कहाँ जाओगे····ए यह लो ।
श्यामू—हाय राम, मार डाला ।
किरन—और यह लो ।
प्यारे—आह ! प्रकाशजी, देखो दो बार भाग खुल गये, [**हँसी**]
सरोज—अजी, जाते कहाँ हो, मार खानेकी क़ीमत तो लेते जाओ ।
जूतियोंकी पूजन करके अपने-अपने सूट ले लो ।
प्रकाश—मुझसे नहीं होगा प्यारेमोहनजी, मैं जाता हूँ ।

प्यारे—अरे सुनो सुनो·······

श्यामू—क्या करते हो प्रकाश बाबू ।

प्रकाश—नहीं मैं यहाँ एक मिनट नहीं ठहर सकता····

[हँसी प्रकाश विलयन] [शहनाईका स्वर]

श्यामू—जीजाजी, काम ऐसे नहीं बनेगा । शौकत मामाको भी अपनी तरफ़ मिलाइए तब बात बने ।

प्यारे—वही लड़की है जो प्रकाशकी तरफ़ बड़े ग़ौरसे देख रही थी । शादी लायक़ है । उसके भाईको मैंने राजी कर लिया है । आज दावत भी उसके घर रखी है । लड़कीके हाथका ही खाना मिलेगा । परोसनेमें दिखा भी दी जायगी । पर प्रकाश बाबूको चाहे कुछ हो ज़रूर ले चलना है ।

श्यामू—तो शौकत मामाको ज़रूर मिलाइए । वर्ना बात सीरियस नहीं हो पायेगी । लीजिए मामा इधर ही आ रहे हैं । [**शौकतराय आते हैं**]

मामा—क्या मिसकौट हो रही है साले-बहनोईकी ? प्यारेमोहन—क्या बात है ?

प्यारे—बात तो ख़ास है शौकत मामा । श्यामू, तुम ज़रा बाहर चले जाओ ।

मामा—हाँ, अब बताओ ।

प्यारे—बात यह है कि कल लाजू-काजूके वक़्त एक लड़की बड़ी सुशील और अच्छी देखी है । सोचता हूँ हमारे घर यानी मुंशीजीके घर वह बहू बनकर आये ।

मामा—तो बात चलाओ ।

प्यारे—बात तो चलाई है । उसका बड़ा भाई ही सब कुछ करेगा । वही घरमें है ।

मामा—जन्मपत्री वग़ैरा ले·लो ।

प्यारे—हाँ, वह तो सब हो ही जायगा। आज ही रात उसने मुझे और श्यामूको अपने घरपर खानेको बुलाया है।

मामा—तो मैं भी चलूँ।

प्यारे—नहीं मामा जी, आप मत चलिए, क्योंकि ख़ुद लड़की आकर खाना परोसेगी। आप बुजुर्ग हैं शायद आपके सामने न आवे, पर प्रकाश बाबूको किसी तरह हमारे साथ भेज दीजिए।

मामा—तो प्रकाशसे तुम ख़ुद क्यों नहीं कहते।

प्यारे—अभी वह हमसे नाराज़ हैं। आपकी बात मान लेंगे।

मामा—तो इसमें क्या है। मैं कहे देता हूँ। आख़िर घरका ही तो काम है। प्रकाश बाबूको करना ही चाहिए। अजी प्रकाश बाबू, ज़रा यहाँ आइए।

प्रकाश—जी शौकत मामा! अभी आया।

मामा—भाई, एक ज़रूरी काम है। तुम्हारी मददकी दरकार है।

प्रकाश—फरमाइए····

मामा—प्यारेमोहनने एक लड़की कल रात देखी है।

प्यारे—अजी उसे तो प्रकाश बाबूने भी कल देखा है, वही किरन···

प्रकाश—जी हाँ तो, बताइए क्या बात है?

मामा—प्यारेमोहनको वह काफ़ी अच्छी लगी, और अब राजूकी शादी हो गई है तो फिर दूसरा नम्बर श्यामूका तो आना ही चाहिए।

प्रकाश—अच्छा, अच्छा समझ गया, तो मुझे क्या करना है।

प्यारे—कुछ नहीं, बाक़ीका सब काम तो हमने कर ही लिया है, और कर लेंगे। आज किरनके भाईने दावत की है हमारी, मैं जाऊँगा, श्यामू भी, आप भी अगर चलते तो अच्छा रहता।

प्रकाश—अजी, तौबा कीजिए, मैं कहीं दावत-वावतमें नहीं जा सकता। आलरेडी पेट इतना बिगड़ गया है पूरियाँ खाते-खाते और वह भी दो-दो बजे रातको।

शौकत—यह नहीं हो सकता प्रकाश बाबू। यह काम तो आपको करना ही पड़ेगा, घरका मामला है, चले जाइए।

प्रकाश—[**अनमने**] अच्छा आप कहते हैं तो चला जाऊँगा, पर देखिए प्यारेमोहन साहब, मैं खाऊँगा कुछ नहीं।

प्यारे—बस, चले चलिए, चाहे कुछ न खाइएगा। लड़की सिर्फ़ पसन्द कर दीजिए।

[**दृश्यपरिवर्तन**]

गुलज़ारी—मैं बड़ा कृतज्ञ हूँ आपका प्यारेमोहनजी, लड़का बड़ा ही अच्छा आपने बताया। बस, यह शादी हो जाय तो जिन्दगीभर आपका एहसान नहीं भूलूँगा।

प्यारे—अजी यह तो घरका ही काम है गुलज़ारी बाबू, हाँ एक बात बताइए, बुरा न मानिएगा। आपकी बहिनको पसन्द है न ?

गुलज़ारी—अब यह बातें तो पूछी नहीं जातीं, पर शान्ती और सरोजके कहनेसे मालूम हुआ कि इनकार नहीं करेगी, और फिर इनकार कर भी कैसे सकती है ?

प्यारे—तो आप पक्की कर लीजिए, मेरे ख़यालसे लड़केको टीकेके दस रुपये दे दीजिए····श्यामूको भी नज़राना देना मत भूलिएगा।

गुलज़ारी—लेकिन रुपयेसे तो पक्की बात नहीं होगी।

प्यारे—तो न हो लगे हाथों एक ख़त इनके घरपर लिख दो।

गुलज़ारी—हाँ, यह ठीक रहेगा, पता बताइए।

प्यारे—लिखिए।

गुलज़ादी—जी।

प्यारे—श्री पंपी नारायन।

गुलज़ारी—जी।

प्यारे—३१, सिविल लाइन्स
इलाहाबाद।

गुलज़ारी—बहुत-बहुत धन्यवाद, अच्छा ये रुपये लीजिए। मेरी तरफ़से दे दीजिएगा। ख़त मैं अभी डाले देता हूँ सगाईके लिए।

प्यारे—बिलकुल ठीक है, अच्छा नमस्कार, अब बरातकी वापसीका इन्तजाम मुझे करना है, चलूँ ?····

[**विलयन**]

[**बैंड बाजा शोर शहनाई बजकर धीरे-धीरे विलीन होते हैं**]

[**दरवाज़ा खटकता है**]

प्रकाश—रार्मसिह ओ रार्मसिह, दरवाज़ा खोलो, बरातसे वापिस आ गया।

[**कोई नहीं बोलता**]

प्रकाश—रमा ! अरे भाई, रार्मसिहको भेजो, सामान उतारे, मैं बेहद थक गया हूँ।

[**दरवाज़ा खुलता है**]

रार्मसिह—सलाम हुजूर, आ गये हुजूर ?

प्रकाश—हाँ सामान उतारकर लाओ, और लो ये एक रुपया ताँगेवालेको दे देना।

[**पदचाप**]

प्रकाश—रमा, किधर हो रमा, अरे बोलती क्यों नहीं हो। छै दिन अलग रहनेपर ही इतनी रूठ गई। [**पास आकर**] रमा, क्या बात है। मैं इतनी परेशानियाँ झेलकर आया हूँ कि बस मन और शरीर दोनोंके टुकड़े-टुकड़े हो गये हैं और तुम बोलती नहीं।

[**मौन**]

प्रकाश—अरे रमा····यह क्या हो गया, तुम रोने लगीं। बात क्या है ? तबीयत ख़राब है।

रमा—मुझसे मत बोलो। ख़ूब गुलछर्रे उड़ाओ। बरातें करो। दूसरी शादियाँ रचाओ। मुझे एक पुड़िया ज़हरकी वहाँसे क्यों न भेज दी ?

प्रकाश—[आश्चर्यसे] क्या, क्या कह रही हो रमा, शादियाँ रचाओ, बरातें करो। भाई, बरातमें तो तुमसे इजाज़त लेकर ही गया था ?

रमा—बड़ी अच्छी इजाज़त लेकर गये थे, क्या मैंने यह भी इजाज़त दी थी कि वहाँ तुम रोमांस लड़ाना, दावतें खाना, लड़की देखना, दूसरी शादीके लिए सगाईके रुपये लेना, लड़कीके हाथका खाना खाना और फिर यहाँ आकर मुँह देखी करना····

प्रकाश—क्या कह रही हो रमा। होशमें तो हो। कैसी लड़की और कैसी शादी।

रमा—हाँ-हाँ, बड़े भोले बन रहे हो।

प्रकाश—देखो रमा, तुम बहुत बड़ा लांछन मुझपर लगा रही हो। तुम्हारे पास इस सबका क्या।

रमा—सबूत, सबूत मेरे पास पक्का है। मैं तो तुम्हारी रंगीली आदतसे ख़ूब परिचित हूँ। जहाँ कोई सुन्दर लड़की देखी तुम्हारा तो फिरसे शादी करनेको मन करता है। अच्छा बोलो तुमने किरन नामकी लड़की नहीं देखी ?

प्रकाश—हाँ देखी थी, फिर।

रमा—उसके हाथका खाना नहीं खाया····

प्रकाश—हाँ खाया था।

रमा—उसके भाईसे सगाईके रुपये नहीं लिये····

प्रकाश—सगाईके रुपये ? क्या मतलब ? रुपये दस दिये तो थे प्यारे-मोहनजीने ?

रमा—क्या लड़की पसन्द करके तुम अपनी शादी पक्की नहीं कर आये, बोलो, क्या तुमने यह कहा था कि मेरी शादी हो चुकी है ? नहीं, मैं तो जानती हूँ तुम्हारी आदत।

प्रकाश—पर यह सब तुम्हें कैसे मालूम ?

रमा—लो यह ख़त पढ़ो। सगाईका ख़त आया है लड़कीके भाई का।

प्रकाश—क्या देखूँ····

रमा—लो-लो पढ़ो ख़ूब पढ़ो। ख़ूब शादी रचाओ।

प्रकाश—हूँ तो यह हरकत थी प्यारेमोहनजी की····ओफ् ओ बलाका नीच आदमी है। रमा, सच कहता हूँ इस किरनकी शादी श्यामूसे तय करनेके लिए प्यारेमोहन लड़कीके भाईके घर दावतमें मुझे ले गये थे। लड़की भी देखी, खाना भी खाया, रुपये भी लिये, पर सब श्यामूके लिए। रमा मेरी तरफ़ देखो, क्या तुम्हें विश्वास है कि मैं ऐसी नीचता कर सकता हूँ। रमा, लाओ मुझे दो वह खत। लो····लो····यह लो····यह है मेरी शादीका पैग़ाम····

रमा—सच, क्या यह सच है?

प्रकाश—रमा, आज तो मेरी ज़िन्दगीमें सब कुछ झूठ हो गया। लानत है ऐसे सड़े-गले रीति-रिवाजोंपर जो आदमीको आदमी नहीं रहने देते, जो शादीको एक दकियानूसी स्वांग बना देते हैं, बरातको फैन्सी ड्रेसका शो, दूल्हाको बजरबट्टू और बरातियोंको घनचक्कर। आजसे मैं कभी बरातमें नहीं जाऊँगा।

रमा—[**मुसकराकर**] अब तो तुम्हें मैं भी कभी नहीं जाने दूँगी।

[दोनों हँसते हैं। पटाक्षेप]

ला
उ
ड
स्पी
क
र

•

: व्यंग्य :

[शहरकी एक मुख्य सड़कपर एक मध्यवर्गीय गृहस्थका दुमंज़िला घर । मुहल्लेमें कई मकानोंसे ऊँचे-ऊँचे बाजे, रेडियो, ग्रामोफ़ोन, शादी-विवाहके चीख़ते लाउडस्पीकर, स्पीचें, मोटरोंकी आवाज़ें, रेलकी सीटी, कीर्तन, संगीत सीखनेकी आवाज़ें बराबर अलग दूरियोंपर आजाती हैं]

[**घरमें नीचेसे चिल्लाकर**] अरे, कहाँ मर गया ? अभी तक तुझसे बिस्तरे ही नहीं हुए ?

नौकर—[**ऊपरसे चिल्लाकर**] कर तो रहा हूँ, बीबीजी !

स्वरूप०—[**चिल्लाकर**] अपना सिर कर रहा है ! यहाँ तब तक सब्ज़ी जल जायेगी ! [**अपनेहीसे**] सुधाको कपड़े पहनाऊँ या सब्ज़ी देखूँ ? अच्छे बहरे नौकरोंसे पाला पड़ा है । इनसे कोई दूसरा नौकर ही नहीं ढूँढ़ा जाता । [**चिल्लाकर**] मैं कहती हूँ तीन बिस्तरे क्या रातभरमें लगायेगा ?

नौकर—[**चिल्लाकर**] हाँ बीबीजी !

[**सुधाके रोनेकी आवाज़**]

स्वरूप०—हाँ बीबीजी, तेरा सिर ! [**सुधासे**] सुधा, क्या हो गया है तुझे ? स्वेटर पहिन ले डायन, सर्दी लग जायेगी !

सुधा—[**रोते हुए**] नहीं पहनती, चुभता है !

स्वरूप०—नहीं पहनती, क्यों ?

सुधा—चु—भ—ता—है !

स्वरूप०—नहीं चुभता ! पहन ! नहीं पहनेगी तो ले—[**चांटेकी आवाज़—मोटे गलेसे रोनेकी आवाज़**]—और गला फाड़ ! मुझे पड़ोसिनकी शादीमें जाना है और तू स्वेटर नहीं पहनेगी ? [**फिर**

नौकरसे] हद हो गई ! अरे बुद्धूके बच्चे, नीचे उतर आ। सब्ज़ी जल रही है ।

नौकर—हाँ बीबीजी, अभी दो बिस्तरे और लगाने हैं ।

[लाउडस्पीकर, लेक्चर, ग्रामोफ़ोन, रेडियोकी आवाज़ोंके साथ बच्चीके रोनेकी आवाज़ चलती रहती है ।]

स्वरूप०—तो अबतक तू एक बिस्तर ही लगा पाया है ? लीचड़ कहींका ! ठहर, तुझे मैं आकर देखती हूँ **[सुधासे]** मैं कह रही हूँ, स्वेटर पहन ले सुधा !

[सुधा फिर ज़ोरसे रोने लगती है]

नहीं मानती तो ले, तुझे यहीं छोड़ जाती हूँ। ख़ूब रो गला फाड़के ऊपर इस बुद्धूके बच्चेको देखूँ ! **[धम-धमकी आवाज़, और गिलास ज़ोरसे गिरनेकी आवाज़]**

नौकर०—हाँ बीबीजी, मुझे बुलाया ?

स्वरूप०—**[पास आती हुई]** हाँ बीबीजी ! गिलास ज़ोरसे गिरे तो भी हाँ बीबीजी ! **[पास आकर ज़ोरसे]** हर बातपर जवाब फ़ौरन हाज़िर है 'हाँ, बीबीजी !' काम-धाम कुछ नहीं ! **[ठहरकर]** यह तेरे दो बिस्तरे रहे हैं और पहिलेकी अभी चादर ही नहीं बिछाई ! क्यों, बुद्धू ! ठहर अभी कहती हूँ उनसे ! **[दरवाज़ा ज़ोरसे बन्द होनेकी आवाज़]** यह अन्दरवाले कमरेका दरवाज़ा किसने बन्द किया है ? **[चिल्लाकर]** कौन है वहाँ कमरेमें, सुनना !

नौकर०—हाँ, बीबीजी ।

स्वरूप०—अरे कमरेमें कौन है, सुनता है ?

नौकर०—बाबूजी हैं !

स्वरूप०—अच्छा ठहर, अभी बताती हूँ तुझे ! **[दरवाज़ा पीटकर]** मैंने कहा, दरवाज़ा क्यों बन्द कर रखा है ? **[ठहरकर]** सुन रहे

हो ? [**ठहरकर किवाड़ पीटते हुए**] मैं कहती हूँ क्या क़ानोंमें रूई ठूँस रखी है ? [**खिड़की बन्द होनेकी आवाज़**] यह क्या खटपट कर रहे हो ? ज़रा देखो अपने प्यारे नौकरकी करतूत ! [**पीछे लड़की रोती आती है**] सुधा, तू चुप नहीं रहेगी ? चल यहाँसे । [**दरवाज़ा पीटकर**] खोलते हो कि नहीं दरवाजा ?

[**पृष्ठभूमिमें लाउडस्पीकर, रेडियो, ग्रामोफ़ोन, रेलकी आवाज़, गाना, कीर्तन और सबके ऊपर लड़कीका रोना सुनाई देता है**]

बात क्या है, किवाड़ ही नहीं खोलते ! अरे तुझसे उन्होंने कुछ कहा था, बुद्धू ?

नौकर०—हाँ, बीबीजी !

स्वरूप०—क्या कहा था ?

नौकर०—जी, बीबीजी ।

स्वरूप०—जी बीबीजीके बच्चे ! [**चिल्लाकर**] तुझसे कुछ कहा था उन्होंने ?

नौकर०—जी, हाँ-हाँ । कहा था कि सब तैयारी हो गयी है । बरात आने वाली है । आप जल्दी आ जायँ ।

स्वरूप०—अरे उल्लू, किसकी बात कह रहा है ?

नौकर०—बराबर वाले बाबूजीने कहा था । उनके घर शादी है न, बीबीजी ?

स्वरूप०—मर तू शादीमें । बराबर वाले बाबूजीने नहीं अपने बाबूजीने कुछ कहा था तुझसे ।

नौकर०—हाँ-हाँ, अपने बाबूजी कह रहे थे कि हम काम कर रहे हैं । कोई आये तो कह देना 'नहीं हैं' । सरकार, आप सब तो वहीं दावत खायेंगे । आज तो फिर मेरेको भी वहाँ····बहुत दिनसे दावत नहीं खाई ।

स्वरूप०—हाँ, तुझे तो खिलाना ही चाहिए । मैं दावतकी नहीं पूछती ! बाबूजीने तुझसे कुछ कहा था, वह पूछती हूँ ।

[नीचेसे आवाज़ आती है, दयाल साहब !]

स्वरूप०—जाने कौन आवाज़ दे रहा है। [**दरवाज़ा पीटकर**] देखना, तुम्हें कोई बुला रहा है।....दरवाज़ा खोलो। [**नौकरसे**] बुद्धू, तू नीचे जाकर देख....जा जल्दी।

नौकर०—हाँ, बीबीजी।

स्वरूप०—[**चिल्लाकर**] अरे, जल्दी जा नीचे।

नौकर०—[**खुश होकर**] मैं जल्दी जाकर पहिले दावत खा आऊँ, बीबीजी ?

स्वरूप०—दावतके सगे, नीचे जाके देख कोई बाबूजीको बुला रहा है। क्या कहा था बाबूजीने तुझसे।

नौकर०—[**ऊँचे स्वरमें**] कह रहे थे कोई आये तो कह देना 'नहीं हैं'।

स्वरूप०—अरे चुप, बदतमीज़। जाकर कह दे कि बाबूजी इस वक़्त घरपर नहीं हैं।

आवाज़ [**नीचेसे**] अच्छा, ठीक है। सुन लिया, नौकर भेजनेकी अब ज़रूरत नहीं है। उनसे सिर्फ़ इतना कह दीजिए कि बरात आ रही है, अगवानीमें शामिल ज़रूर हों।

स्वरूप०—[**आगे बढ़कर**] बुद्धू, तू बस एकदम...क्या करूँ तेरा, गधे ! इतनी बेइज्ज़ती करा दी।....और आँख फाड़कर देख रहा है !... राकेश बाबूने सब सुन लिया, बेवकूफ़ कहीं के।....राकेश बाबू मनमें क्या कहते होंगे !....चल जा नीचे, सब्जी देख जलकर ख़ाक हो गई होगी अब तक !....बेशरम, देखता क्या है ? [**चिल्लाकर**] नीचे सब्ज़ी देख आ !

नौकर०—[**रोता-सा**] जी, बीबीजी।

स्वरूप०—[**दरवाज़ा पीटकर**] मैं कहती हूँ इतनी बातें हो गईं तुम भीतर क्या कर रहे हो ? [**दरवाज़ा पीटकर**] खोलते हो या मैं दरवाज़ा तुड़वा दूँ ? हद हो गई, क्या सो रहे हो ?....मैंने कहा, क्या सो

रहे हो ?····बरातकी अगवानीके लिए राकेश बाबू बुलाने आये थे। दरवाज़ा खोलो।

सुधा—[**हिचकियाँ**] पा···पा···क···हाँ···ग···ये, माँ ?

स्वरूप—अरी, तू, चुप रह। [**नरम पड़कर**] पापाने भीतरसे कमरा बंद कर रखा है। सुनते ही नहीं।

सुधा—क्यों···बन्द···कर···रखा है···माँ ? [**हिचकियाँ**]

स्वरूप—चुप नहीं रहेगी ?····अच्छा, यह ठीक है।····सुधा, तू बुला।

सुधा—[**बुलाते हुए, हाथोंसे दरवाजा पीटती है**] पापा····[**ज़रा ज़ोरसे**] दरवाज़ा खोलो। [**ठहरकर**] नहीं खोलते, माँ।

स्वरूप—ज़रा ज़ोरसे बुला।

सुधा—माँ, मैं ग्रामोफोनका भोंपू लेकर बुलाऊँ ?

स्वरूप—नहीं-नहीं। [**ठहरकर**] अच्छा, ठीक है····बुला ले।

सुधा—[**भोंपूसे**] पापा, दरवाज़ा खोलो। पापा····ऐ····[**दरवाजा पीटती है। दरवाजा खुलनेकी आवाज, और साथ ही भरभराहटकी गूँज**] पापा, दरवाज़ा खोलो। [**खुलता है**]····पापा तुम क्या कर रहे थे, पापा ?

स्वरूप—मैं कहती हूँ तुम्हें क्या हो गया है ? दरवाज़ा बन्द करके बैठे थे। दुनियाँ बुला-बुलाकर थक गई। घर चाहे जहन्नुममें चला जाय। यह नहीं कि ज़रा नौकरको ही देख लेते।

सुधा—पापा।

स्वरूप—मैं कहती हूँ बोलते क्यों नहीं ?····इस कमबख्त बुद्धूके बच्चेने सारी इज्ज़त मिट्टीमें मिला दी। राकेश बाबू बुलाने आये थे, पता है उनसे क्या कह दिया ?····तुम बोलते क्यों नहीं हो जी ?

दयाल—जी !

स्वरूप—जीके क्या मानी ?····तुम वहाँ क्या कर रहे थे ?····पसीना तो देखो। कमीज़ तर-बतर है। बरातके लिए न तैयारी, न कुछ।

मैं क्या-क्या करूँ ? तुमसे यह भी नहीं होता कि कमसे कम बिस्तर ही····मैं कहती हूँ बोलते क्यों नहीं ?

[**बरातका बैण्ड सुनायी देता है**]

दयाल०—मेरे ही बोलनेकी कुछ ज़रूरत रह गई है, स्वरूप ? यह दुनिया-भरके लाउडस्पीकर, शादीमें बजते रिकार्ड, ग्रामोफोन, रेलगाड़ीकी सीटियाँ, गाने, स्पीचें, भजन, कीर्तन, अभिनन्दन-भाषण, बैण्ड बाजे, बच्चोंकी चिल्ल-पों, बुलानेवालोंकी आवाज़ें, नौकरकी चीख़-चिल्लाहट····और सबके ऊपर तुम्हारी आवाज़····वल्लाह, क्या आवाज़ पाई है। यह भी किसी लाउडस्पीकरसे कम है ?

स्वरूप—देखोजी, तुम मुझे हर बातमें घसीट लाते हो। ग़लती किसीकी, और तोहमत मेरे सिर। मैं ही बुरी हूँ।····कभी मेरे कामका बखान, कभी मेरी आवाज़का।

दयाल०—अब तुम्हीं देख लो न, ज़रा-सी बात कही और तुमने अपना छत्तीस इंची रिकार्ड छेड़ दिया। मैं तो इस सारी तूफ़ाने-बद-तमीज़ीकी बात कर रहा था।

स्वरूप—तो तूफ़ान किसने उठा रखा है, मैंने या तुम्हारे इस लाड़ले नौकरने ? क्यों नहीं इस नौकरको बदल देते जिससे सारा झगड़ा ही मिट जाय। आप तो कमरा बन्द करके बैठ जाते हैं—कानोंपर जूँ भी नहीं रेंगती। चाहे किसीकी चिल्ला-चिल्लाकर जान निकल जाय।

दयाल०—यही तो मैं भी कह रहा था स्वरूप, कि आपको जो यह चिल्लाहटकी ट्रेनिंग मिली है····पता नहीं कहाँसे और कबसे। वह····वह····क्या कह रहा था मैं ? दिमाग़ ही ख़राब हो गया है····हाँ, शायद बचपनसे ही। उस ट्रेनिंगने मेरे दिमाग़को ऐसा खोखला कर दिया है जैसे चूहा बिलको कर देता है।

स्वरूप०—अब लगे मेरी ट्रेनिंग और मेरे घरका बखान करने। मुझे तो यह ट्रेनिंग मिली है कि मैं मर-खपकर तुम्हारा घर चलाऊँ, और तुम शोर-तूफ़ानसे दूर आरामसे बैठकर बस सिर्फ़ लिखते रहो।.... आपकी यह कौन-सी ट्रेनिंग है कि एक ज़रा सलीक़ेका नौकर नहीं लाया जाता ? छै महीनेसे कह रही हूँ।

दयाल०—क्या अच्छा हिसाब लगाना आता है तुम्हें। अभी बुद्धूको आये छै महीने हो गये। क्यों ? जूनसे ही तो रखा उसे ! जूनसे अब तक छै महीने होते होंगे ?

स्वरूप०—क्यों झूठ बोलते हो ! जूनमें कब रखा था ?

दयाल०—तो तुम्हीं बता दो कबसे रखा था।

स्वरूप०—मैं कोई हाज़िरी-रजिस्टर रखती हूँ जो मुझे तारीख़ याद हो ! मुझे तो यह लगता है जैसे ज़िन्दगीभरसे यही नौकर इस घरमें है, और मरनेके बाद भी रहेगा।....क्या मालूम कब आया था ?

दयाल०—कुछ तो कहो। तारीख़ न सही, महीना ही याद करके बता दो।

स्वरूप०—तुम ख़ामख़्वाह मुझे बातोंमें उलझाते हो....और यह बुद्धू मुँह बाये खड़ा है। न चौकेका काम करता है, और न बिस्तरे लगाता है। सुने तब न काम करे ? मैं तो कहती हूँ यह ज़रूर सुनता होगा। सिर्फ़ काम न करना पड़े इसलिए बनता है।

दयाल०—मैं पूछता हूँ यह कब आया था, बताती क्यों नहीं ?

स्वरूप०—फिर वही ? अच्छा बाबा....[सोचकर] अच्छा, यह कौन-सा महीना है ?

दयाल०—तुम्हें यह भी नहीं मालूम ?

स्वरूप०—होगा कोई—इसी क़िस्सेमें महीने निकले जाते हैं। क्या याद रहती है ? जुलाई होगी, नहीं तो सितम्बर होगा।

दयाल०—और अगस्त बीचमें कहाँ चला गया ? बुद्धूके कानमें ?

स्वरूप०—होगा अगस्त बीचमें, मुझे क्या मतलब ? बेकारकी बातें तुम्हें बहुत आती हैं। ज़रूरी बात जो है उसे बस यों ही उड़ा देते हो।

दयाल०—अच्छा, यह बेकारकी बात है ? जुलाईके बाद सितम्बर—सारा कैलेण्डर ही बदल दिया तुमने, यह बेकारकी बात है ?

स्वरूप०—तुमको हो क्या गया है, मैं कहती हूँ। जुलाईके बाद सितम्बर आ जाय, या अगस्तके बाद जून। यह कोई बड़े कामकी बात हुई ? बेकार उल्लू बनाना बहुत आता है तुम्हें। नौकरको बदलनेकी बात कहती हूँ तो जुलाईके बाद दिसम्बर आता है या सितम्बर, यह बताने लगते हैं।

दयाल०—तो जो बात अब हुज़ूर कहें वह कहूँ।

स्वरूप०—मुझे तुम क्या समझते हो ? जैसे मेरी कुछ इज्ज़त ही नहीं। नौकरके सामने कभी लाउडस्पीकर कहते हो, कभी हुज़ूर। शरम भी नहीं आती।

दयाल०—पर जब नौकर बहरा है तो सुनेगा क्या ख़ाक। सामने कहूँ या बादमें।

स्वरूप०—तो तुमने इसीलिए बहरा नौकर रख छोड़ा है कि जो मर्ज़ी आये मुझसे कहो ! अब समझी मैं।

दयाल०—क्या ख़ाक समझीं।

स्वरूप०—धन्य हो महाराज, तुमसे तो बहस करना बेकार है। हर तरह अपनी ही बात रखते हो। [**बुद्धूकी तरफ़ घूरकर**] मैं कहती हूँ तू खड़ा-खड़ा क्या देख रहा है बुद्धू ? जा नीचे !...तुम मुझे यह बताओ कि कमरा बन्दकर क्या कर रहे थे ?

दयाल०—आपको मतलब ? झख मार रहा था।

स्वरूप०—[**मुँह चिढ़ाकर**] वाह-वाह ! बड़ा अच्छा काम कर रहे थे।

दयाल०—क्यों, इसमें क्या बुराई है ? यह तो बड़ा मज़ेदार काम है !

स्वरूप०—झख मारना ?

दयाल०—जी !···समझीं भी आप, कि बस यों ही कह दिया ? झख माने मछली ! बस वही मार रहा था।

स्वरूप०—कहाँ कमरेमें कोई तालाब था क्या, जो आप झख मार रहे थे ?

दयाल०—लिखते वक़्त तालाब तो क्या तालाबके परदादा महासागरकी भी कल्पना कर सकता था। और झख तो क्या झखकी पड़-पपड़दादी मगर-मच्छीको भी मार सकता था।

स्वरूप०—मेरा तो इतना दिमाग़ है नहीं जो तुमसे लड़ाऊँ। चिल्लाते-चिल्लाते वैसे ही खाली हो गया है। भगवान्‌के लिए इतना बता दो कि कर क्या रहे थे ! राकेश बाबूके यहाँ शादीमें नहीं जाना ?

दयाल०—शादीमें नहीं जाना, कोई मेरी हो रही है।

स्वरूप०—शादीकी ऐसी ही जीमें है तो और करा लो, मैं रोकती थोड़े ही हूँ।

दयाल०—[हँसके] ख़ैर मेरी तो रोज़ ही होती रहती है। घरमें हर वक़्त आवाज़ोंका लाउडस्पीकर चलता ही रहता है। भगवान्, इन लाउडस्पीकरोंने ज़िन्दगी हराम कर दी है। सिर फट गया है। रात-दिन चैन नहीं। रोज़ शादियाँ, रोज़ बारातें, रोज़ बच्चोंका जन्म-दिन, मुंडन, भजन, कीर्तन, लेक्चर, विज्ञापन—और भी ईश्वर जाने क्या-क्या। पता नहीं, लोगोंको बे-वजह शोर मचानेका भूत क्यों सवार हो गया है। दूसरोंको क्या जताना चाहते हैं। दो-दो बजे रात तक चारों तरफ़ चीख-चिल्लाहटका ख़ौफ़नाक तूफ़ान चढ़ा रहता है। घटोत्कचकी पैदावार है यह लाउडस्पीकर जाने किस शैतानकी ईजाद है ! दुनियापर रोक है, पर इनपर रोक नहीं ! वक़्त-बेवक़्त चारों तरफ़ बजते ही रहते हैं। कानके परदे फटे जा रहे हैं। बाहर लाउडस्पीकर, और [**साँस लेकर**] हमारे तो घरमें भी लाउडस्पीकर है—

स्वरूप०—देखो जी, मुझे लाउडस्पीकर न कहना ! मैं लाउडस्पीकर हूँ तो तुम···

दयाल०—बन्द घड़ी, जिसके दिमाग़की टिकटिक भी इन आवाज़ोंने बन्द कर दी है ।···और तुम किसी लाउडस्पीकरसे कम थोड़े ही हो। क्या आवाज़ पाई है आपने ! वल्लाह, क्या किसी लाउडस्पीकरसे कम है ?

स्वरूप०—यह तुम्हारा और तुम्हारे बहरे नौकरका क़सूर है। लेकिन तुम्हें यह सब आवाज़ें तो आती थीं, पर मेरे ही पुकारनेकी आवाज़ नही आई थी—क्यों ?

दयाल०—यह बात नहीं है स्वरूप, मुझे कोई आवाज़ नहीं आ रही थी, क्योंकि कमरेके दरवाज़े, खिड़कियाँ, रोशनदान बन्द करके अन्दर—जानती हो क्या···ठहरो [**अन्दर जाकर एक स्टोव लाता है**] यानी स्टोव 'फुल आन' करके रखा था और इसकी एकसार भर्राहटमें घर-बाहरकी सब आवाज़ें, लाउडस्पीकर वग़ैरह-वग़ैरह ख़त्म और भीतर एक-स्वरके साथ काम !···कहो कैसी रही ?

स्वरूप०—क्या ख़ाक रही !···अगर कहीं आग लग जाती तो। [**इतनेमें बुद्धू पतीली लाता है उसे देखकर**] अरे, यह पतीली क्यों लेकर आया है ? तुझसे पतीली किसने लानेको कहा था ?

नौकर—हम जानी, साहेब चाय उबलिहैं !

दयाल०—इसमें चाय तो नहीं, तेरा सर उबालेंगे।

[**बुद्धू डरकर भाग जाता है। छोटी बच्ची खिलखिलाकर हँसने लगती है**]

सं

व

त्स

र

•

: ऐतिहासिक फेन्टेसी :

दृश्य १

[उज्जयिनीसे कुछ दूर]

[घनी अँधेरी रातका सन्नाटा। चारों ओर भीषण निस्तब्धता है। तारोंकी हल्की छायाके नीचे कोई चलता जाता है। अदृश्य। केवल पैरोंकी चाप निरन्तर आ रही है। बहुत दूर एक स्वर गूँजता रहता है, फिर विलीन हो जाता है।]

युगदेवी—[**थके हुए टूटे स्वरमें**] अब आगे न चल सकूँगी परदेसी। तुम्हारी कहानी शेष है और मेरी मंज़िल आ पहुँची। चिर वियोगके इन बुझते निमिषोंमें केवल दो घड़ी।

संवत्—[**साँस भरकर**] मैं कैसे कहूँ युगदेवी! विश्रामका वरदान मुझे नहीं मिला। जन्म और मरणसे ऊपर मैं एक दूरके स्वरकी डोर हूँ। मेरा शुरूका छोर है, अन्तका नहीं।

युगदेवी—न जाने किस मन्त्रबलसे मैं तुम्हारे पीछे छायाकी भाँति चली आई, मेरे कठोर। पर तुमने आँख भरकर भी न देखा। क्या तुम्हारे हृदयमें कोई कम्पन नहीं होता?

संवत्—देवी, मेरे हृदयकी सीमामें अनगिनती कम्पन उठे और मिट गये। अब अपनी पूजासे उसे और पाषाण न बनाओ। अपना प्यार लौटा लो देवी। मैं उसे न सँभाल सकूँगा।

युगदेवी—इतनी दूर आकर अब लौटना असम्भव है। मैं तुम्हारे साथ न चल चकूँगी तो तुम्हारी बीती हुई पदचापोंकी भाँति मिट जाऊँगी।

संवत्—मुझे इन बन्धनोंमें न कसो। मेरा संसार स्वयं ही स्मृतिके खण्डहरोंसे बना है। उसके निर्माणका प्रयत्न मत करो देवी, क्योंकि वह निर्माण भी खण्डहर ही होगा।

युगदेवी—पर जो स्वयं मिट रहा है उसमें निर्माणकी शक्ति कहाँ है, प्रवासी ?

संवत्—जो स्वयं मिटता है उसीमें निर्माणकी शक्ति होती है, देवी। किन्तु वसन्त और पतझरकी सीमाओंमें मैं कहीं भी न ठहर सका। कहीं न ठहर सकूँगा। मेरी विवशता—मुझे मत रोको !

युगदेवी—बन्धनहीन, मैं तुम्हें न समझ सकी। और कुछ नहीं चाहती। केवल एक अन्तिम विनय है—

संवत्—कहो, देवी !

युगदेवी—[**साँस भरकर**] तुम मुझसे इतनी दूर क्यों रहे, पथिक। और अब वियोगका कोई स्मृति-चिह्न भी न दोगे ?

संवत्—मैं स्मृति-चिह्न क्या दूँ, जब मैं स्वयं एक स्मृति-चिह्न हूँ। मेरी आँखोंसे देखो—वर्षोंकी डोरीपर चलनेवाले वे धुँधले चित्र। जो तुम्हें मिट्टी है मैं उसमें एक बीता हुआ फूल देखता हूँ, जो तुम्हें पाषाण है उसमें मुझे मोती दिखता रहा है। मैं स्वयं खण्डहर हूँ, किन्तु मेरी आँखोंमें महलोंकी छाया अब भी शेष है। आज मुझे अपने उन्हीं ध्वस्त राजमहलोंमें लौटना है देवी !

युगदेवी—मुझे भी वहाँ ले चलो प्रवासी। [**हाँफकर**] किन्तु मेरी मंज़िल—

संवत्—युगदेवी, तुम लौट जाओ। मेरे पथका कोई अन्त नहीं। यह सब तुम भूल जाओ। किन्तु मैं—

युगदेवी—तुम ? तुम क्या ?

संवत्—मैं कभी कुछ न भूल सकूँगा। महल और खण्डहर, मन्दिर और समाधि, मोती और पत्थर मुझे सब याद रहेंगे। मुझपर विश्वास करो।

युगदेवी—कुछ न भूल सकोगे। मुझे भी न भूल सकोगे। [**साँस भरकर**] यदि यही मेरे जीवनका अन्तिम क्षण होता।

संवत्—युगदेवी, मैं उस सीमापर आ चुका हूँ, जहाँ आँसू और हँसी दोनों एक हो गये हैं। मुझमें जब दो विभिन्न ध्रुव रेखाएँ मिल चुकी हैं तो केवल एकका अस्तित्व असम्भव है।

युगदेवी—इन क्षणोंमें और ग्रन्थियाँ मत डालो, प्रवासी !

संवत्—तुम मुझे भावना रहित समझोगी। मेरी इस्पाती कठोरता तुम्हें धोखेमें डाल सकती है। लेकिन देवी। यह सब नया है। मोती और सोनेका देश मैं बहुत दूर छोड़ आया हूँ।

युगदेवी—[**फीकी हँसी**] मोती और सोना !

संवत्—मुझे अन्यथा मत समझो युगदेवी ! अब विदा दो। उन बातोंका समय अब नहीं रहा।

युगदेवी—और मेरा भी समय आ गया प्रवासी। किन्तु, तुम कहाँ [**साँसें भर रही हैं**] तुम कहाँ जा रहे हो। तुमने कहा था 'कालकी अमरताका रहस्य मैं तुम्हें बताऊँगा।' तुम्हारी बात शेष है और अब—अब [**साँसें टूट-सी रही हैं।**] मुझे समय नहीं।

संवत्—ऐसा मत सोचो। वह कथा फिर समाप्त हो जायगी।

युगदेवी—मेरे समाप्त होनेके पश्चात्।

संवत्—नहीं-नहीं। देवी, धैर्य रखना। [**साँसोंकी आवाज, कुछ देर निस्तब्धता।**]

संवत्—युगदेवी ! [**विराम**] युगदेवी !!

युगदेवी—हाँ, कहते जाओ। रुको नहीं।

संवत्—तुम्हें मूर्च्छा ! नहीं, अब ठीक है।

युगदेवी—[**धीरेसे**] हाँ, अब ठीक है। तुम्हें ज्ञात होगा कि दीपककी लौ कैसे एकदम तेज़ हो जाती है। बताओ प्रवासी, कहीं मेरी आत्मा प्यासी ही न रह जाय।

संवत्—तुम देखोगी, सुनोगी ?

युगदेवी—[**मौन**]

संवत्—देख सकोगी ?

युगदेवी—हाँ, देख सकूँगी ।

संवत्—तो देखो, इस साँवली रातमें तारोंकी हलकी छाँहके नीचे दूर महाकालके मन्दिरकी चोटी । आसमानमें एक धुँधली रेखा-सी । देखा ? खंडहरोंमेंसे ऊपर उठते अवन्तिकाके राजमहल । और वह अँधेरेकी बाहोंमेंसे निकलते रंग-भवन ।

[**गीतकी हलकी गूँज आती है ।**]

दूरीके वे कोमल गीत ।····सफ़ेद फूलोंपर हवाकी लहरसे ।

[**नृत्यकी गूँज**]

यह उर्वशीके रंगीन चरणोंकी गूँज है । [**विराम**] तुम चकित हो । किन्तु मैं इसी रातकी सहस्र वर्षोंसे राह देख रहा हूँ । हज़ार वर्षकी दो मंज़िलें पार करनेपर यह रात आई है ।

युगदेवी—[**साँस भरती है**]

संवत्—हाँ, यह स्वप्न नहीं, सत्य है । इन खण्डहरोंपरसे आज धुँधले वर्षोंके कुहरेका पर्दा उठ रहा है । उठता जा रहा है । वर्तमान अन्धकारकी भाँति अलग सिमटता जाता है और आजकी उज्जयिनी युगों पूर्वकी अवन्तिका बन रही है । वही राजमहल, वही वैभव, वही नवरत्न । आजकी रात वह सारा युग फिरसे लौट आया है । दो सहस्र वर्षोंकी दूरीसे विक्रमादित्य और स्वर्णश्रीका वह युग । [**विराम**]

देखो युग देवी । उधर देखो । यह घड़ी फिर न लौटेगी [**विराम**] किन्तु—यह क्या । तुम सो रही हो । सो गईं ? युगदेवी !

[**यवनिका**]

दृश्य २

[अवन्तिकाके राजमहल। क्षिप्रा तटपर दूर तक चले गये मधुमास लदे उद्यानमें विक्रम और कालिदास। दूर महलोंसे संगीत ध्वनि।]

कालिदास—आज इन कमल-नयनोंके नीचे उदासीकी कैसी छाया है ? सम्राट् ! मालवकी यह चाँदनीभरी मीठी रात और यह उदासी ?

विक्रम—तुम कवि हो, कालिदास। तुम्हें मिठासका लोक मिल चुका है। तुम अपनेमें पूर्ण हो। किन्तु मैं—एक अपूर्ण अधूरी कहानी हूँ, कहानी ही बनकर रह जाऊँगा।

कालिदास—नहीं सम्राट् ! जीवनकी सुन्दरता इसी अधूरेपन ही में तो है।

विक्रम—किन्तु कालिदास, मेरे जीवनकी अपूर्णता। इसका कुछ और ही रूप है। कर्मकी कठोर भूमि और स्वप्न। कवि, तुम्हें कैसे समझाऊँ ? तुम तो मनके सारे रंग पहिचानते हो।

कालिदास—स्वप्नोंका सत्य होना तो आपही से संभव हुआ है सम्राट् ! आपके समस्त स्वप्न साकार होकर उसी भाँति उतरे हैं जैसे इस दूर तक फैली चाँदनीकी श्वेत छाया श्याम धरापर उतर आई है।

विक्रम—यदि कहीं मैं भी इस दूर तक फैली चाँदनीकी भाँति होता। मेरे संचित स्वप्नोंसे अनन्त विनाश खेल रहा है और देशसे शक आक्रमणकारी। दोनों ही मेरी अपूर्णताके अभिशप्त प्रतिबिम्ब हैं। मैं सोचता हूँ कवि, यदि यह जीवन कहानी ही रहेगा तो फिर पूर्ण कहानी क्यों नहीं है ?

कालिदास—आक्रमणकारी ! वह आपकी प्रतिक्षण निकट आती पूर्णतामें बाधक नहीं हो सकते। सम्राट्, मैं वर्तमानके दर्पणमें भविष्यकी रूप-रेखाएँ देख रहा हूँ। केवल वर्तमानका प्रतिबिम्ब नहीं।

विक्रम—तुम कहोगे यह सुख, यह वैभव, यह चन्दन-गन्ध-भरे महल, तुम कहोगे यह चाँदनी रात और दूरीका रंगीन गीत। तुम कहोगे यह साम्राज्यपर दोनों आक्रमणकी श्याम छायासे घिर रहे हैं। भविष्य-की अनन्त झंझाके पहिलेकी श्याम छाया—

कालिदास—झंझाके पहिलेकी छाया। उस छायासे कोई भय नहीं सम्राट्। आपके प्रतापसूर्यके सम्मुख शकोंकी छायाका कोई अस्तित्व नहीं। यह उदासी गीतोंसे धुल जायगी। उर्वशीको इसी कुंजमें बुलवाऊँ।

विक्रम—रहने दो कवि। इन गीतोंसे, इस रस-रंगसे क्या होगा? यह अमिट नहीं। पलभरमें इनकी गूँज अनजानी दिशामें जाकर खो जायगी। मैं इन नाशवान् बातोंसे मन न बहला सकूँगा।

कालिदास—किन्तु यह गीत मिटकर भी अमर रहेंगे। जब तक चाँदकी छाँहमें कुमुद फूलेंगे, जब तक कमलपुष्प उषाके चुम्बनसे मुसकरा उठेगें, जब तक नयन नयनोंसे उलझेंगे, तब तक कला भी रहेगी। कलाका अन्त सृष्टिके अन्तपर होगा।

विक्रम—तुम्हारा विचार है कवि, यह नाशवान् नहीं। क्या यह सम्भव नहीं कि समयका धुँधला तुषार इन्हें ढक ले, जैसे खण्डहरोंको काई। और तब आजसे सहस्रों वर्षों बाद किसीको स्मरण भी न रहे कि यह वैभवका साम्राज्य भी कभी था।

कालिदास—वैभव और प्रेम का—

विक्रम—कविके हृदयमें केवल प्यारके ही चित्र बनते हैं। मिलनमें मुख चाँद बन जाता है—मणि दीपकोंके प्रकाशमें कपोलोंपर लाजकी लाली छिपानेके लिए अबीर फेंकी जाती है। और विरहमें आँखों-के नीचे दूरके श्यामल-वदन मेघदूतकी छाया उतर आती है। कविराज! तुम्हारे ये गीत अमर-स्मारक हैं। कवि; मैं तुमसे ईर्ष्या करता हूँ।

कालिदास—ईर्ष्या ? [हँसकर] और आपके चिरन्तन-स्मारक—यश, वैभव, विजय, साम्राज्य। अपनी सीमापर पहुँचकर यह साकार हो उठे हैं। और ईर्ष्या ?

विक्रम—कवि, प्रत्येक युग, प्रत्येक देशमें ऐसे स्मारक बनते रहे हैं। आज उनका प्रकाश कहाँ है ? ढलते हुए पीत चन्द्रकी भाँति वह भी ढल चुका है। और यह फैला हुआ साम्राज्य ? कालिदास न जाने अपने अंचलमें यह कितने खण्डहर, कितने पत्थरमें ढेर लिये पड़ा है। एक ओर सर्वभक्षी महाकाल है, दूसरी ओर विनाशकारी मानव—आज दोनोंके बीच इन स्मारकोंकी आभा श्यामल होती जाती है।

कालिदास—सम्राट्, इन्हें प्रलयकी छाया भी नहीं ढँक सकेगी, मानवी शक्तियाँ तो बहुत छुद्र हैं।

विक्रम—मेरे मनमें शान्ति नहीं, कालिदास। मुझे इन बातोंसे सन्तोष नहीं होता। परिवर्तनका यही सत्य रहा है, कवि। कितने सम्राट् आये और चले गये। कितने राज्य बने और बिगड़े। आज सबका नाम एक मृत-इतिहास है। जीवित-शक्ति नहीं। अपनी-अपनी सभ्यता, कला और वैभव लिये सभी बीते दिनोंके अन्धकारमें समा गये, खो गये। हमारे लिए उनका कोई अस्तित्व नहीं। शताब्दियोंकी शताब्दियाँ विस्मरणके लिए इसी अजगरने निगल लीं। उनका क्या पता है, क्या चिह्न है, बताओ कवि, वे कहाँ हैं ?

कालिदास—वे कहाँ हैं ? सम्राट् यह मेरा आपका प्रश्न नहीं, सृष्टिका प्रश्न है। किन्तु फिर भी मोती और पत्थरका अमर भेद तो रहेगा ही।

विक्रम—पत्थर और मोती। कवि, तुम भूल रहे हो कि पत्थरका इतिहास मोतीसे अधिक महान् है। मुझे तो ऐसा लगता है कि जैसे हर पत्थरके नीचे एक भूली हुई कहानी दबी पड़ी है। उसे कोई नहीं

समझता। एक खोई हुई आवाज़ सिमट गई है उसे कोई नहीं सुन सकता। कवि, मैं एक ऐसे ही स्वरको ढूँढ़ रहा हूँ जो मेरे पत्थरोंकी आवाज़को मौन न होने दे।

कालिदास—वह स्वर आपको बहुत पूर्व प्राप्त हो चुका है, सम्राट्।

विक्रम—नहीं कालिदास, आज मेरे सम्मुख दो महान् प्रश्न हैं—एक भविष्यका, दूसरा वर्तमानका। एक मृत्युका, दूसरा जीवनका। एक कालसे परे अनन्त रक्षाका वरदान चाहता है, दूसरा बर्बर शक आततायियोंसे वर्तमान जीवन-रक्षाका दान।

कालिदास—आप दोनों ही वरदान दे रहे हैं सम्राट्।

विक्रम—और, और, [**साँस भरकर**] एक तीसरा भी प्रश्न है, कालिदास।

कालिदास—मुझे ज्ञात है।

विक्रम—किन्तु तुम्हें यह ज्ञात न होगा कवि, कि मेरी वह आराधना भी आज तक अपूर्ण है। स्वर्णश्री कहती है मेरा यह साम्राज्य, यह अवन्तिका, मेरा यह सभी कुछ नाशवान् है। ओह, मुझे यह पहिले क्यों न ज्ञात हुआ। और अब इस सीमापर आकर मैं लौट भी तो नहीं सकता।

कालिदास—हूँ, समझ गया।

विक्रम—[**उत्साहसे**] क्या समझे कवि ?

कालिदास—सब कुछ।

विक्रम—[**फिर निराश होकर**] किन्तु मेरी समझमें तो कुछ नहीं आया। कुछ भी नहीं। मैं उसकी पूजामें और क्या उतार लाऊँ, कवि।

कालिदास—आपकी उदासी बड़ी महान् है सम्राट्।

विक्रम—यदि मैं भी कवि होता····

कालिदास—तो ?

विक्रम—तो मैं पूर्णताके स्वप्नोंमें दर्शन कर लेता और गीतोंमें उतारकर अमर हो जाता। किन्तु [**साँस भरकर**] मेरा तो अभिशाप ही यह है कि केवल चित्रसे सन्तोष नहीं होता, साकार दर्शन भी चाहता हूँ। और मुझे वह चित्र तक न मिला।

कालिदास—सचमुच, आपकी उदासी बड़ी महान् है सम्राट्।

विक्रम—तुम्हारे ये शब्द अग्निमें घृत डालते हैं, कवि। मेरी आत्मा पंख-रहित पक्षीकी भाँति फड़फड़ाकर रह जाती है। उड़ना चाहती है उड़ नहीं पाती।

कालिदास—[**सोचते हुए**] चित्र और साकार दर्शन।

विक्रम—मुझसे कहो मैं खड्ग चलाकर बता सकता हूँ, किन्तु खड्ग चलानेकी कल्पना नहीं कर सकता। किन्तु कवि, तुम क्या सोच रहे हो?

[**दूरसे नक्कारोंकी आवाज़ वायुके एक झोंकेके साथ आती है, फिर खो जाती है।**]

कालिदास—यही सोच रहा था कि यदि आपको चित्र मिल जाय तो—

[**गीतकी गूँज आती है**] सम्राट् सुनिए। कितना मोहक स्वर है।

[**गीत निकट होता है**]

विक्रम—यह तो तुम्हारा गीत है कवि। वासन्ती गा रही है।

कालिदास—वासन्ती।

विक्रम—हाँ, स्वर्णश्रीकी सखी—चलो देखें कवि····

[**नक्कारोंकी ध्वनि फिर आती है**]

कालिदास—नहीं, आप ही देखें सम्राट्। मैं शीघ्र लौटूँगा।

[**गीत निकट आता है**]

लो पूरनता की छाँहों में—
फूली जीवन की कुसुम कली।
नित दूज चन्द्रसी लौ नवीन,
निष्कंप चरण, पथ अन्तहीन,

चिर साँझ-उषा के छोरों में—
रंगीन दीप की जोत जली।
ये दूर चली स्वर की डोरी,
युग की जिसने सीमा खोली,
वह गूँज नहीं मिट पायेगी,
जो जन्म-मरण के पार चली।

[गीत धीरे-धीरे समाप्त हो जाता है]

विक्रम—तुम, स्वर्णश्री।

श्री—हाँ, सम्राट्।

विक्रम—स्वर्णश्री [**रुककर**] स्वर्णश्री।

श्री—हाँ, सम्राट्।

विक्रम—मैं विवश हो गया हूँ, श्री। यह जीवन इसी भाँति समाप्त हो जायगा।

श्री—सम्राट्!

विक्रम—कैसे कहूँ—नहीं, कहना ही पड़ेगा—

श्री—[**मौन**]।

विक्रम—कहना ही पड़ेगा। तुम्हारी प्रतीक्षामें यह मन कमल—

श्री—सम्राट्।

विक्रम—नहीं-नहीं, आज मुझे मत रोको श्री। इस चाँदनी रातको देखो।

श्री—यह अमृत मेरे लिए विष है, सम्राट्।

विक्रम—विष ? ओह—

श्री—मैं कैसे समझाऊँ, कैसे—।

विक्रम—[**बात काटकर**] मैं आज तक तुम्हें न समझ सका, श्री—

श्री—[**साँस भरकर**] मेरा ही दुर्भाग्य है, महाराज।

विक्रम—मेरा विश्वास था, मैं तुम्हें समझ गया हूँ। किन्तु—

श्री—किन्तु सम्राट्।

विक्रम—आज तुमने वह अधिकार भी मुझसे छीन लिया। श्री, केवल इसी एक स्वप्नके सहारे जीवन चल रहा था। आज तुमने मेरा अन्तिम स्वप्न भी तोड़ दिया है।

श्री—ऐसा न कहिए महाराज।

विक्रम—कैसे न कहूँ श्री। मेरा एकाकी सन्तोष आज समाप्त हो गया है। समस्त महासागर न्योछावर करनेके बाद एक मोती था वह भी न रहा। अब कोई अवलम्ब नहीं।

श्री—मेरी वाणी जम रही है सम्राट्। मैं कैसे कहूँ—

विक्रम—और मेरा समस्त भावना-लोक आज जम गया है, श्री।

श्री—कैसे महाराज?

विक्रम—[**उँसास भरकर**] आज यह भी बताना पड़ेगा, पत्थर बनकर बताना पड़ेगा। तुम मुझे क्यों न पहिचान सकीं, स्वर्णश्री?

श्री—और आप मुझे क्यों न पहिचान सके, महाराज?

विक्रम—इतनी निर्दय न बनो, श्री।

श्री—निर्दय?

विक्रम—हाँ, निर्दय, निर्मम, कठोर। मेरी पूजाओंपर मत हँसो, श्री। उनकी अपूर्णताकी उपेक्षा न करो। क्योंकि अपूर्णताका वरदान उन्हें तुमसे मिला है।

श्री—मुझसे?

विक्रम—हाँ, तुमसे। तुम चाहती तो उन्हें पूर्ण बना देतीं। पर तुमने—[**निश्वास**]।

श्री—[**मौन**]।

विक्रम—मैं आज तक न जान सका मेरी पूजा कहाँ अधूरी है। यह साम्राज्य, यह वैभव, यह स्वरित सिंहासन, कला, नवरत्न, क्या तुम्हें ज्ञात नहीं यह किसकी पूजाके पुष्प थे?

श्री—किसकी पूजाके सम्राट्?

विक्रम—तुम्हारी, श्री, तुम्हारी पूजा के—

श्री—मेरी ?

विक्रम—हाँ, केवल तुम्हारी। किन्तु वह आरती पूर्ण न हो सकी। सजी हुई सूनी थालीकी भाँति रखी रही। दीपक जलते रहे, पुष्प मौन पड़े रहे। पर तुमने कभी न चाहा कि····

श्री— [**बात काटकर**] मैंने तो सदा चाहा कि [**लज्जित हो जाती है**]।

विक्रम—क्या चाहा श्री, शीघ्र बताओ।

श्री—[**मौन**]

विक्रम—बताओ श्री, तुमने क्या चाहा। इस अन्तिम सीढ़ीसे मुझे मत गिराओ।

श्री—[**मौन**]

विक्रम—तुम फिर मौन हो गयी। मन्दिरके पट न खुल सके। मेरे दो जगत्‌में संग्राम छिड़ा हुआ है, श्री। दोनों ही मुझसे सम्पूर्ण बलिदान माँग रहे हैं। और तुमने आज पाषाण-वेदी भी प्रस्तुत कर दी है। तो सुनो, मेरा यह अन्तिम निर्णय है। पुजारी आरती-दीप सँजो सकता है, तो बुझा भी सकता है। कल प्रभात तक यह महल, यह रंग-भवन, कला-मण्डप, नवरत्न सब समाप्त हो जायँगे। साम्राज्यका अन्त कर दिया जायगा। कलका प्रभात इस केशर-केतनको खण्डहरोंपर पड़ा पायगा—और मुझे शकोंसे लड़ते हुए युद्धक्षेत्रमें।

श्री—नहीं सम्राट्, नहीं। ऐसा कभी नहीं हो सकता। मैं ऐसा कभी न होने दूँगी।

विक्रम—क्यों ?

श्री—मैं बताऊँगी। अवश्य बताऊँगी। आज समय आ गया है।

विक्रम—समय चला गया है, श्री। तुमने अवसर खो दिया। और अब,

[रूखी हँसी हँसकर] अब विक्रमका प्रण रह गया है, स्वप्न कुमारी।

श्री—नहीं-नहीं। मैं अवश्य बतलाऊँगी। सम्राट्, मैंने चाहा था आप किसी भाँति....।

विक्रम—[**मौन**]

श्री—आप किसी भाँति अमर हो जायँ।

विक्रम—[**आश्चर्यमें आकर**] मैं अमर? अमर हो जाऊँ? क्या कह रही हो श्री? मैं अमर हो जाऊँ? [**साँस भरकर**] किन्तु यह कैसे सम्भव है? जीवनके बाद मृत्यु। मैं अमर! ओह!

श्री—मेरा यही स्वप्न है सम्राट्।

विक्रम—अमरता...[**हँसी**] श्री, यह वंचना है। क्रूर वंचना है। नहीं-नहीं, बलिदान, बलिदान। [**कालिदासका प्रवेश**] कवि, तुम लौट आये? सेनापति कहाँ हैं?

कालिदास—महाराज!

विक्रम—सेनापति कहाँ हैं कालिदास? मेरे स्वप्न मुझसे बलिदान चाहते हैं मेरा और मेरे साम्राज्यका। मैंने बलिदानका निश्चय कर लिया है, कालिदास! सेनापति कहाँ हैं?

कालिदास—[**आश्चर्य**] क्यों महाराज?

विक्रम—क्योंकि मैं अमर नहीं हो सकता।

कालिदास—नहीं सम्राट्, आप अमर हो जायँगे। शकोंपर अभी पूर्ण विजय प्राप्त हुई है। यह विजयका मुहूर्त आपकी चिर पूर्णताका मुहूर्त है। केवल आपकी....

विक्रम—मेरी?

कालिदास—हाँ, सम्राट्, वर्तमान और भविष्य दो जीवनकी पूर्णताका क्षण! आप इस क्षणको अमर कर दीजिए।

विक्रम—मेरी पूर्णता, मेरा समय। समय। कालिदास, स्वर्णश्री, मुझे अमरता मिल गयी, मैं अमर हो जाऊँगा। आजसे यह समय मेरे नामसे प्रारंभ हो····

[गीतकी गूँज आती है]

"ये दूर चली स्वरकी डोरी,
युगकी जिसने सीमा खोली,
ये दूर···················।"

[फिर विलीन हो जाती है]

[प्रथम दृश्यके आरम्भिक पदचाप छायामें चलते चले जाते हैं।]

पि

क

नि

क

•

: कॉमेडी :

[एक मध्यवर्गीय घरकी बैठक]

अजीत—[ख़ुद ही] पाँच बज गये और अब तक पता नहीं। हम लोग वक़्तकी क़दर करना तो जानते ही नहीं।

[नौकर चाय लाता है]

अच्छा, आपने चाय तैयार भी कर दी। मैं कहता हूँ कि....

नौकर—सरकार, पाँचही बजेका तो आडर दिया रहा—

अजीत—[बात काटकर] अच्छा-अच्छा, रख दे यहाँ। तुझसे बहस कौन करे। मैंने कहा था कि जब वह सब लोग यहाँ आ जायँ तब चाय लाना। अब ठंढी होगी कि नहीं।

नौकर—अउरका। ये बसंतकी हवा सोई कैसी तीखी चलत है [ठहरकर] तुम पी ले आओ भैया, वे न आये तो न आवन देओ। रमा बिटियाको बुलाय देई।

अजीत—नहीं, उसे प्रेक्टिस करने दो। कोई ज़रूरत नहीं। मुझे तो हैरत होती है कि लोग वक़्तकी पाबंदी····

श्याम—[डिस्टेन्समें] अरे भाई अजीत। आर यू इन।

अजीत—[ज़ोरसे] तशरीफ़ लाइए जनाब, आपका यह चार बज रहा होगा। इन्तज़ार कर-करके थक गया। आख़िर····श्याम।

श्याम—[क़रीब आकर] भई, माफ़ करना अजीत। मुझे अक्सर वर्क-शापमें देर हो ही जाती है। तुम्हारा मेसैज मुझे घर वापिस पहुँचनेपर नौकरने दिया।

अजीत—तुम्हें आज तीन दिनसे लगातार फोन कर रहा हूँ जब रिंग करता हूँ तो घंटी बजती रहती है कोई बोलता ही नहीं। आज क़िस्मत-से घंटी देर तक नहीं बजी। किसीने फोन उठाया। मैंने सोचा

चलो आज तो मिले, पर वहाँ देखता हूँ कि आपके नौकर साहब बोल रहे हैं।

श्याम—भई, वह बात ये है कि तुम्हारी भाभीजान ज़रा तफ़रीहके मूडमें आ रही थीं। मैंने भी सोचा कि चलो क्या हर्ज है। वह अपने मायके चली गई हैं [**विराम**]

अजीत—तभी आप रात-दिन घरसे गायब रहते हैं। अच्छा बैठो तो सही चाय ठंढी हो रही है।

श्याम—[**रुककर**] ठीक है। तो क्या यह सिर्फ़ इस चायकी खातिर ही बुलावा भेजा गया था। किसी ख़ास ख़ुशीमें यह चाय पिलाई जा रही है।

अजीत—हाँ, शुरूआतमें तो ख़ुशीके लिए ही थी पर अब देखता हूँ कि बेकार जानको झंझट मोल ले लिया।

श्याम—बात क्या पूछी और जवाब क्या मिला। जनाब, मैं चायका ज़िक्र कर रहा हूँ। आपके किसी रोमांस वग़ैरहका नहीं।

अजीत—तुम भी क्या बातें करते हो, श्याम। रोमांस तो भई, अपनी ज़िन्दगीमें कभी आया ही नहीं। और न आनेकी उम्मीद है। और यह अच्छा भी है ख़ूब हँस-बोल तो लेते हैं अब, क्यों भाई, ठीक है न? मैं तो सिर्फ़ यह कह रहा था कि जो काम मैं जिस तरह सोचता हूँ, वह वैसा होता नहीं।

श्याम—क्या पहेलियाँ बुझा रहे हो। अच्छा बताओ कि यह सब बाजों-आजों-की आवाज़ कैसी है? क्या चाय म्यूज़िकके साथ पी जाने लगी है।

अजीत—नहीं भाई, सारा क़िस्सा तो इसीका है। इसीलिए तुम्हें इतने ज़रूरीमें बुलाया। सोचा कि जब एक बात करना तै ही कर लिया तो विना तुम्हारी मददके क्या हो सकता है। क़िस्सा यह है कि इस वसंत पूर्णिमाको मैंने मदनोत्सव मनानेका विचार किया है। उसीकी प्रैक्टिस होने जा रही है।

श्याम—यह मदनोत्सव क्या फ्रॉड है ? कुछ मैं भी सुनूँ ?

अजीत—तुम विलायत क्या हो आये बस अपनी सभी सांस्कृतिक बातोंको खो बैठे। भाई, पहिले जमानेमें वसंतके दिनों सदैव उत्सव किया जाता था। किसी बाग़में रूपरंगका आयोजन होता था। उस दिन लोग ख़ूब रंगीन पीले कपड़े पहिनते थे, सुन्दरियाँ फूलोंके गहनोंसे सजती थीं, नृत्य-संगीत होता था। नई ऋतुकी ख़ुशीमें गेहूँकी ताजी बालोंका हवन होता था। लोग ख़ूब खाते-पीते, हँसते-खेलते थे।

श्याम—यानी एक तरहका कम्यूनिटी पिकनिक होता था।

अजीत—ऐसे ही समझ लो। तुम दूसरे ढंगसे समझ भी तो नहीं सकते। ख़ैर, अबकी बार तो इस वर्ष मैंने सोचा कि क्यों न हम सब मिलकर एक ऐसा ही आयोजन करें, अकेला पिकनिक तो अच्छा नहीं होता कुछ इन्टेलेक्युअल बात भी शामिल रहे।

श्याम—यह बात है, बहुत ख़ूब। लेकिन और तो सब ठीक है पर यह फूलों सजी सुन्दरियाँ कहाँसे आयेंगी।

अजीत—ख़ैर, अब तुम तो मज़ाक़पर उतर आये, भाई, मैं बहुत सीरियस हूँ। इस बारेमें यह जरूरी नहीं कि हम उत्सव उसी ढंगसे मनायें। मैंने तो एक यों ही छोटा रूपक लिखा है, उसमें तीन गीत हैं और कुछ मामूली-सा प्लाट। नेचरकी खुली स्टेज होगी। हम लोग बाहर झीलपर पिकनिक करें और वहीं थोड़ा-सा हँसी-खेल रहे।

श्याम—आइडिया तो ख़ूब है, पर तुम्हारी भाभी तो हैं नहीं वर्ना वही कुछ तुम्हारी मदद करतीं।

अजीत—तुम तो हो। तुम्हारी मदद क्या कुछ कम है।

श्याम—भई, मैं उनकी तरह ख़ूबसूरत तो हो नहीं सकता कि तुम्हारे कुछ काम आऊँ।

अजीत—नान्सेन्स, तुम तो श्याम कभी-कभी ग़ज़ब करते हो। क्या बात कही है आपने उनके सम्बन्धमें। और क्या मेरे स्वभावको समझा है।

श्याम—आज तुम इतने सीरियस क्यों हो ? अच्छा तो मुझे क्या करना होगा।

अजीत—[**ख़ुश होकर**] ऊपरका सारा इन्तज़ाम तुम्हें ही करना है। मुझसे तो यह सब होगा नहीं, हाँ रूपक, गाना, रिहर्सल वग़ैरह मेरे जिम्मे।

श्याम—अच्छी बात है जैसा तुम कहो। पर यह तो बताओ कि और इसमें हैं कौन-कौन।

अजीत—भाई, वैसे तो मेरा इरादा कुछ गैस्ट्सको भी बुलानेका है पर एक्टिव हिस्सा लेनेवालोंमें राजेन्द्र होगा। वही म्यूज़िक क्लबका सेक्रेटरी और सुरेश, किशन होंगे। ये लोग अभी आते ही होगें [**विराम**] और········

श्याम—और उन्हें नहीं बुलाया········

अजीत—उन्हें किन्हें ?

श्याम—वही तुम्हारी रेखा जी।

अजीत—मेरी कोई क्यों होने लगीं। हाँ, उन्हें भी बुलाया है। उनका तो मेनरोल ही समझो। एक गाना तो वही गा रही हैं। एक छोटी बच्चियोंका कोरस और एक डुएट। मैं और रेखा गायेंगे।

श्याम—तो यों कहो कि इस डुएटके लिए ही यह सब इन्तज़ाम हुए हैं।

अजीत—अबकी बार अगर तुमने फिर मज़ाक़ किया तो लड़ाई हो जायगी। हमारा कुछ इरादा है आप कुछ सोचते हैं। अरे साहब बहादुर, मैं सिर्फ़ अपने पुराने कल्चरकी सुन्दर चीज़ोंको वापिस लाना चाहता हूँ। उन्हें फिरसे अपनी सामाजिक ज़िन्दगीमें फलता-फूलता देखना चाहता हूँ। मैं तो कहता हूँ कि········

श्याम—भई, यह तो यूँ ही मज़ाक़ था। मैं इसकी गम्भीरता समझ रहा हूँ। तुम्हारे आर्टिस्ट स्वभावको अच्छी तरह पहिचानता हूँ। पर क्या मज़ाक़ भी न करूँ? हँसी-ख़ुशीकी बात करने जा रहे हो, उसमें हँसू भी नहीं।

अजीत—ख़ूब हँस लेना, लेकिन पहिले इसे पूरा करवा दो तब। देखो, हम अपनी सारी बातोंको भूल गये हैं। पहले कितने सुन्दर और रंगीन तरीक़े थे। अब अगर पिकनिकपर गये तो बस खानेकी धुन सवार रहती है। बहुत हुआ तो खाते वक़्त कुछ गप्पें, कुछ हल्के मज़ाक़, कुछ ग़ैर संजीदा बातें। तुम्हीं सोचो अगर इसके साथ-साथ कलाका रंग भरा रहे तो कितना फ़ायदा हो सकता है। हम अपनी सोसायटीको एक स्वस्थ ढंगसे कितना ख़ूबसूरत बना सकेंगे। इसलिए मैं तो चाहता हूँ कि हमारे पहिलेके जन-जीवनकी जितनी सुन्दर बातें थीं उन्हें हमें फिर वापिस लाना चाहिए। मैं तो कहता हूँ कि·······

[**तीन-चार लोगोंकी आवाज़ें**]

अजीत—लो वे सब रिहर्सलके लिए आ गये। हलो, राजेन्द्र, किशन, आओ भाई आओ—

राजेन्द्र—देर तो नहीं हुई हमें। ओह, श्याम भी मौजूद हैं। अब क्या ठिकाना है।

श्याम—तो क्या अकेले ही मौज़ उड़ानेकी ठानी थी। क्यों राजेन्द्र?

राजेन्द्र—नहीं भाई, ऐसा कहीं हो सकता है। [**विराम**] हाँ तो अजीत, गाने-बानेकी प्रैक्टिस होगी कि नहीं। और भाई, हम निम्मी और सुधाको भी लेते आये हैं, उनका कोरस भी तो तैयार करना है।

अजीत—कहाँ है निम्मी? [**आवाज़ देकर**] निम्मी डियर, सुधा यहाँ आओ कहाँ चली गई। किशन जरा देखना—

किशन—बहुत शैतान हैं। रास्तेभर लेमन-ड्राप खाती आई है। बड़ी मुश्किलसे जब यह लालच दिया तब कहीं चली, मैंने रास्तेमें कहा कि इतना मत खाओ गला ख़राब हो जायगा।

राजेन्द्र—अरे भला वह मानेंगी। गला ख़राब होनेका कहा तो और जल्दी जल्दी मुँहमें भरने लगीं।

अजीत—[**हँसकर**] गई कहाँ हैं शैतान ?

श्याम—अन्दर माताजी या बहिनके पास होंगी। आ जायेंगी। चलो, तुम तो अपना काम शुरू करो, चलो—आजका जज मैं हूँ।

अजीत—इधर आइए जज साहब बीचके हालमें, वहीं सब कुछ है।

[**विराम, फिर मिश्रित आवाज़ें**]

रमा—लो निम्मी, अब अपना खाना-वाना बन्द करदो। कोरसके लिए तैयार हो जाओ। भैया वग़ैरह सब आ गये हैं।

अजीत—क्यों निम्मी ? शैतान अभी तक लेमन-ड्राप चबाये जा रही है। चलो रिहर्सल शुरू होती है। जाओ मुँह साफ़ कर आओ। और हाँ, सुधा कहाँ है। उसे भी बुला लो, तो फिर राजेन्द्र अब शुरू करो न। देर क्यों की ?

श्याम—हाँ, भाई देर-वेर मत करो, मेरा एक अपाइन्टमेण्ट भी है।

अजीत—अब आप अपने अपाइण्टमेण्ट वग़ैरहको गोली मारिए। यहीं ठहरना पड़ेगा जब तक पूरी प्रैक्टिस न हो जाये। कल ही तो है। अब वक़्त ही कितना है।

श्याम—क्या कहा कल है। भई वाह मैं इतनी जल्दी सारा इन्तज़ाम करूँ और आप हफ़्ते भरसे इसमें लगे हैं, क्यों राजेन्द्र।

राजेन्द्र—तो आपको अब मालूम हुआ। कुछ वसन्तकी भी खबर है। अरे कल नहीं होगा तो क्या अगले सालके लिए प्रैक्टिस की जा रही है [**विराम**] अच्छा भाई अजीत, अब आज फाइनल प्रैक्टिस होगी। कहीं सब मेहमानोंके सामने भद्द उड़े।

अजीत—यह कैसे हो सकता है ?

श्याम—तो शुरू करो न ? राह किस बातकी देख रहे हो। अजीत, क्या सोच रहे हो ?

किशन—अजीत, शुरू क्या करोगे, वह रेखाजी तो आज भी नहीं आईं।

अजीत—यही तो मैं भी ग़ौर कर रहा था।

किशन—और उनका मेन रोल है। अब ?

श्याम—यानी आपके पारटिसिपेंटस पूरे नहीं। स्कीमें चल ही रही हैं। और आज भी न आनेके क्या मानी, क्या पहिले भी नहीं आईं ?

किशन—आईं तो थीं। सिर्फ़ एक दिन मुँह दिखानेको। अजीत ही से पूछो न ?

अजीत—भई मुश्किल-मुश्किलसे तो उन्हें राज़ी कर पाया। पहिले बोलीं माताजीसे इजाज़त ले लो। फिर इजाज़त मिली तो कहने लगीं हम पहिले स्क्रिप्टमें अपना पार्ट देखेंगे। खैर साहब पार्ट भी देखा एक दिन कापी भी उनके पास रही। फिर कहने लगीं कि हम गाना नहीं गायेंगे।

राजेन्द्र—मैं पहिले ही कहता था कि ऐसे लोगोंको मत रखो। पर अजीत किसीकी मानते थोड़े ही हैं।

अजीत—तो मैं और किसे बना लाता। एक साथ यह सारी बातें, पढ़ी-लिखी हो, बोल भी सके, गाना भी गा ले कहाँ मिलती हैं।

श्याम—[**साँस भरकर**] हाँ, भाई, कहाँ मिल सकती हैं।

अजीत—तुम मार खाओगे श्याम [**विराम**] अच्छा लाओ मेरी स्क्रिप्ट, चलो आगे आओ और किशन तुम्हारा डायलोग है रमाके साथ। चलो, बोलो-बोलो !

रमा—बोलूँ।

अजीत—हाँ-हाँ शुरू करो····[**विराम**]

रमा—[**डायलोग बोलते हुए**] मेरे बीरन, आज वसन्तोत्सव है। आज हमें पंचरंग चुनरी, दक्खिनका चीर और फूलोंके गहने मँगा दो।

किशन—[**बोलनेकी कोशिश करता हुआ**] मैं अपनी सखियोंके साथ आम्रवनमें जाऊँगी। सोनेके कलशमें गङ्गा जल भरूँगी.....अरे, यह किसका पार्ट है ?

अजीत—सब ग़लत कर दिया। किशन, इतने दिनोंसे तुम रट रहे हो। भई....यह तुम्हारा पार्ट नहीं, रमाका है। ठीकसे देखकर बोलो।

किशन—सौरी। मैं अपना ही बोलता हूँ—दक्खिनके फूलोंका और फूलों-का, सौरी, फूलोंके गहनोंकी क्या करोगी, रानी, बहिन।

अजीत—सब ग़लत। बिलकुल ग़लत।

किशन—क्यों क्या ग़लती हुई। यही तो लिखा है।

अजीत—यही लिखा है। फूलोंके गहनोंकी क्या करोगी और दक्खिनके फूल....दक्खिनके फूल है या दक्खिनके चीर। उफ़ हद हो गई, तुम सोते क्यों रहते हो ?

राजेन्द्र—किशन, तुम चार दिनसे बराबर ऐसी ही ग़लतियाँ कर रहे हो। तुम्हें हो क्या गया है। और कल उत्सव होगा। छिः !

श्याम—खैर, आइ एक्सपेक्टेड एज़ मच, यह तो मैं जानता था और कुछ नमूना दिखाओ अजीत, अपने मदनोत्सवका। आगे चलो।

अजीत—रिमार्क मत कसो श्याम। ग़लती हो ही जाती है। हाँ रमा, तुम अपना पार्ट बोलो।

रमा—मैं पैरोंमें महावर लगाऊँगी। आज नगरकी कारी सुमारियाँ सजकर।

अजीत—[**डाँटकर**] 'कारी सुमारियाँ' नहीं 'सारी कुमारियाँ।'

रमा—हाँ-हाँ, सारी कुमारियाँ, [**झेंपकर हँसती है**] 'सारी कुमारियाँ सजकर जा रही हैं। आम्रवनमें। सोनेके कलशमें गङ्गाजल

भरे, कुङ्कुम अबीर डाले, आमके बौरों और नई कोपलोंसे कलश सजाये। वह देखो वह गाते जा रहे हैं।

अजीत—'जा रही हैं।'

रमा—'जा रही हैं' तो कहा था।

अजीत—नहीं, 'जा रहे हैं' कहा था।

श्याम—हूँ, ठीक है। इस हिस्सेकी फिर प्रैक्टिस करवाओ। अलगसे। आगे चलो।

किशन—'चल मेरी लाड़िली बहिना। मैं तेरा मार्ग रक्षक बनकर....'

अजीत—किशन। फिर ग़लत। भई, यहाँ लड़कियोंका कोरस है, कितनी दफ़ा बताया, फिर पहिलेसे ही बोल पड़े।

किशन—सौरी, तो कोरस शुरू क्यों नहीं हुआ?

राजेन्द्र—तुम रुको तो सही। लो कोरस अभी शुरू होता है [**विराम**] रमा, यहाँ आओ, अच्छा एक, दो, तीन।

गीत

टेसूके लाल फूल
अमवाके मौर
गेहूँ पै बालें झूलें
फूलों पै भौंर
सखी, कुंकुम अबीर रँगी सोनेकी झारी रे
सोनेकी झारी!
सोनेकी झारीमें
गंगाका पानी
दक्खिनका चीर पहिन
सजे महारानी रे, सजे महारानी
फूली फूली धरती लगै रतनारी

लगै रतनारी
सखी, कुंकुम अबीर रँगी सोनेकी झारी रे,
सोनेकी झारी। [गीत बंद हो जाता है]

श्याम—भई, कोरस तो ख़ासा है। हाँ, कुछ थिन ज़रूर है कुछ लड़कियाँ और होनी चाहिए थीं।

अजीत—वही तो सारा झगड़ा है। लड़कियाँ कहाँसे आयें। जो कुछ हैं यही तीन हैं। रेखा आ जातीं तो उन्हें भी शामिल कर लेते। वह अब तक गायब हैं।

राजेन्द्र—वह आ चुकीं। तीन दिनसे नहीं आई अब क्या आयेंगी।

अजीत—[**पेंसिव होकर**] तीन दिनसे नहीं आई यह और बात है। लेकिन मुझे पूरा विश्वास है वह जरूर आयेंगी। मैंने आज ही फोनपर बातचीत की थी। कह रही थीं, आनेकी पूरी कोशिश करूँगी।

श्याम—तब ठीक है, वह कोशिश करती रहेंगी और तुम्हारा उत्सव भी हो जायगा।

राजेन्द्र—मेरा भी यही ख़याल है।

अजीत—मैं कह रहा हूँ कि सब्र करो, उनका आना निश्चित है।

श्याम—आपको यक़ीन है तो हम भी यक़ीन किये लेते हैं।

राजेन्द्र—अच्छा भाई, आयें चाहे न आयें। हमारी प्रैक्टिस तो जारी रहनी चाहिए।

श्याम—हाँ, यह तो बताओ अजीत कि इस कोरसकी सिचुएशन क्या होगी? सीन कैसे शुरू होगा?

अजीत—सीन तो वहीं शुरू होता है। नगरकी स्त्रियाँ वसन्तोत्सवके लिए सज रही हैं। चमकते कलश लिये, रास्तोंमें गीत गाती हुई कुमारियाँ किसी झीलके किनारे जा रही हैं। वहीं कोरस आयगा।

राजेन्द्र—और इसके बाद ही वह वियोगका गीत है।

अजीत—तुम फिर भूल गये। राजेन्द्र, एक सीन तो यह हुआ। दूसरा नगरके एक घरमें ओपिन होता है। जहाँ कोई वियोगिनी परदेशी प्रियकी यादमें गा रही है। वसन्त आ गया है, चारों ओर ख़ुशियाँ छा रही हैं, फूलोंकी सुगन्धसे भरी हवा लहरकी तरह चारों तरफ़ लिपट जाती है। सुहागिनें मिलनका सिंगार कर रही हैं पर एक वियोगिनी है जिसका पति परदेशसे नहीं लौटा।

श्याम—यह आप सिचुएशन समझा रहे हैं, या कविता कर रहे हैं।

अजीत—नहीं भाई, डायलोग ही ऐसे हैं।

श्याम—तो वह डायलॉग ही शुरू करो न, इण्ट्रोडक्शनकी क्या ज़रूरत है।

अजीत—अब क्या बताऊँ श्याम, असलमें यह पार्ट रेखाको दिया था। उन्हीं-को यहाँ गाना भी था। लेकिन जब वह नहीं आईं तो रमाको तो गाना दे दिया है। पर [**कानमें**] उससे यह डायलॉग कैसे बुलवाऊँगा।

श्याम—[**धीरेसे**] समझ गया [**ज़ोरसे**] तो जब तक यह तुम ही बोल दो अजीत! रेखा तब तक आ ही जायँगी, है न?

अजीत—[**सोचकर**] मैं सोचता हूँ कि सीनको मैं सीधे-सीधे क्यों न बयान कर दूँ। और वहाँ गाना आ जाय [**चुटकी बजाकर**] यह ठीक है। क्यों राजेन्द्र, क्या कहते हो।

राजेन्द्र—यह भी ठीक है। सन्तोषका दूसरा नाम मजबूरी भी है।

श्याम—जो कुछ करना है जल्दी करो। सीन ओपिन करो पहिले गाना तो देखें।

अजीत—लेकिन मैं पहिले ठीकसे लिख तो लूँ। राजेन्द्र, ज़रा पेन देना।

राजेन्द्र—अब आप बादमें लिखिएगा। इतना टाइम नहीं, श्याम, पहिले गाना सुन लो—आओ रमा····

रमा—जी अच्छा—

श्याम—शुरू करो बहिन ।

रमा—

[गीत]

आज फूल रही कचनार
श्याम नहीं महलोंमें
सखी साजें बसन्ती सिंगार
सेन्दुर भरें अलकोंमें
चाँदके सँग हँसें
बात कहते रुकें
बाँह छोड़ें कसें
कामिनी-गंध जैसी
उमर न समाय
रेशम चीर सुनहलोंमें
आये उड़-उड़ पवन,
करें ठण्डा बदन,
रुखे फीके नयन
बीती जाय बसन्ती बहार
रैन बीते पलकोंमें

[विराम]

अजीत—शाबाश रमा । शाबाश । बिलकुल ठीक [विराम] क्यों राजेन्द्र, है न ? रमा, तुम जाकर अब चाय-वाय पिओ ।

[दरवाज़ा खटकता है]—लो श्याम, शायद रेखा भी आ ही गई ।

राजेन्द्र—कारकी आवाज़ तो आई नहीं ।

अजीत—गानेमें क्या सुनाई देता । [विराम] ज़रूर वही हैं ।

[फिर खटखट होती है]

श्याम—जाकर रिसीव तो कर लो अजीत !

अजीत—तुम ही क्यों नहीं चले जाते ?

राजेन्द्र—कोई नहीं जाता । मैं जाता हूँ [**प्रस्थान**]

श्याम—राजेन्द्र, वहीं क्यों रह गये । इधर ही आ जाओ न ?

राजेन्द्र—[**दूरसे**] आ तो रहा हूँ [**क़रीब आकर**] लीजिए अजीत साहब, यह हैं आपकी रेखाजी ।

अजीत—[**ताज्जुबसे**] क्या ख़त ? इधर लाओ ।

राजेन्द्र—आपकी रेखाजीका नौकर अभी दे गया है । कुल दो ही लाइनें हैं । पढ़ दूँ । अजीत साहब, माफ़ कीजिए मेरे गैस्ट आये हुए हैं मैं पार्टिसिपेट नहीं कर सकती । रेखा ।

अजीत—झूठ । यह नहीं हो सकता ।

राजेन्द्र—ख़ुद देख लो । तुम्हारे ही नाम है । लो [**काग़ज़की आवाज़**] देखो मैं झूठ तो नहीं कहता ।

अजीत—[**साँस भरकर**] नहीं भाई तुम नहीं । मैं ही झूठा हूँ ।

श्याम—मैंने तो पहले ही कहा था । वह कभी नहीं आयँगी । इन लड़कियोंके दिमाग़ आजकल बहुत चढ़ते जा रहे हैं । [**विराम**] अच्छा अजीत, तो अब तो शायद सुननेको कुछ बाक़ी नहीं रहा [**विराम**] तो मैं जा सकता हूँ अब—

राजेन्द्र—मैं तो समझता हूँ अजीत, वह सिर्फ़ तुम्हारे साथ डुएट गानेसे घबरा गई, लिखते भी तो ऐसे रोमांटिक गीत हो । उन्होंने एतराज भी किया था, तब आप माने नहीं ।

अजीत—[**अफ़सोसके साथ**] हो चुका हमारा उत्सव । जाओ श्याम अब रिहर्सल नहीं करेंगे [**साँस भरकर**] रेखाने बहुत बुरा किया ।

श्याम—अब आप इसका अफ़सोस मत मनाइए । इसमें दुःख क्या है ?

नहीं आई न सही । कोई दूसरा इन्तजाम कर लो । क्या रेखाके न आनेसे आपका उत्सव ही ख़त्म हो जायगा ?

राजेन्द्र—लगता तो कुछ ऐसा ही है । इनके रंग-ढंग भी यहीं कहते हैं ।

अजीत—[**गुस्सेमें**] क्या कहते हैं मेरे रंग-ढंग । तुम लोगोंने ख़ामख़्वाह बेवक़ूफ़ बना रखा है । मेरे मनकी हालत तो तुम समझते नहीं ।

श्याम—अच्छा-अच्छा, नाराज़ मत हो भाई, तुम तो इतनी जल्दी निराश हो जाते हो । [**फिर हँसकर**] यह रास्ता ही ऐसा है कि इसमें जितनी ठोकरें लगें समझो आदमीको उतनी ही कामयाबी हुई [**विराम**] अजीत, बक अप । कल तुम्हारा उत्सव है । इस तरह मन हारनेसे कैसे काम चलेगा ।

अजीत—अब क्या उत्सव होगा । अब कुछ नहीं हो सकता ।

श्याम—कैसे नहीं होगा । हम जबरदस्ती उत्सव करेंगे, और हाँ तुम, गीत-की जगह कुछ और रखो । [**विराम**] अच्छा तो मैं तो अब चलता हूँ, बाक़ी कल ।

राजेन्द्र—अजीत, क्या कहते हो । तो आज अब खत्म करें । कल फिर आफ़्टरनूनमें शुरू किया जाय, चलना तो वहाँ रातको है ।

श्याम—हाँ, यह तो मैंने पूछा ही नहीं । कहाँ और किस वक़्त ।

अजीत—[**साँस भरकर**] अब तो तुम जाओ । वैसे सातका वक़्त रखा था । वह झीलके किनारे जो पक्का बाँध है न—वहीं उसी चौबुर्जीपर ।

श्याम—अच्छा वहाँ । ठीक है । अजीत, मैं दिनमें तो न आ सकूँगा । हाँ, शाम तक आ जाऊँगा । तुम सब तैयार रहना । गुड लक अजीत—[**जाता है**]

अजीत—नोलक । ख़ैर [**विराम**] राजेन्द्र, तुम लोग जा रहे हो । अच्छा जाओ भाई, जाओ ।

राजेन्द्र—घबराया मत करो अजीत, तुम जाकर रेखासे मिलो और

किसी तरह राज़ी कर लो। सिर्फ़ कल ही के लिए। सारे दोस्त क्या कहेंगे कि बड़े उत्सव करने चले थे। [**हँसकर**] कामदेवका एक तीर भी न चल सका।

अजीत—अब तुम जाओ राजेन्द्र। अब उसकी कोई बात मत करो। ये तो हमारी क़िस्मत है। मैं सोचता हूँ किसी तरह वह कल ही आ जातीं। ख़ैर····अब मैं उनके यहाँ हरगिज नहीं जाऊँगा। अजीत झुक नहीं सकता, टूट सकता है।

राजेन्द्र—टूटो ऊटो मत भाई। हम सबकी हँसी उड़वाओगे क्या? जाओ और उन्हें मना लाओ। वह तुमसे रूठ गई हैं। तुमसे मान भी जायँगी।

अजीत—राजेन्द्र, तुम इतने दिनों साथ रहकर भी अजीतको नहीं पहिचान सके। चाहे उत्सव हो या न हो मैं उनके पास हाथ फैलाने अब नहीं जाऊँगा। ख़ुद ही आतीं तो आ जातीं—

राजेन्द्र—क्या बातें करते हो? इसमें हाथ फैलाने या भीख माँगनेकी क्या बात है? कोशिश करना अपना फ़र्ज़ है। यह तो सोचो, सारे मिलनेवालोंमें इतनी पब्लिसिटी करते फिरे, बड़ी शरमिन्दगी होगी।

अजीत—चाहे जो हो। मैं पत्थर हूँ। जहाँ हूँ वहाँ अटल हूँ।

राजेन्द्र—पागल मत बनो अजीत। आख़िर अब वक़्त ही कहाँ है कि किसी औरको पार्ट दिया जाय। जाओ, बड़े अच्छे हो, जाकर मना लाओ। कोशिश तो करो।

अजीत—अब नहीं। क़तई नहीं।

राजेन्द्र—तो फिर क्या करोगे। यह सारा तितम्बा ख़त्म।

अजीत—ख़त्म करना चाहो ख़त्म कर दो।

राजेन्द्र—हम क्यों चाहेंगे। लेकिन होगा क्या?

अजीत—[**साँस लेकर**] मैं उतना सीन ही काट दूँगा जिसमें मैं और रेखा आते थे।

राजेन्द्र—नहीं, नहीं, वही तो रूपककी सारी जान है।

अजीत—जब वह जीते जागते मेरी चीज़में शरीक नहीं हुई तो रूपकमें ही क्या ज़रूरत है ?

राजेंद्र—देखो, बेकार भावुक मत बनो अजीत।

अजीत—मैं कह चुका। वह हिस्सा अब कट गया। अब बहससे कोई फ़ायदा नहीं। तुम अब जाओ।

राजेन्द्र—अच्छा भाई, तुम जानो। [**विराम**] तो कल सब तैयार रखना और रमा बहिनसे दिनमें एकआध बार प्रैक्टिस ज़रूर करा लेना।

अजीत—कोशिश करूँगा।

[**दृश्य परिवर्तन**]

[**दूरपर कुछ बर्तनोंकी आवाज़**]

माँ—[**बड़बड़ाती हुई दूर ही**] सुबहसे गाना लेकर बैठा तो आधा दिन निकल गया। न खाना न पीना। अब कुछ कहो तो बोलता ही नहीं। रमाको भी बिगाड़ दिया। इतना कहा कि आज पूनो है…

[**दूरसे दरवाज़ेपर खटखट होती है**]

माँ—फिर आ गये सब। तंग कर दिया। कौन है ?

[**फिर खटखट होती है**]

माँ—अजीत, अजीत। रमा।

राजेन्द्र—[**दूरसे खटखट करते हुए**] अजीत, खोलो भाई, हम हैं, राजेन्द्र और श्याम।

माँ—रमा ओ रमा।

रमा—क्या है माँ ?

माँ—बेटी ज़रा देख तो सही अजीतको। वही सब आये होंगे।
रमा—वह तो न उठते हैं, न बोलते हैं।
माँ—तो तू ही देख ले [**विराम**] अच्छी प्रैक्टिस हुई।

[**आखिरी शब्द दूरपर खो जाते हैं**]

राजेन्द्र—अरे रमा बहिन [**विराम**] अजीत कहाँ हैं ?
रमा—अपने कमरेमें।
राजेन्द्र—क्यों, क्या बात है ? तुम भी तैयार नहीं हुई। और रिहर्सल, क्या अब तक सब नहीं आये ?
रमा—आये थे। अजीत भैयाने उन्हें वापिस कर दिया।
राजेन्द्र—सुना श्याम ! क्यों, वापिस क्यों कर दिया ?
रमा—भैयाने सबसे कह दिया कि अब उत्सव नहीं होगा।
राजेन्द्र—लो श्याम अब। मैं कहता हूँ कि····कहाँ हैं अजीत ?
श्याम—और मेरा इतना इन्तज़ाम, सारा सामान, उसका क्या होगा ? हैं कहाँ सरकार ?
रमा—कमरेमें सो रहे हैं। न किसीसे बोलते हैं, न उठते हैं, माँ मना-मनाकर थक गईं।
श्याम—क्या, बात क्या हुई ? क्या रेखाजीका सब्सटिट्यूट नहीं मिल सका।
रमा—नहीं, वह हिस्सा तो भैयाने कल ही काट दिया था।
राजेन्द्र—हाँ, वह तो कल मुझसे ही बात हुई थी। लेकिन साराका सारा प्रोग्राम ही खत्म कर दिया ! अजीब बात है ? आख़िर ऐसा क्या हो गया ?
रमा—कुछ नहीं, माँने मुझे वहाँ जानेसे मना कर दिया।
श्याम—ओ यह बात है। हूँ।
राजेन्द्र—तब तो बहुत बुरा हुआ। अजीतको वाक़ई धक्का लगा होगा। कल रेखाके इन्कार कर देनेसे ही कितना परेशान था। अब तो

सब चीज़ ही ख़त्म हो गई । उधर हँसी भी बहुत होगी । अच्छा, अजीतके पास तो चलो ।

श्याम—हाँ, तो माँने क्या कहा, रमा बहिन ?

रमा—भैयाने माँसे बहुत बहस की पर माँने नहीं माना, कहने लगीं कि मैं पार्ट-वार्ट नहीं करने दूँगी । हाँ पिकनिकपर जाना चाहे तो चली जाय ।

श्याम—बुरा हुआ । ख़ैर....अब अजीतको मनाना मुश्किल होगा । [**विराम**] अच्छा रमा बहिन, तुम जाओ । हम कोशिश करते हैं । [**विराम**] अजीत, अजीत । [**फिर लंबा विराम**]

श्याम—जनाव । क्या सोते ही रहोगे ।

राजेन्द्र—उठो अजीत । हम तुम्हें हरगिज नहीं सोने देंगे । चाहे तुम कितना ही बनो । [**विराम**] चलो उठो ।

अजीत—[**अनमने स्वरमें**] डौण्ट डिसटर्ब । यह क्या करते हो राजेन्द्र, मैं नहीं उठूँगा ।

राजेन्द्र—उठोगे कैसे नहीं ? हम ज़बरदस्ती करेंगे ।

अजीत—नहीं उठूँगा । मुझसे मत बोलो ? श्याम, यहाँसे तुम चले जाओ ।

श्याम—चले कैसे जायँ ! पहिले मेरी वह सारी चीज़ोंकी क़ीमत तो दिलाओ कि ऐसे ही चले जायँ ।

अजीत—[**भरे हुए उठकर**] हाँ, हाँ, तुम लो अपनी क़ीमत, बोलो कितना ख़र्च हुआ ।

श्याम—चलिए अब ख़र्च-वर्च रहने दीजिए । यह तो तुम्हें उठानेका एक बहाना था । वर्ना तुम उठते नहीं । तुम्हारे लिए रुपया-पैसा क्या, जान हाज़िर है ।

अजीत—नो जोक्स मैं बहुत ख़राब मूडमें हूँ ।

श्याम—मूड बी ब्लोड ! आपके मूडको तो हम ख़ूब जानते हैं । अच्छा सीधी तरह बिस्तरसे उठिए । कपड़े पहनिए और चलिए साथ ।

अजीत—मैं कहीं नहीं जाऊँगा। उठ पड़ा हूँ। कहो क्या कहते हो?

राजेन्द्र—भई, कहना क्या है? पिकनिकपर चलना है।

श्याम—तुम ठहर जाओ राजेन्द्र। मैं इन्हें ठीक करता हूँ। जनाब आपको हमारे साथ वहीं चलना है झीलपर [**विराम**] हमें सब मालूम हो चुका है।

अजीत—तो अब क्या होगा वहाँ जानेसे। मैं हरगिज़ यहाँसे नहीं हिलूँगा।

श्याम—आपको चलना पड़ेगा। चाहे आप कुछ कहें।

अजीत—[**विराम**] इन सब बातोंसे कोई फ़ायदा नहीं श्याम, अगर तुम्हें जाना है तो जाओ, मुझे छोड़ दो।

राजेन्द्र—वाह यह कैसे हो सकता है।

श्याम—अरे देखते जाओ। अजीत डौंट बी सिली। रेखा नहीं आई तो क्या हमारा पिकनिक भी न हो।

अजीत—देखो श्याम, तुम यह नाम मेरे सामने बिलकुल मत लो।

श्याम—अजी जनाब ऐसा भी क्या? मैं ख़ूब समझता हूँ। रेखा नहीं आई तो उत्सव नहीं हो सकता। पिकनिक नहीं हो सकता। आप घरमें किसीसे बोल नहीं सकते? हमारे साथ चल नहीं सकते?

अजीत—क्यों और ग़ुस्सा दिलाते हो।

श्याम—मैं तो सच कहता हूँ। हमसे तुम क्यों मनने लगे। हमारे साथ क्यों चलोगे। अभी रेखा आतीं तो फ़ौरन तैयार हो जाते। कहो है न? क्यों राजेन्द्र, कहाँ रेखा कहाँ हम?

राजेन्द्र—अब मैं क्या कहूँ?

श्याम—नहीं, नहीं, कह दो मैं ग़लत कहता हूँ।

अजीत—ख़ैर श्याम। वैसे तो तुम क्या, इस वक़्त कोई आता पर मैं न चलता। लेकिन तुमने एक बहुत बड़ी बात कह दी। अब तुम नहीं भी कहो तो भी मैं चलूँगा।

श्याम—दैट्स लाइक ए गुड ब्वाय। मैं जानता था, अच्छा तो उठो।

अजीत—लेकिन झीलकी चौबुर्जीपर नहीं जाऊँगा।

श्याम—क्यों, क्या वहाँ रेखाकी याद आ जायगी। तुम्हें हम वहीं ले चलेंगे।

अजीत—[**सोचकर**] हूँ [**विराम**] अच्छा बाबा। जैसी तुम्हारी मर्ज़ी।

श्याम—आख़िर ऐसा भी क्या ग़म। आज वसन्त-पूर्णिमा है और आप हैं कि किसीसे बोलते नहीं। हम तुम्हें वहीं ले चलेंगे और तुमसे वही डूयेट भी गवायेंगे।

अजीत—वह डूयेट मैं नहीं गा सकता। और गाऊँगा भी तो किसके साथ।

श्याम—कोई परवा नहीं। तुम अकेले ही गाना। अब तुम चलो [**विराम**] बस यही ठीक है।

अजीत—अच्छा भाई अच्छा। तुम्हारी क़ैदमें हूँ। जिधर चाहो ले चलो।

श्याम—आओ राजेन्द्र।

[**कार स्टार्ट, विराम कार स्टाप**]

[**झीलका एफेक्ट**]

राजेन्द्र—लीजिए आ गये। बस यहीं रोक दो। वह चौबुर्जी है। बाँधपर चलो अजीत।

अजीत—भाई, मेरा मन बिलकुल नहीं हो रहा।

श्याम—[**चलते हुए**] अब बेवक़ूफ़ी मत कीजिए [**विराम**]

राजेन्द्र—[**एकदम रुककर**] सुनो श्याम। यह जगह तो पहिलेसे ही ऑकूपाइड दिखती है।

श्याम—क्या।

राजेन्द्र—देखो न। कुछ लोग वहाँ जमे हैं।

अजीत—मैं कहता था न, और यहाँ आओ। तुमने मेरा दिल अब बिलकुल ही तोड़ दिया।

श्याम—मैं ऊँह, चलकर देखने तो दो [**विराम**]

[**प्रकाश आता है**]

प्रकाश—[**पास आकर**] जी किसकी तलाशमें हैं आप ?

श्याम—कुछ नहीं, समझमें नहीं आता। हम लोग ज़रा पिकनिकको आये थे····

प्रकाश—तो शौक़से कीजिए। रोकता कौन है ?

श्याम—आप।

प्रकाश—जी, ख़ूब रही। मैं क्यों रोकने लगा ?

श्याम—आपने वही जगह ऑकूपाइ कर ली है जो हमने चुनी थी।

प्रकाश—जगहपर किसीका नाम तो था नहीं जनाब। ग़लती हुई माफ़ कीजिए। पर, आइ एम सॉरी, हम वहाँसे हट नहीं सकते।

अजीत—छोड़ो भी श्याम इस बहसको। चलो घर वापिस चलें। मैंने पहिले ही कहा था मैं नहीं जाऊँगा। लेकिन तुमने नहीं माना। और आये भी तो उसी जगह।

श्याम—तो अब यह तो मालूम नहीं था। ख़ैर, वापिस जानेका तो कोई सवाल नहीं।

अजीत—तुम नहीं जाते तो मैं जाता हूँ। [**ज़रा दूरसे**] आते हो तो आओ। यह सारी बात मेरे ऊपर अँधेरेकी तरह छाई चली जा रही है।

प्रकाश—आपके ये दोस्त कुछ पोएट मालूम पड़ते हैं।

श्याम—जी ऐसा ही समझ लीजिए। अच्छा माफ़ कीजिए। हमने आपको डिसटर्ब किया।

प्रकाश—तो क्या आप लोग इस जगहकी खातिर पिकनिक ही छोड़े जा रहे हैं।

श्याम—हाँ, अब यही होगा। आप जगह छोड़ नहीं सकते। हम दूसरी जगह जा नहीं सकते, लेकिन····

प्रकाश—लेकिन क्या ?

प्रकाश—तो अब बैठ ही जाइए। जान-पहिचान तो निकल ही आई है। हाँ, तो क्या कह रहे थे आप ?

श्याम—कुछ नहीं। यों ही। यह अजीत हमारे ज़रा आर्टिस्ट हैं। इन्होंने एक रूपक लिखा था।

प्रकाश—हाँ जनाब तो क्या रूपक था आपका····अजीत साहब। रेखा, तुम जानती हो तो कमसे कम इंट्रोड्यूस तो करा दो। तुम भी तो लेखक हो न ? हाँ साहब, तो आपका रूपक कहीं खेला जानेवाला है।

श्याम—यों कहिए खेला जानेवाला था। आख़िरी मोमेंटपर सैबॉटाज हो गया।

रेखा—जी वह····

श्याम—हाँ-हाँ वही।

अजीत—तुम नहीं मानोगे श्याम।

प्रकाश—यह सब क्या माजरा है। मालूम होता है रेखा जी, आप भी इस बारेमें कुछ जानती हैं।

रेखा—[धीरेसे] नहीं तो····

श्याम—अब बता क्यों नहीं देते अजीत ?

अजीत—क्या करते हो श्याम, चुप नहीं रहोगे ?

प्रकाश—नहीं, यह गोलमाल साफ़ करना पड़ेगा आपको साहब।

श्याम—अरे साहब बात कुछ नहीं, रूपक होना था, एक उत्सव मनाना था, पिकनिक पर आना था। गाने और डुयेट होने थे।

अजीत—श्याम।

प्रकाश—तो हुए नहीं।

श्याम—नहीं हो सके। क्यों रेखा जी ?

रेखा—क्या मुझसे कुछ कहा आपने।

प्रकाश—यानी क्या मतलब ?

श्याम—जनाब मतलब कुछ नहीं ? आख़िरी सीनका ख़ात्मा हुआ, जिससे सारा उत्सव ख़त्म हो गया और उसी वजहसे यह पिक-निक भी।

अजीत—श्याम, तुम चाहते हो मैं चला ही जाऊँ।

प्रकाश—क्यों, क्यों जाते किसलिए हैं। हाँ तो कैसे ख़त्म हुआ ?

रेखा—क्या बात ले बैठे आप भी।

प्रकाश—[**हँसकर**] मालूम होता है कि उसकी जड़ आप ही थीं। क्यों साहब, वह रेखा ही थीं न ?

श्याम—[**हँसकर**] हाँ, यही थीं।

प्रकाश—तो यों कहिए कि मैंने ठीक जाँचा। यह आई न होंगी आपके रूपकमें। क्यों मिस्टर अजीत। आप बहुत नाराज़ भी होंगे। [**विराम**] रेखा, तुम जान-बूझकर क्यों नहीं गई ? इनका रूपक अधूरा रह गया।

रेखा—मैं नहीं गई। [**हँस पड़ती है**]

श्याम—लेकिन आपको यह सब कैसे मालूम ?

प्रकाश—[**हँसते हुए**] चन्द्रा कह दूँ क्यों ? [**चन्द्रा भी हँसती है**] रेखाको ग़लत समझनेकी कोई बात नहीं, आपको अजीत साहब, ख़ैर रेखा नहीं वह मैं हूँ, उत्सव ख़त्म करनेवाला।

अजीत—[**ताज्जुबसे**] आप !

श्याम—[**हँसकर**] यानी आप, आप कैसे ?

प्रकाश—जी हाँ मैं, कह दूँ रेखा।

रेखा—आप यहाँ भी न मानेंगे जीजाजी।

श्याम—जी, कहिए।

प्रकाश—अरे यों ही मज़ाक था। बात यों हुई कि हम लोग आज ही तो आये और आज ही रेखा आपके उत्सवमें आनेकी ज़िद करने

लगीं। जब बहुत रोकनेपर भी यह न मानी तो हमने कहा, एक शर्तपर पार्ट करने जाओ तो चली जाओ [**हँसता है**]

चन्द्रा—अब रहने भी दो न ?

श्याम—[**हँसकर**] जी हाँ, क्या शर्त थी वह।

प्रकाश—शर्त यह थी कि रेखा अगर हीरोइनका पार्ट करें तो मैं उनकी सखी बनूँ। इनको यह शर्त मंज़ूर नहीं हुई और न आपका उत्सव हो सका।

अजीत—यानी आप और सखी।

प्रकाश—क्यों ज़नाब, आपके रूपकमें क्या मेरी शक्ल इनकी सखी होने लायक़ भी नहीं।

श्याम—ज़रूर थी ज़रूर थी। अजीत, पहले नहीं मालूम था वर्ना तुम्हारा रूपक आज हो ही जाता।

रेखा—होता कैसे रूपकका आख़िरी हिस्सा तो यहाँ पूरा होना था।

श्याम—हाँ पूरा तो हो गया। सिर्फ़ रेखा जी, वह एक डुएट अलबत्ता रह गया।

[**सब हँस पड़ते हैं**]

क

म

ल

और

रो

टी

•

: ऐतिहासिक :

[स्थान—कंकरीली पठार और चट्टानी पहाड़ियोंसे घिरा झाँसी केण्टोनमेण्ट, शुरू जून १८५७ की एक शाम। भारी बूटोंकी आवाजें, दूरपर फ़ौजी बैंडपर संध्याकी धुन, सातकी गजर बजती है।]

इन्दरसिंह बुन्देला—ये तो सात बज गये—सात हैं कि छै। नहीं सात ही होंगे। पठारपर सूरजकी ललोंई ही तो रह गई है, ओफ़्फ़ो, आजका दिन कैसा आग-भभूकाकी तरह तपा है जैसे धरतीको लोट-पलट देगा। अब जाके कुछ तरी पड़ी है। सात बज गये और पालटी अब तक नहीं निकली। आज सूबेदार-भैया कहाँ रह गये।

[**भारी बूटोंके साथ चलनेकी आवाज़**]

सूबेदार साहब, ए सूबेदार भैया, [**विराम**] लो वे तो वहाँ नीमतलेके चौंतरेपर बैठे अमानखाँसे मिसकोट कर रहे हैं।

[**पास पहुँचकर**]

अजी सूबेदार साहब, [**विराम**] सुन ही नहीं रहे। चलूँ पास जाकर सैल्यूट मारूँ। रैट एबाऊटन, सैलूट।

लालबहादुर—[**संजीदा ढंगसे**] क्या हर बखत मसखरी करते रहते हो इन्दरसिंह ?

इन्दरसिंह—मैंने कहा कि सूबेदार साब सुनते नहीं तो सैलूट ही बोलूं। सात बज गये और अबतक अपनी पालटी बाजार घूमने नहीं निकली। कण्टूमेण्टकी दुकानें बेरौनक हो रही होंगी [**इतराकर**] इतनी देरतक यह किसकी पत्री पढ़ी जा रही है। क्या कालपीसे भौजीकी आई है। सूबेदार साब [**हँसता है**]

लालबहादुर—देखो भाई, हर बखत सूबेदार मत कहा करो, छै बजेके बाद सब बराबर। हम लालबहादुर, तुम इन्दरसिंह, हमारे बचपनके

साथी, और यह अमानखाँ भैया। एक बस्तीमें जन्मे, एक साथ धूलमें खेलकर बड़े हुए, मारा-पीटा, पढ़ा-लिखा, क्या फ़रक हुआ जो हम सूबेदार हैं और तुम संतरी। राजपाट तो मिल नहीं गया, पेट पालनेके लिए नौकरी दोनों ही करते हैं।

अमानखाँ—सो भी ग़ैरकी, दीन बिगाड़नेवाले फिरंगीकी।

लालबहादुर—[**साँस भरकर**] क्या करें, रहते यहाँ हैं और हुकुम बजाते हैं सात समुन्दर पारका। भाग्यमें यही बदा है।

अमानखाँ—हम काला आडमी जो ठहरे।

इन्दरसिंह—हमसे किसी फिरंगीने काला आदमी अगर अबके कहा तो गोली मार देंगे। ये पक्का है।

लालबहादुर—[**शान्त आवाज़से**] नहीं, अभी ऐसा मत करना, अभी बखत नहीं आया है।

अमानखाँ—जल्दी ही आयेगा। ऐसा दीखता है।

इन्दरसिंह—कैसे, कुछ बताओ तो सही। हम उस दिनके लिए तड़प रहे हैं।

लालबहादुर—जरा शान्ती रखो इन्दर। जल्दबाजीसे काम बिगड़ जाता है। समझे। लो, यह फरमान पढ़ो। दिल्लीसे निकला है। आज आगरेसे डाक लेकर जो सईस आया है वह कपड़ोंमें छिपाकर इस फरमानको ले आया है। [**चारों तरफ़ देखकर**] धीरे-धीरे पढ़ो। बारकमें चारों तरफ़ कान ही कान हैं।

इन्दरसिंह—देखें [**काग़ज़की आवाज़**] दिल्लीसे आया है। ओ हो, तुम्हारे पास कैसे पहुँचा ?

लालबहादुर—अमानखाँ भैयासे पूछो।

अमानखाँ—देखो, किसीसे कहना मत। डाकका सईस स्कीन साहबके खानसामे शाहबुद्दीनका नातेदार है। उसने दिया है। वह कहता

था कि यह बादशाह सलामतका फ़रमान है, जो पलटनमें सबको बारी-बारीसे सुनाया जाय ।

इन्दरसिंह—तुम सुना दो भैया । मैं चारों तरफ़ नज़र रखता हूँ ।

लालबहादुर—ध्यानसे सुनना । यह भौजीका ख़त नहीं है । [**हँसता है**] पढ़ो अमानख़ाँ इस बखत दूर तक कोई नहीं है । साहब लोग रात के नाचकी तैयारीमें लगे होंगे ।

अमानख़ाँ—बादशाह सलामत अजीमुश्शान बहादुरशाह जफ़रका फ़रमान है जो ग़दर कोर्ट दिल्ली सल्तनतकी मुहरसे आया है । हुकुम फ़रमाया है कि हर ख़ासो आम, हिन्दू ओ मुसलमान, अंग्रेज़ी छावनियोंके फौजी और दीगर नौकर पेशा लोगोंको वाज़े हो कि सारे फिरंगी इत्तफ़ाक़ रायसे दो चीज़ोंपर आमादा हैं । यकुम कि फौजियोंको दीन ओ धरमसे महरूम किया जाय । दोयम कि ज़बरदस्ती सारी रियायाको क्रिस्तान बना लिया जाय। इसी मंशासे अंग्रेज़ गवर्नर जनरलने हुकुम दिया है कि फौजमें गाय और सुअर की चर्बीसे बने कारतूस इस्तेमालमें लाये जायँ । अगर इसकी मुख़ालफ़त दस हज़ार फौजी भी करें तो उन्हें तोपदम किया जाय, अगर पचास हज़ार हों तो उन्हें बरख़ास्त कर दिया जाय ।

इन चीज़ोंको ज़ेरे नज़र रखते हुए हमने सल्तनतकी बागडोर हाथमें ले ली है ताकि रियायाका दीन ओ धरम सलामत रहे । और हम हुकुम देते हैं कि जो भी फौजी पल्टनें फिरंगियोंको नेस्तोनाबूद करेंगी और दिल्ली सल्तनतकी फरमाबरदार रहेंगी वे दुगुनी तनख्वाहकी हक़दार होंगी । लातादाद तोपें और ख़ज़ाना हमारी दस्तरसमें आ गया है । हमारी रियायाको चाहिए कि वह फौजियोंका साथ दे, आपसमें इत्तिहाद रखे और जवाँमर्दी दिखाये। फौजियोंको रसद और सामान देनेमें रियायाके जो भी अख़राजात होंगे उनके एवजमें दस्तावेज़ी सबूत पेश करनेपर दुगुनी क़ीमत

दी जायगी। हर वो शख़्स जो ख़ुशइन्तज़ामी क़ायम रखनेमें मददगार साबित होगा ऊँचे ओहदेका हक़दार समझा जायगा।

हर ख़ासो आम हिन्दू ओ मुसलमानकी वाक़फ़ियतके लिए यह फ़रमान जगह-जगह शाया किया जाय और मख़सूस जग्रहोंपर लगाया जाय। फिरंगी अपने जान-मालकी ख़ैरके लिए इस वक़्त नर्मी दिखा सकता है। पर लोग एतमाद न करें और धोखेमें न आयँ। हमारा दौरे इक्तेदार क़ायम है। तीस रुपये घुड़सवार और दस रुपये पैदल, दिल्लीके नये मुलाज़मीनकी तनख़्वाह होगी।

इन्दरसिंह—[**साँस भरकर**] इसका मतलब तो यह हुआ कि फिरंगीका तख़्त उलट गया। क्यों भैया लालबहादुर।

लालबहादुर—हाँ, लगता तो ऐसा ही है। मेरठ और दिल्लीमें ग़दर हो गया है। दिल्लीकी सल्तनतसे विदेशी छाया हट गई है। ख़बरें तो पिछले महीनेसे ही आ रही हैं। पर और जगह छावनियोंमें क्या हो रहा है पता नहीं।

इन्दरसिंह—यह फ़रमान क्या ख़ुद बादशाहके हाथका लिखा हुआ है।

लालबहादुर—[**हँसकर**] क्या पता, बादशाह अपने हाथसे ख़ुद थोड़े ही लिखते हैं। वह बादशाह ठहरे। उनके हुकुमसे ही निकला होगा। पर बादशाहकी ख़ास मोहर इसपर नहीं है।

अमानखाँ—तो क्या हुआ। दिल्लीके ग़दर कोर्टकी मुहर तो है। ग़दर कोर्ट बादशाहने मुल्कका इन्तज़ाम करनेके लिए मुकर्रर किया है। किसीकी तरफ़से सही पर हमें कुछ करना है या नहीं यह बात तै करना ज़रूरी है। अपना दीन धरम ख़तरेमें हो, फौजी उसे बचानेके लिए और फिरंगीको मुल्कसे बाहर निकालनेमें मर-खप रहे हों तब हमारा भी तो कुछ फ़र्ज़ है। हाथपर हाथ धरे बैठे रहें?

इन्दरसिंह—हाथपर हाथ रखे वह जिसने चूड़ियाँ पहिन रखी हों। तुम

लोग हुकुम दो तो अभी जाकर दस फिरंगियोंको तो मैं ही किनारे लगा दूँ।

लालबहादुर—कुँवरजी, तुम्हारी बहादुरीपर शुबहा किसको है। पर हमारे पास कोई ख़बर कहींसे नहीं आई कि हमें यहाँ जौहर दिखाकर आगे क्या करना होगा। हम डकैत तो हैं नहीं कि मार डालें और लूटपाट कर बैठ जाँय। फिर आगे क्या होगा। यह भी तो सोचना पड़ेगा। दो-चार जगहसे और खबर आ जाती। सुना है कि नाना साहब भी बिठूरमें तैयार हो गये हैं। उनके साथ मुंशी अजीमुल्ला और तात्याटोपे हैं, अपनी झाँसी वाली बाई साहबका राज भी फिरंगियोंने दबा रखा है। वह नाखुश तो ज़रूर हैं। पर रास्ता नहीं सूझता कि हमें क्या करना चाहिए।

अमानख़ाँ—अरे हाँ, मैं तो भूल ही गया। मेरे एक रिश्तेदार मेरठकी पल्टनमें रिसालदार हैं, उनकी दस्ती चिट्ठी भी दिल्लीसे आई है। मेरठकी फौज वहाँपर फिरंगियोंको ख़त्म करके दिल्लीकी फ़ौजसे जा मिली है और उसने बादशाहको सलामी पेश की है। **[काग़ज़ निकालते हुए]** यह पुर्ज़ा पढ़ो। हम लोगोंने अबतक कुछ नहीं किया इसके लिए हमें नाम धरा है।

लालबहादुर—पहिले क्यों नहीं बताया। सुनाओ जल्दीसे।

अमानखाँ—लिखा है; बाद खैराफ़ियतके बाज़े हो कि मेरठ, दिल्ली, लखनऊ और बंगालेकी फ़ौजोंने ग़दरका डंका बजा दिया है। झाँसी रजीमेंट अबतक चूड़ियाँ पहिने चुप क्यों बैठी है, क्या उसने अपना दीन धरम सब छोड़ दिया है। बस इतनी ही इबारत लिखी है।

इंदरसिंह—राम राम, बुन्देलखण्डकी तो नाक कट गई। दुनियामें ख़बर हो गई कि झाँसीवाले कायर हैं। और हम अब तक घूँघट काढ़े बैठे हैं।

लालबहादुर—**[मूँछोंपर हाथ फेरकर]** बुन्देलखण्डकी मूँछ नीची नहीं

होगी, इन्दरसिंह हम वह करेंगे जो कोई न कर पायेगा। तमाशा देखना, अब देर नहीं होगी।

अमानखाँ—[**चुटकी बजाकर**] यही ठीक है। मेरा ख़याल है हम जेल दरोगा बख़्शीशअलीसे सलाह करें तो अच्छा रहे। वह बहुत पढ़े-लिखे हैं, अंग्रेज़ोंकी नस-नससे वाक़िफ़ हैं, दुनियाकी ख़बर रखते हैं।

इंदरसिंह—अमानख़ाँ भैया ठीक कहते हैं, अभी चलो।

लालबहादुर—पहिले पता लगाओ कि बख़्शीशअली इस वक़्त हैं कहाँ! उनसे वक़्त और जगह फ़ौरन तै कर लो तो आगेका नक्शा बने। असल बात तो ख़बरोंकी है। एक जगहसे दूसरी जगहकी ख़बर लग नहीं पाती। लगती है तो देरसे। ख़ास तौरसे हरकारोंको भेजो, तब। अंग्रेज़ोंने अपने मतलबके लिए तार खींच रखे हैं। जब चाहें कोसों दूरकी ख़बर बिजलीके मन्तरसे मालूम कर लें। चार घोड़ोंकी बग्घियोंसे डाक भी आती है तो उन्हींकी, दूसरे लोग डाक भेजना चाहें तो बीचमें ही पकड़ ली जाय।

इंदरसिंह—डाक बग्घी कच्ची सड़कोंपर भी कैसी हवाकी तरह चलती है। हर पाँच कोसपर घोड़े बदल देते हैं।

अमानख़ाँ—भाई, जिसके हाथमें ताक़त है वह सब कुछ कर सकता है। हमारे-तुम्हारे हाथमें तार हो तो हम सब भी इस्तेमाल करें। डाक-तार, और सड़कोंका जाल तो उन्होंने हमारे ऊपर क़ब्जा करनेको फैलाया है। यह जादूगरी है उनकी। कप्तान गोर्डनका हुकुम-बरदार शेख़ हींगन है न, वह कह रहा था कि बंगालेमें अंगरेज़ने एक नया जादू-तमाशा चलाया है, लोहेकी धुआँ गाड़ी, जो दो अंगुलकी चिकनी पटरियोंपर दौड़ती है। डाक बग्घीसे चौगुनी तेज़।

इंदरसिंह—जाने क्या क्या मन्तर मार रहे हैं ये फिरंगी। इन्होंने ज़रूर

कोई परेत सिद्ध कर रखा है। ऐसी नई-नई अचरजमें डालनेवाली चीज़ें चला रहे हैं। सब परेत विद्या है।

लालबहादुर—परेत विद्या हो चाहे देव विद्या, राज तो तुम्हारे ऊपर कर रहे हैं। और दिन-दिन क़ब्जा जमाते जा रहे हैं। आज यह राज हड़पा, कल उसे दबाया। बड़े छोटेका कोई खयाल नहीं। हरेककी दुर्गत और बेइज़्ज़ती। हिन्दुस्तानीको, चाहे वह फौजमें हो या और कहीं, बड़े ओहदेपर पहुँचने ही नहीं देते। और जो कभी हम जैसे छोटे-मोटे ओहदेपर पहुँच भी जायँ तो सलामी-गुलामी तो वही बजानी पड़ती है। उस दिनका बाज़ारका किस्सा याद है। हरिजू साह और उनके जेठे कुंवर उत्तमचन्द बग्घीमें जा रहे थे। उधरसे लफटेंट टम्बुल घोड़ेपर निकला। हरिजूसाहको बग्घी रोकते-रोकते उतरनेमें देर हो गई। तब कैसी बेइज्जती की थी उस टम्बुल ने। बग्घी एकदम जप्त कर ली और कण्टूमेण्ट ले गया। हरिजू-साह इतने बड़े साहूकार हैं, जमीन, जायदाद, गाँव है, पर छोटेसे लफ्टण्ट साहबके सामने कुछ नहीं। कोई भी हो। उसे फिरंगीका सामना पड़ते ही घोड़ेसे उतरकर, चौतरेसे नीचे खड़े होकर सलामी बजानी पड़ती है। न धरम रहा न बड़प्पन, न चरित्तर रहा न इज्जत-आबरू। फिरंगीकी गुलामीमें सब स्वाहा हो गया।

अमानखाँ—[**व्यंगसे**] पर हरिजूसाहका क्या बिगड़ा। एक बग्घी गई तो चार और कमा ली होंगी। अंग्रेज़ोंको रसद पहुँचानेका ठेका भी तो उन्हींका है, मुनाफ़ा भी तो उन्हींसे कमाते हैं। उस दिन उनके चेहरेपर ज़रा भी शिकन नहीं आई। टम्बुलके चले जानेपर हँसते हुए पैदल ही हलवाईपुरे चल दिये—हाँ, उत्तमचन्दका मुँह ज़रूर बिगड़ गया था।

इंदरसिंह—उत्तमचन्दकी जगह हम होते तो खून हो जाता।

लालबहादुर—हरिजूसाहने टाल दिया होगा कि कौन इन ललमुहोंके मुँह लगे। बुरा तो मनमें उन्हें ज़रूर लगा होगा। पर उनका ठेका कहाँ है कमसरियट का ?

अमानख़ाँ—उनका नहीं तो उनके भाई चन्दनसाहका तो है। मुनाफ़ा तो घरमें ही आता है। बुन्देलखण्डके आधे गाँव उनके कर्ज़दार हैं। उन्हें क्यों फ़िकर होने लगी। चारो तरफ़ सोना बरसता है। घीके दिये जलते हैं। सुना है ग़दरके डरसे पचास लाख सोनेकी मोहरें उन्होंने चित्रकूटके पेशवोंके ख़जानेमें अमानत रख दी हैं। चित्रकूटके पेशवोंका अंगरेज़ोंसे बिगाड़ नहीं है। आख़िर साह लोग ठहरे, दूरकी सोचते हैं। अंगरेज़ोंके महाजन क्या यों ही हुए हैं।

इन्दरसिंह—बिलकुल खरी बात कही तुमने अमान भैया। गाँवके आधेसे ज्यादा किसान हरिजूसाहके देनदार हैं और पीढ़ी दर पीढ़ी ब्याज भी नहीं चुका पाते। लगानकी वसूली भी फिरंगीकी तरफ़से वही करवाते हैं।

लालबहादुर—बड़ी दुर्दसा है रैयत की। पहिले डाकू बदमासोंसे पार नहीं पड़ती थी, अब दुतरफा बटमार हैं। ख़ैर उन्हें तो ठीक कर लेंगे, पहले ललमुँहोंका फैसला हो जाय। जब दिल्लीसे फ़रमान आया है और मरने-मारनेकी पाती भी आई है तो अब पीछे हटना मुँहपर कालिख पोतनेके बराबर है।

अमानख़ाँ—मैं अभी जाकर दरोग़ा साहबका पता लगाता हूँ जिससे आगेका रास्ता मिले।

लालबहादुर—हाँ मगर जल्दी लौटना, तब तक हम और इन्दरसिंह बाज़ारमें जाकर कुछ नई खबरें इकट्ठी करें। चलो इन्दरसिंह।

[विराम। फिर बाज़ारकी आवाजें, शोर-गुल, दूरसे गानेकी आवाज़ आती है]

इन्दरसिंह—आज बड़ी चहल-पहल है बाज़ार में। हर दुकानपर अपनी

पलटनवाले खड़े हैं। हवा कुछ गरम है। सबके चेहरे कैसे तमतमा रहे हैं।

लालबहादुर—जो बात हमारे मनमें है वह किसी-न-किसी तरह सबके मण्डला रही है। ग़दरकी ख़बरें तो थोड़ी-बहुत सभीको मालूम हैं। पर कोई यह नहीं समझ पा रहा कि क्या करें। ख़ैर, रास्ता तो ज़रूर निकलेगा।

इन्दरसिंह—उधर चलो भैया, उस बड़के नीचे, वहाँ अपने आदमियोंका बड़ा जमघट लगा है। किसी बाबा-बैरागीका भजन हो रहा है।

लालबहादुर—चलो देखें। [**विराम, गीत पास आता है**] यह तो कोई जोगन और वैरागी मिलकर गा रहे हैं। ज़रा दूरसे सुनो कि क्या है ?

[**गीत निकट आ जाता है**]

बाबा दे दे कमल की रोटी
दे दे कमल की रोटी
बाबा दे दे कमल की रोटी
कमल बने तेरा छत्र सिंहासन
धरती बन जाए रोटी

लालबहादुर—यह कैसा नया भजन है। इन्दरसिंह, जरा ग़ौरसे सुनो।

[**गीत फिर उठता है**]

जोगन : ले ले कमल की रोटी, बाबा
वैरागी : दे दे कमल की रोटी

इन्दरसिंह—भजन कुछ नया-सा है। समझमें नहीं आया क्या टेक है, दे दे कमलकी रोटी ?

लालबहादुर—मैं भी यही सोच रहा हूँ। कमलकी रोटी। कमलकी रोटी कैसी ? कुछ गूढ़ गियानकी बात मालूम पड़ती है। चलो पास चलके सुनें। [**विराम**]

इंदरसिंह—जोगन तो देखो कैसी मस्तानी है। [**हँसता है**] फिर-कनी-सी नाच रही है। एक हाथमें सरबती गेहूँ की रोटी है, लल-खोरी हथेली-सी गहरी, और हाथमें यह क्या है ?

लालबहादुर—कमलका फूल, गर्मीसे कुछ कुम्हला गया है। हाथमें कमल और रोटी और भजनमें कमलकी रोटी। कोई बात ज़रूर है।

[**"सूबेदार साब आये हैं," "लाल भैया आये हैं" पृष्ठभूमिमें यह आवाजें**]

इंदरसिंह—जोगनकी आँखें कैसी काली कजरारी चमकदार हैं और हथेलियाँ तो कमलकी उनहार ही हैं।

लालबहादुर—अरे कुँवर साब, जोगी-बैरागियोंपर नज़र नहीं डालते, समझे। ये सिद्‌ध होते हैं। मनकी बात भाँप जाते हैं। मन्तर मार देंगे तो यहीं खड़ेके खड़े रह जाओगे।

इंदरसिंह—मन्तर तो मार दिया कामरूपकी आँखोंने।

लालबहादुर—[**धीमेसे**] चुप रहो, सरम नहीं आती। सब अपने पल्टनियाँ खड़े हैं। जोगन और बैरागी हमारी ही तरफ़ देख रहे हैं। सिपाहियोंने रास्ता छोड़ दिया है। चलो अब आगे बढ़ो। [**विराम**] पालागन महाराज।

बैरागी—ख़ुस रहो। प्रसन्न रहो, जयी होओ बेटा। क्या नाम है तुम्हारा ?

लालबहादुर—लालबहादुर महाराज।

इन्दरसिंह—फ़ौजमें सूबेदार हैं महाराज।

बैरागी—[**लाल० से**] हूँ, और तुम्हारे साथीका नाम बेटा।

लालबहादुर—इन्दरसिंह बुंदेला।

बैरागी—बच्चा, तुम्हारे संगातीकी नजर बड़ी चंचल है। मनुआ उड़ता है। बेटा तुम बुन्देला हो, जिनकी वीरताकी कहानियोंसे बुन्देलखंडका हर पत्थर गूँजता है। तुम होनहार हो, पर अपने मनको कसो।

लालबहादुर—[इन्दरसिंहकी ओर मुँह करके धीमेसे] कहा था हमने कि नजरें मत फेंको।

इन्दरसिंह—छिमा करो महाराज।

लालबहादुर—बाबाजी, इन्दरसिंह अभी कुँवर पदपर हैं। नई उमर है। गलती माफ करो।

बैरागी—सत्तावनकी साल है, बच्चा। कलजुगका आखिरी चरण। पृथ्वी लोट-पोट होगी। ओरसे छोरतक महाभारत मचेगा। दीन धर्मका नाश हो रहा है। पापोंसे धरतीका भार बढ़ गया है। शेषनाग सम्भाल नहीं पा रहे। उनके फन डोल रहे हैं, आसमान-पर धूमकेतु घूम रहे हैं। धरतीपर आग और खूनकी वर्षा होगी। भविष्यपुराणमें लिखा है बच्चा कि कलजुगमें जब विभीपणकी सन्तान सात समुंदरपारसे राज करने आयेगी तब धर्मका लोप हो जायगा। तब खूनसे रँगे, सफेद घोड़ेपर सवार एक हाथमें तलवार और दूसरेमें कमल लिये, एकाक्षी कल्किका अवतार होगा।

लालबहादुर—सच महाराज?

बैरागी—हाँ बच्चा। म्लेच्छोंके खूनसे दुर्गा भवानी नवचण्डी खूनका खप्पर भरना चाहती हैं। देगा तू।

[सब एक दूसरेका मुँह देखते हैं]

जोगन—बाबा, सब एक दूसरेका मुँह देख रहे हैं [हँसकर] प्रले आनेसे पहिले ही डर गये।

इन्दरसिंह—नहीं जोगन, कैसी ही प्रले मचे हम नहीं डरते। हम सिपाही हैं और फिर बुंदेला। हर बखत हथेलीपर जान लिये फिरते हैं। कलजुगका भार हटनेके लिए प्रले हो, हमारा खून दुर्गाके चरणों में चढ़े, तो जनम सफल होजायगा।

बैरागी—जियो बच्चा जियो। तुम्हारे जैसोंसे ही पृथ्वी टिकी रहेगी। भवानी, दे एक रोटी बुन्देला वीरको। यह परसाद है। बच्चा, सँभालके रखना और एक हाथसे दूसरे हाथ पहुँचाना। गब्बर बाबाकी आज्ञा है।

जोगन—[**बड़ी मिठाससे**] लो बुन्देला कुँवर, यह रोटी ऐसी-वैसी नहीं है। मन्त्र फुँके कमलके बीजोंसे बनी है। जहाँ तक यह रोटी जायेगी पृथ्वी परसे म्लेच्छोंका भार उतर जायेगा। रोटी लेना, कौल देना।

लालबहादुर—कौल करार तो हमारी बात है। अपनी बातपर आँच नहीं आने देंगे। महाराज, एक रोटी मुझे भी मिले।

बैरागी—तुम्हें तो बच्चा, खास कामके लिए चण्डीने चुना है। भवानी, कमल दे हवलदारको।

लालबहादुर—[**काँपकर**] कमल, महाराज। कमलपर क्या निछावर करना होगा। रोटी तो म्लेच्छोंका भार दूर करनेके लिए ख़ून माँगती है। और कमल ?

बैरागी—कमलकी एक-एक पंखड़ीपर भवानीके चरण पड़े हैं बच्चा, इसपर शीशका कमल चढ़ेगा, देगा तू।

लालबहादुर—दूँगा बाबा, बख़त आनेपर वह भी चढ़ा दूँगा।

बैरागी—घरसे पूछ लेना बच्चा।

लालबहादुर—कोई ज़रूरत नहीं महाराज, कालपीकी जमुनाजीका पानी ऐसा-वैसा नहीं होता। हमारे घरकी तीन पीढ़ी फौजमें रही हैं। जानपर खेलना सब जानते हैं।

इन्दरसिंह—हमारी रुकमा भौजी साक्षात् दुर्गाका स्वरूप हैं। बखत आने पर सूबेदार भैयाको अपने हाथसे तिलक करके जुद्धमें भेजेंगी।

जोगन—तुम्हारी कोई बहन भी है सूबेदार ?

लालबहादुर—मेरी बिन्नू सोना तो बन्दूकका अचूक निशाना लगाती है। तभी तो लक्ष्मीबाई साब उसे अपने साथ रखती हैं।

एक सिपाही—एक कमल और रोटी मुझे भी मिले, साँई !

बैरागी—कमल और रोटी दोनों, अच्छा दे भवानी।

लालबहादुर—महाराज, आप तो देस-देसान्तर घूमते हैं। त्रिलोककी बात जानते हैं। यह हमारे देसमें क्या हो रहा है ?

बैरागी—देख बच्चा, ध्यानसे सुन ! ऊपर देख। वह हरे लाल रंगकी पूँछवाला तारा देख रहा है ? जब एक जुग खतम होता है तब यह तारा निकलता है। इस तारेकी आवाज़ मेरे कानोंमें आ रही है। एक नहीं सौ सिंहासन इस वक़्त उलटनेवाले हैं। और सबके बाद एक बड़ा सिंहासन उलटेगा। धरतीपर पापका घड़ा भर गया है। कलिकालमें सब एक जैसे हो जाँयेंगे, कोई जात-पाँत नहीं रहेगी। धर्म मिट जायगा। तू देख रहा है कि फिरंगी म्लेच्छके राजमें क्या हो रहा है। राजा रंक हो रहे हैं। उनके कपड़े-गहने खुले आम बिक रहे हैं। बादशाही नाम भरको रह गई है। पेशवे मिट गये।

लालबहादुर—ठीक कहते हो बाबा।

बैरागी—और अब देख क्या हो रहा है। तू पेट पालनेको फौजमें भर्ती हुआ था। दीन-धर्म छोड़नेको नहीं। पर जो फौजी कालेपानी पार जायगा उसका दीन-धरम कहाँ रहेगा ?

इन्दरसिंह—ठीक है, नहीं रह सकता।

बैरागी—और कलजुगमें झूठका राज होगा यह भी मालूम है ? जो सिपाही अब काले कोसों दूर जायगा तो भत्तेका वायदा होनेपर भी भत्ता नहीं मिलेगा। और जो आटा तुझे मिलेगा उसमें पिसी हुई हड्डियाँ खानेको मिलेंगी—

लालबहादुर—शिव शिव !

बैरागी—सिपाहीकी तनखाह सातसे नौ रुपये, सवारकी सत्ताईस रुपये। तुम वीर बुन्देला और मुगलपठान, सिपाही और सवार हो। तनखाह मिलनेपर डिल हवलदार और फिरंगी सार्जन्ट आधीसे ज़्यादा बेईमानीसे घूसमें काट लेते हैं। कलजुगमें बेईमानी और अनाचार होगा यह लिखा है। सो हो रहा है !

जोगन—सब नेम-नियम टूट गये। पृथ्वी मैया करवट लेंगी।

बैरागी—और चर्बीके कारतूस, क्रिस्तानी मदरसे, आग गाड़ीमें छूत-अछूत-का साथ, जमीन-जायजादकी हड़प, राव-राजा रईसोंका खात्मा, किसानोंकी बेदखली, सौ गाँव उजाड़कर एक छावनी, एक नये शहरकी बस्ती, घूसखोरी, ज़बरदस्ती, बेइज्ज़ती, सीनाजोरी, जूते-की ठोकर, गाली, काले आदमीकी नफ़रत यह नये नेम-नियम हैं।

लालबहादुर—बाबा, आप तो बहुत जगहसे घूमते आये होंगे। कुछ उत्तरके हाल बताइए।

बैरागी—उत्तरमें अकाल मेघ गरज रहे हैं, मेरठ, दिल्ली, लखनऊमें चण्डीने म्लेच्छोंके खूनसे सिगार कर लिया है। उनका एक बीज भी वहाँकी धरतीपर नहीं छूटा। बिठूर, कानपुर, प्रयागराज, काशी, पटना, आगरा, जबलपुर, सागर, नागपुर और दूर विन्ध्याचलके पार, उत्तरसे दक्षिण और पूरबसे पश्चिम-तक लाल जीभवालीकी माँग उठ रही है। जय काली।

[दूरपर बिगुल बजता है]

लालबहादुर—तो क्या एक झाँसी ही बीचमें अभागी रह गई है।

बैरागी—यहाँ तो साक्षात् दुर्गा ही आनेवाली हैं। [**बिगुलकी सुदूर आवाज़**] झाँसी फिरंगीके कलंकसे पवित्र होगी। झाँसीको तीन दिशाएँ बुला रही हैं। कालपी और बिठूर, ग्वालियर और

आगरा, सागर और जबलपुर। अच्छा बच्चा, रमते जोगी एक जगह नहीं ठहरते। जय हो दुर्गे।

लालबहादुर—हम पीछे नहीं रहेंगे।

कई आवाज़ें—नहीं रह सकते, माँका दूध नहीं लजायेंगे।

और कई—हमें भी रोटी दो भवानी।

आवाज़ें—हमें कमल दो बाबा।

बैरागी—दे दे कमलकी रोटी भवानी।

जोगन—कमल बने तेरा सतजुग त्रेता
रोटी कलयुगकी महारानी।

[**दोनों गाते हुए चले जाते हैं**]

कमलकी रोटी भवानी।

[**विलयन, दूरपर फिर बिगुल बजता है**]

एक आवाज़—सूबेदार भैया, अब हम फिरंगीकी जबरदस्ती और नहीं सहेंगे।

कई आवाज़ें—एक घड़ी भी नहीं।

एक आवाज़—तुम हुकुम दो तो अभी हमला बोल दें।

कई आवाज़ें—इसी दम। कमरबन्द कसे ही हैं। बन्दूकें भरी रखी हैं वारकमें, अभी चलो।

लालबहादुर—ठहरो, अभी आज रात नहीं। आज तै करेंगे कि किस तरह काम करना है, यहाँसे कहाँ जाना है। बाबाजीने कहा था कि तीन दिशाएँ बुला रही हैं। उसका बन्दोबस्त करना है।

[**तीसरा बिगुल बजता है**]

इन्दरसिंह—बारक वापस जानेका बिगल बज रहा है लाल भैया। बिगल-का हुकम बजाना है या नहीं।

कई आवाज़ें—हुक्म नहीं बजायेंगे। बजा करे बिगल।

लालबहादुर—[**इंदरसिंहसे**] आज कुछ होके रहेगा, ऐसा लगता है।

अमानख़ाँ दरोगाजीसे वक़्त तै करके अबतक नहीं आये इसी वक़्त दरोगाजीसे मिलना चाहिए ।

इन्दरसिंह—और बारक पहुँचनेमें देर हो गई तो कोट माशलके लिए तैयार रहना चाहिए । आजकल साहब लोगोंके तेवर बदल रहे हैं ।

लालबहादुर—कोट मार्शलके पहिले उन्हें छठीका दूध याद आ जायगा ।

इंदरसिंह—छठीका दूध याद करनेका वक्त ही नहीं देंगे । धाँय फैर और खतम । चुटकी बजाते जितनी देर लगेगी, बस । देखो, वह बग्घी किसकी आ रही ।

[**बग्घीकी आवाज़ पास आती है**]

लालबहादुर—[**हल्केसे**] यह तो चंदनसाह भी इधर आ रहे हैं । रोज़ रातको इसी बखत साहबोंसे मीठी बातें करके लौटते हैं—[**कुछ ज़ोरसे**] चन्दनसाह आ रहे हैं, कुछ लोग इधर उधर बरक जायँ ।

इन्दरसिंह—चन्दनसाह आयें या हरिजू । अब हमें किसीका डर नहीं ।

कई आवाज़ें—बिलकुल नहीं ।

एक आवाज़—चूँ-चपड़ करेंगे तो चटनी बन जायगी ।

लालबहादुर—ठहरो, हमें ही बात करने देना । सब चुप रहना [**विराम**] [**बग्घी रुक जाती है**] रामजुहार साहजी ।

चंदनसाह—खुश रहो, तरक्की हो, ओहदा बढ़े । कहो सूबेदार साहब, आज इतनी देर तक कैसे बाज़ारमें हो । [**चारों तरफ़ देखकर**] अभी पल्टन बारकमें वापस नहीं गई । आज तो सब यहाँ दिख रहे हैं ।

इंदरसिंह—गर्मी जादा है आज, घूम रहे हैं, किसीका इजारा है ।

चंदन—अरे रे, बिगड़ते क्यों हो कुँवरजी । हम तो पूछ रहे थे । यहाँ भीड़-भाड़ देखी तो खयाल हुआ कि आज कोई खास बात तो नहीं है ।

इंदरसिंह—खास बात ? तो यह कहो कि ख़ास बातका सुराग लगाने—

लालबहादुर—[**बात काटकर**] कुछ नहीं साहजी, इंदरकी बातका ख़याल मत कीजिए। इन्हें आज गर्मी ज़्यादा चढ़ गई है।

चंदन—हम तो यही कहते हैं भैया कि गर्मी मत चढ़ाओ। जादा गर्मीसे काम बिगड़ता है। सब बना-बनाया धूलमें मिल जाता है। शांतिसे काम करो। खाओ कमाओ, तरक्की पाओ।

लालबहादुर—ठीक कहा साहजी, अपना अपना ख़याल ही तो है। लेकिन इंदरसिंह कहते हैं कि सिरफ पेट भरना ही तो सब कुछ नहीं है, पशु पक्षी भी पेट भर लेते हैं।

चंदन—अब गियान-धियानकी बातें मत करो हमसे भैया। हमें भी सब मालूम है जो पल्टनोंमें हो रहा है। पर हम तो कहते हैं कि भैया, पल्टनका काम हिफ़ाजत करना है। बदअमनी रोकना है। नहीं तो इतने बड़े-बड़े कारबार-बैपार सब ठप हो जायेंगे। लोगोंको खाने तकको नहीं मिलेगा।

लालबहादुर—[**ज़रा गरम होकर**] गियान-धियानकी बातें, साहजी हम सिखा रहे हैं या आप ?

इंदरसिंह—साहजीकी आँख तो कारबार-बैपारपर ही है, सूबेदार साब।

चंदन—अच्छा ख़ैर, क्या नई खबर है सो बताओ। हम तो दिनभर कार-बारमें लगे रहते हैं, एक घड़ीकी मोहलत नहीं मिलती। तुम लोगोंके पास नई नई ख़बरें आती रहती हैं। सुना, अभी कोई जोगी जोगन यहाँ आये थे।

लालबहादुर—हाँ आये थे और चले भी गये।

इंदरसिंह—[**धीरेसे**] वह अमानख़ाँ आ गये। अब जल्दीसे साहजीको यहाँसे हटाओ [**चंदनसे**] साहजी, आपको आज देर नहीं हो रही

घर पहुँचनेमें। रात इतनी हो गई, नौ बजे होंगे। सहरका रास्ता जरा सुनसान रहता है।

चंदन—अरे हाँ हाँ, वह तो भूल ही गया। अच्छा चलूँ। भैया इंदरजी, गुस्सा मत होना हम तो ऐसे ही कह देते हैं। खयाल रखना हमारा। अपना ही समझना। एकाध दिन दुकानपर पधारो ना, ज़रा गोट ही रहे। अच्छा! चलो सईस, या ठहरो कन्टूमेंटसे एकाध संतरी साथमें ले लूँ [**आवाज़ बदलकर**] अरे अमानख़ाँ और दरोग़ाजी भी चले आ रहे हैं। आज तो बाज़ारमें अच्छा ख़ासा दरबार इकट्ठा हो रहा है।

लालबहादुर—डरो नहीं साहजी, आपका कुछ नुक़सान नहीं होगा।

चंदन—कोई ज़रूरत पड़े तो बताना, भूलना मत। सब अपना ही समझना हैं....हैं....हैं।

[**बग्घीकी आवाज़के साथ विलयन**]

इंदरसिंह—हैं....हैं....हैं विभीषण कहींका। जासूसी करने आया था। और फिर कन्टूमेंट वापस चला गया।

लालबहादुर—भाई साहजीसे क्यों नाराज़ होते हो। उनका तो बहुत कुछ दाँवपर लगा है। दोनों तरफ़का खयाल करना पड़ता है। [**ठहरकर**] राम राम दरोग़ा साब।

बख्शीशअली—सलाम भैया, कहो सब ठीक चल रहा है न? कैसे याद फरमाया।

लालबहादुर—[**अलगसे**] बहुत ज़रूरी बातें हैं दरोग़ा साहब, सलाह लेना है। ज़रा यहाँसे कहीं दूसरी जगह चले चलें। अमानख़ाँ भाईसे तो मैंने यही कहा था कि वक्त और जगह तै कर लें तो हम ही आ जायें।

अमानख़ाँ—मैंने अर्ज़ किया था दरोग़ाजीसे कि बात बहुत भारी है, आपसे

बेहतर सलाहकार और कोई नहीं हो सकता। इसलिए आप मेहरबानी करके खुद इसी वक़्त चले आये।

लालबहादुर—दरोग़ाजी आप तो जानते ही हैं कि आजकल क्या हो रहा है। मेरठ, दिल्ली और लखनऊसे रोज़ ख़बरें आ रही हैं। आज बादशाहका फरमान भी दिल्लीसे आया है। उधर पेशवे नाना साहबकी भी कुछ खबरें हैं। फ़ौजी सिपाही सब भरे बैठे हैं। बारूदमें एक छोटी-सी चिनगारी पड़नेकी देर है। ऐसेमें हमें किस तरह आगे बढ़ना चाहिए।

दरोग़ा—हूँ, तो ज़रा एक तरफ़ चलिए। [**विराम**] मेरा भी कलेजा अंग्रेज़ोंका ज़ुल्म देखकर चाक हो चुका है। मैंने बड़ी तनदेही और फरमाबरदारीसे इनका काम अंजाम दिया। पर हमेशा बेइज़्ज़ती ही हाथ आई। हमने महाराज गंगाधर रावकी भी ख़िदमत की और बाई साबकी भी। पर ऐसा कभी नहीं भुगता था। महाराज भी बड़े सख़्त थे, पर दीन धरमकी इज़्ज़त करते थे। आदमीकी ज़िन्दगीमें चार ही बड़ी चीज़ें होती हैं। पहिला धरम, दूसरे इज़्ज़त-आबरू, तीसरे ज़िन्दगीकी गुज़र-बसर और चौथे ज़मीन-जायदाद। फिरंगीके हाथ वह एक भी नहीं बची।

अमानख़ाँ—हमें तो हुक्म दीजिए आप, जल्दीसे।

लालबहादुर—बस इसीकी देर है। दिल्ली मेरठ वाले सभीलोग यह सोच रहे हैं कि झाँसी वाले बुज़दिल हैं, वरना अबतक साथ क्यों नहीं दिया।

दरोग़ा—ठीक सोचते हैं। हम पीछे क्यों रहें। एक ही वारमें यह मुट्ठी भर लोग उठाये जा सकते हैं। और फिरंगीका तख़्त उलटा जा सकता है।

लालबहादुर—पर सोचना यह है कि उसके बाद हमें क्या करना चाहिए। मैं तो समझता हूँ कि बाई साबकी ख़िदमतमें सारी फ़ौज चली

जाय। वे झाँसीकी बागडोर सँभाल लें। अँग्रेजोंको सारे इलाक़ेसे निकाल बाहर करें।

दरोग़ा—बिलकुल दुरुस्त है। बिना बाई साबकी रायके आगेका नक्शा नहीं बनता। उसके बाद तो एक तरफ़ कालपी-बिठूरसे और दूसरी तरफ आगरेकी फ़ौजोंसे मिला जा सकता है।

अमानखाँ—तो क्या कुछ करनेके बाद बाई साबसे अर्ज़ की जाय।

लालबहादुर—मेरी बहन सोना उनकी ख़िदमतमें है। हथियार चलानेमें माहिर है। मैं फ़ौरन उसे सब बताकर बाई साबके पास भेज दूँगा। बादमें दरोग़ा जी किसी वक़्त चले जायँ।

[**दूर घोड़ोंकी टापें**]

इन्दरसिंह—[**आते हुए**] गोरे आ रहे हैं। हमलोगोंकी ख़बर शायद उन्हें लग गई। चन्दन साह कण्टूमेंट वापिस गये थे न ?

अमानख़ाँ—हाँ लफटेंट ट्रंबुल हैं, परसेल साहब और टेलर साहब भी हैं। दरोग़ाजीको एक तरफ़ हो जाना चाहिए वर्ना शक हो जायगा।

इंदरसिंह—शक तो पूरा हो चुका होगा। बल्कि यों कहो कि ख़बर भी पहुँच गई होगी। न मज़ा चखाया चन्दन साहको तो इंदरसिंह बुंदेला नाम नहीं।

[**टापें पास आती हैं**]

तैयार हो जाओ लाल भैया, है कोई हथियार यहाँ।

अमानख़ाँ—बन्दूक़ मेरे पास है। मैं दरोग़ाजीके साथ आते वक्त ले आया था। दरोग़ाजी भी लाये हैं।

इंदरसिंह—दरोग़ाजीकी बन्दूक मुझे दो। दरोग़ाजी पीछे रहें। हम दो ही इन गोरोंके लिए काफ़ी हैं।

[**घोड़े रुकते हैं**]

टर्नबुल—[**ऊँची आवाज़ में**] सूबेदार लालबहादुर किड़र हाय।

लालबहादुर—सलाम ट्रम्बुल साहब।

टर्नबुल—सैल्यूट नहीं बोलटा, काला आडमी। गोलीसे उड़ा डेगा। एकडम सारा पल्टन जो इडर है, फालइन करना माँगटा।

इंदरसिंह—[आगे बढ़कर] खबरदार, जो काला आदमी फिर कहा।

टर्नबुल—एरेस्ट हिम परसेल।

परसेल—बन्डूक नीचे रखो। इन्डरसींग। एकडम।

इंदरसिंह—बन्दूक नीची नहीं हो सकती। समझे।

परसेल—सुनटा है कि नई। बन्डूक नीचे रखो।

लालबहादुर—जो कुछ तुम्हें कहना है हमसे कहो। यह सब क्या तमाशा है ?

टर्नबुल—तमाशा बोलटा है ! इडर टुम साब इटना डेर तक काहेके वास्टे ठा। टुम खुफिया क्या बाट करटा ठा। अमको साब पटा है। टुम इडर म्यूटिनी करना चाहटा। हम टोपसे उड़ा डेगा।

लालबहादुर—देखिए, लफटेंट साहब। हम यह आपकी गाली गुफ्तार बरसोंसे सुनते आ रहे हैं। अब तक सहा पर अब नहीं सहेंगे। समझे। ज़बान सम्भालकर ठीक-ठीक बात करिए। वर्ना खैर नहीं होगी।

टर्नबुल—ओ टुम आँख डिखाता। टुम्हारा आँख निकल जायगा।

अमानखाँ—[आगे बढ़कर] आँख निकालनेवालेकी आखें निकल जायगीं, समझे।

टर्नबुल—ओ, टुम भी शामिल है। टुम लोगोंको किसने बड़काया है। हमने सुना इडर एक जोगन एक मेण्डीकेण्ट आया ठा। हमने उसे पकड़वा बुलाया हाय। डेखो वह आटा।

[पैरोंकी आवाज़]

जोगन—छोड़ ललमुँहे। छोड़। नहीं मानता। [चिल्लाती है]

लालबहादुर—[आगे बढ़कर] यह क्या, जोगनको घसीटे ला रहा है टेलर साहब [लाल होकर] ट्रम्बुल साहब, जोगनको फ़ौरन छोड़नेका हुक्म दीजिए। वरना बहुत बुरा होगा।

इंदरसिंह—और वैरागी बाबा कहाँ है ?

टर्नबुल—और वैरागी मेण्डीकेंट जाब नहीं आया। मारपीट किया टो हामने उसे शूट कर डिया।

इंदरसिंह—[चीख़कर] शूट कर दिया। क्या !

लालबहादुर—वैरागी बाबाको शूट कर दिया तुमने। ट्रम्बुल।

टर्नबुल—-जोगन आया। अच्चा है। मज़ेडार है।

लालबहादुर—ट्रम्बुल। ख़बरदार जो ज़बान निकाली वर्ना····

टर्नबुल—वर्ना—क्या, परसेल। रेडी

इन्दरसिंह—[आगे बढ़कर] वर्ना यह [शूट कर देता है]

टर्नबुल—[आगे बढ़कर] आह !! [मर जाता है]

अमानख़ाँ—और यह ले मरदूद [शूट कर देता है]

परसेल—ऊँख [मर जाता है]

लालबहादुर—बस ख़बरदार। अब न चलाना इधर उस गोरेपर वर्ना जोगनके गोली लग जायेगी। दौड़कर पकड़ो उसे।

इन्दरसिंह—गोलीके बदले तलवार काम करेगी [भागते हुए] ठहर कसाई।

अमानख़ाँ—अरे रे रे—एक झटकेमें गोरेकी गर्दन ही इन्दरसिंहने उड़ा दी। शाबाश। चलो एक दम अब कन्टूमेंट चलें वर्ना ख़बर लगते ही हथियार एक नहीं मिलेगा। मैं सबको लेकर चलता हूँ, लाल, लो यह बन्दूक़।

लालबहादुर—भैया, तुम यहाँ देखना। सबको सम्भालना। मैं अभी आता हूँ।

[तमाम आवाज़ें-शोर]

इन्दरसिंह—चलो भवानी कहीं चोट तो नहीं लगी।

जोगन—चोट। क्या कहूँ, पहिले ही लग चुकी है।

लालबहादुर—[आगे बढ़कर] जोगन बहन यह क्या हो गया।

जोगन—मुझे तुम अपनी बिन्नूके पास तुरन्त पहुँचा दो भैया।

लालबहादुर—अभी ले चलता हूँ। इन्दरसिंह, तुम साथ चलो, दरोग़ाजी भी चलें।

इन्दरसिंह—हाँ चलो अभी फैसला होना है।

[**विलयन**]

[वही रात, शहरमें रानीमहलके पास। **पहरेदार आवाज़ें लगा रहे हैं। भारी पदचापें**]

पहरेदार—खबरदार, होशियार। कौन हो तुम लोग जल्दी बोलो, एक-दो।

लालबहादुर—हम हैं, फ़ौजके सूबेदार लालबहादुर।

पहरेदार—इस वक्त यहाँ बाई साहबके महलोंपर आनेका सबब।

लालबहादुर—ज़रूरी काम है। ज़रा सुनो [**पास आते हुए**]

पहरेदार—वहीं खड़े रहो। आजकी रात ख़तरेकी है। क्या काम है वहीं खड़े-खड़े बताओ।

बख़्शीशअली—ठहरो, मैं बात करता हूँ। भाई हम हैं जेल दरोग़ा, बख़्शीशअली! पहिचानते हो।

पहरेदार—हाँ, पहिचान गया। दारोग़ा साहब, इस वक़्त कैसे? क्या काम है?

बख़्शीशअली—अरे कौन इमामबख़्श।

पहरेदार—हाँ दारोग़ाजी!

बख़्शीशअली—यह सूबेदार लालसिंह हैं। इनकी बहन सोना महलोंमें बाई साहबकी ख़िदमतमें हैं। जानते हो। उनसे इन्हें फ़ौरन मिलना है। अपने साथमें एक जोगन बाई हैं उन्हें भी सोना बाईके पास पहुँचाना है।

पहरेदार—रातमें महलोंपर किसीसे मिलनेकी इजाज़त नहीं है, दारोग़ा साहब आप तो जानते हैं। तिसपर अन्दर बहन-बेटीसे तो बिल्कुल नहीं।

बख़्शीशअली—बड़ा ज़रूरी काम है इमामबख़्श। जानते हो कितनी मुश्किलोंसे इन जोगन बाईको गोरोंके फन्देसे छुड़ाया है।

पहरेदार—सुना आज पल्टनने ग़दर कर दिया। तबसे ख़तरा और बढ़ गया है। महलोंपर दुहरा पहरा है।

बख़्शीशअली—[धीरेसे] ग़दरके बारेमें महारानी बाई साहबको ख़बर पहुँचानी है।

पहरेदार—अच्छा तब तो ठीक है। मैं दूसरे पहरेदारको बुलाकर यहाँ तैनात कर दूँ तब भीतर जाऊँ।

बख़्शीशअली—ठीक है।

[**विराम**]

इन्दरसिंह तुम यहीं ठहरो। हम इधर खड़े हैं।

[**विराम**]

लालबहादुर—सोनासे कहकर इसी वक़्त बाई साहबकी आज्ञा लेना जरूरी है दरोग़ा जी।

बख़्शीशअली—बिल्कुल ठीक है। ताकि सुबहसे काम पूरा कर लिया जाय।

लालबहादुर—पल्टनमें इसी वक़्त गड़बड़ होरही होगी, ऐसा लगता है। दो गोरे मारे गये उधर हमारा रहना जरूरी था। बाई साहब जाने क्या कहें।

बख़्शीशअली—अरे कैसी बातें करते हो। वह तो ऊपरसे चुप हैं। मौक़े की राह देख रही हैं। याद है उन्होंने मेजर इर्विसनसे क्या कहा था "अपनी झाँसी नहीं दूँगी"। झाँसी उनकी है और रहेगी। वही हमारी मालिक हैं।

लालबहादुर—कल फिरंगियोंका सफ़ाया करके चारों तरफ़ डोंड़ी पिटवा दी जाय कि आजसे बाई साहब ही मालिक हैं।

बख़्शीशअली—वह सब हम कर लेंगे। शहर पनाहकी मोर्चाबन्दी भी फ़ौरन करनी होगी। बानपुर वाले राजा मरदनसिंह, नवाब बाँदा, नाना साहब, तात्या टोपे सबको मददके लिए ख़बर देनी होगी। शहरमें गोला बारूद हथियार रसदका इन्तजाम कराना होगा।

लालबहादूर—वह सिर्फ़ हमें अपनी शरणमें ले लें। बाक़ी तो जान लिया जायगा। [क्रासफेड]

इंदरसिंह—तो तुम्हारे कहाँ चोट लगी थी, बता दो जोगन।

जोगन—कहीं नहीं लगी।

इंदरसिंह—झूठ मत बोलो, अभी तो कहा था कि कहीं लगी थी।

जोगन—तो किसीको क्या ? लगी होगी कहीं।

इंदरसिंह—पहली बार तुम्हें देखा तो आँखें पथराके रह गईं।

जोगन—बाबाने कहा था बच्चा मनको कस। पर तुम्हारा तो मनुवा बहुत उड़ता है।

इंदरसिंह—तो हम क्या करें। हर बखत थोड़े ही उड़ता है, अभी तक तो सिर्फ़ एक ही बार उड़ा है।

जोगन—उड़कर किधर चला गया।

इंदरसिंह—कहीं पास ही।

जोगन—वापिस नहीं आया।

इंदरसिंह—नहीं आया। अब नहीं आयेगा।

जोगन—तो किसीने मन्तरसे बाँधकर रख लिया होगा।

इंदरसिंह—हाँ कामरूपकी चमकदार आँखोंका मन्तर चल गया।

जोगन—बाबा रहे नहीं। अब मैं कहाँ जाऊँगी। अपना कहीं कोई घर नहीं।

इंदरसिंह—घर तो है। पर चूने चनखारीका नहीं है, और फिर वह दिखता भी नहीं है।

जोगन—कहाँ है ?

इंदरसिंह—इधर है, मेरे शरीरमें बाईं तरफ़ धड़क रहा है।

जोगन—हिलने-धड़कते घरमें कौन रहे।

इंदरसिंह—रहनेवाला आयेगा तो हिलना-डुलना बन्द हो जायेगा।

जोगन—और जो झाँसीमें ग़दर हुआ तो ?

इंदरसिंह—देख ही चुकी हो सुन्दर जोगन। पहली पूजा तो फिरंगीका सिर चढ़ाकर मैंने की है। ग़दर हुआ तो अपना चढ़ा दूँगा!

जोगन—एक नहीं दो सिर। काल भवानी मागेंगी तो अब दो सिर साथ चढ़ेंगे।

इन्दरसिंह—सच्ची।

जोगन—सच्ची। [**रुककर**] बाँह छोड़ दो। लाल भैया आ रहे हैं। तैयार रहना। अभी सिरफ रोटी दी थी तुम्हें। जिसदिन कमल भेजूँ तुम बाहर प्रलै मचाना, मैं भीतर किलेसे आग बरसाऊँगी।

[**विराम**]

लालबहादुर—सोना, यह जोगन बाई हैं। बड़ी मुश्किलसे आज जान बची इनकी।

सोना—आओ भैना। अब कुछ डर नहीं होगा।

जोगन—नहीं, डर तो पहिले भी नहीं था। जान जानेके पहिले मेरी कटारसे उस फिरंगीकी जाती।

सोना—तुम तो साच्छात भवानी हो, बहन।

लालबहादुर—दो भवानी मिल गई इन्दर, अब चारों तरफ बिजै ही बिजै है।

इन्दरसिंह—मेरी तो छाती दुगनी हो गई। अब हमारे सामने कोई नहीं टिक सकेगा।

लालबहादुर—दरोग़ा साहब, यह है मेरी बिन्नू सोना।

बख्शीशअली—खुश रहो बेटी, आनपर आँच नहीं आये।

लालबहादुर—बिन्नू, तो तुमने महारानी बाई साहबसे पल्टनकी अरदास कही, क्या हुक्म दिया उन्होंने ?

सोना—भैया, अगर कलयुगमें कहीं दुर्गा मैयाका औतार हुआ है तो अपनी बाई साहबमें। उतनी ही दयालु हैं और समैपर उतनी ही चण्डी। [**धीरेसे**] बाई साहब बहुत दिनोंसे फिरंगियोंकी चाल-ढाल परख रही हैं। जब भी झाँसीके हाथसे जानेकी बात मनमें आती

है—मुँह उगते सूरज-सा लाल हो जाता है। पर वे अब तक चुप रहीं क्योंकि महलमें हर तरहसे घिरी हुई हैं। फ़ौज कम है। हथियार, साज सामान और भी कम। थोड़ेसे विलैती हैं जो हर वक़्त जान देनेको तैयार रहते हैं। पर इतने थोड़ेसे आदमियोंसे क्या हो सकता है। जब तक और प्रबन्ध न हो जाय, जंग कैसे शुरू की जाय।

लालबहादुर—वह तो हम सब कर लेंगे। बाई साहब बस आज्ञा दें दें।

बख्शीशअली—कल दोपहर तक सब इन्तजाम हो जायगा। सोना बाई हमारी प्रार्थना बस उनसे कर दो।

लालबहादुर—तुमपर बहुत भरोसा है उनका, तेरी बातको टालेंगी नहीं।

सोना—टालनेकी बात ही नहीं है। हम तो सब भरी बैठी हैं। बाई साहबने सुन्दर-मुन्दर, हमें और बहुत सी बहिनोंको घुड़सवारी युद्ध कला पूरी तरह सिखा दी है।

[अमानखाँ आता है। घोड़ेकी टापें]

अमानखाँ—**[तेजीसे आते हुए]** लाल भैया जल्दी चलिए। हमारी पल्टनने वहाँके आधेसे ज़्यादा फिरंगी खत्म कर दिये—गोला बारूद तोपोंपर कब्जा कर लिया है। जो बचे-खुचे फिरंगी थे वे भागकर बाई साहबके पास आये हैं। क़िलेमें शरण लेनेको।

बख़्शीशअली—यह बड़ा अच्छा हुआ। सब कुछ हमारे हाथ आ गया। फ़ौरन छावनीमें चलकर सब कुछ हाथमें ले लेना चाहिए।

[मुन्दर भीतरसे आती है]

मुन्दर—सोना बहिन, सोना **[लालसे]** सोना कहाँ है?

सोना—यह रही मैं। मुन्दर! क्या है। कोई ख़ास ख़बर?

मुन्दर—इधर आओ जल्दीसे।

[विराम]

सोना—**[धीरेसे]** हाँ बताओ क्या है?

मुन्दर—फिरंगी बाईसाहबकी शरण आये हैं। स्कीन, गोर्डन, डनलप साहब और उनके बीवी बच्चे भी हैं।

सोना—और बाई साहबने क्या कहा ? जल्दी बता।

मुन्दर—बाई साहबने कहा : "हम सरनागतकी रक्षा जरूर करेंगे। पर आगे क्या होगा, सो भगवान जाने। अब तो प्रलय हो रही है, भगवान ही तुम्हारी रक्षा करेगा।"

सोना—उलट गया तखत। अब तक बाई साहब घिरी थीं फिरंगियोंसे। अब फिरंगी घिरे हैं। लाल भैया—

लालबहादुर—हाँ बिन्नू।

सोना—गोरे लोग, स्कीन, गोर्डन डनलप सब बाई साहबकी सरन आ गये। दारोग़ा साहब भी सुन लें।

बख्शीशअली—कहाँ छिपे हैं ?

मुन्दर—क़िलेमें हैं।

बख्शीशअली—क़िलेकी चाबी किसके पास है ?

मुन्दर—वह तो सुन्दरके पास है।

बख्शीशअली—वह हमें दे दो।

मुन्दर—और सोना बहन, गोरोंने बाई साहबसे अरदास की है कि वे झाँसीकी बागडोर सम्भाल लें और उनकी रक्षा करें।

लालबहादुर—जय हो लक्ष्मी बाई की। अब सब काँटे दूर हुए।

जोगन—[**पास आकर**] काँटे अभी चारों तरफ़ लगे हैं, जब तक एक-एक कर सब न उखाड़ फेंके जायँ, हमें तैयार रहना होगा।

लालबहादुर—कोई फिकर नहीं। बीन-बीन कर काँटे फेंक देंगे।

मुन्दर—और गोराके साथ चन्दन साह भी सरनमें छिपने आये हैं।

इन्दरसिंह—चन्दनसाहको तो मैं समझ लूँगा।

अमानखाँ—नहीं, चन्दनसाहने जो कुछ किया अपनी जानकी बचतके लिए किया। सजा तो उन्हें मिल ही जायगी। पर उनके भतीजे

उत्तमचन्द जो दोनोंके बाद सारी जायदादके मालिक हैं वे पल्टनसे मिल गये है। रुपया रसद सब देनेका वायदा किया है। वे फिरंगियोंसे बहुत बेइज़्ज़त हो चुके थे। अब नहीं सहेंगे।

लालबहादुर—बस दरोगाजी, हम कन्टूमेंट चलते हैं। सुबह होनेवाली है। आप डोंडी पिटवानेका इन्तज़ाम कीजिए। **[विराम]**

[शोर-गुल। सारी फौज महलपर आ जाती है]

आवाज़ें—बाई साहबकी जय हो। झाँसीकी जय हो।

एक आवाज़—फिरंगीका तख़्त उलट गया। झाँसीका तख़्त बना रहे।

[डोंडी पिटती है]

आवाज़—"ख़ल्क ख़ुदाका, मुल्क बादशाहका, राज महारानी लक्ष्मीबाईका"।

आवाज़ें—दरसन दो महारानी।

और आवाज़ें—दरसन दो।

[डोंडी फिर पिटती है]

"ख़ल्क ख़ुदाका, मुल्क़ बादशाहका, राज महारानी लक्ष्मीबाईका"

जोगन—बुंदेला कुँवर, बाबा कहते थे एक तखत पलटेगा, दूसरा बिराजेगा, कमल-सा तखत होगा, रोटी-सी रैयत फले-फूलेगी। सो हो गया।

[डोंडी फिर सुनाई देती है]

इन्दर—धरतीसे भार उतर गया।

जोगन—भार उतर गया। अभी और उतरेगा। कमल और रोटी जहाँ-तक जायेंगी भार उतरता जायगा।

[दूर डोंडी सुनाई देती है]

—इति—

पात्र-परिचय

‘जनम क़ैद’ [मनोवैज्ञानिक ट्रेजेडी]

पृष्ठभूमि : द्वितीय महायुद्ध ।

बलराज : सत्याका भाई ।

पिता : सत्याके वृद्ध तथा रुग्ण पिता ।

सतीश : बलराजका मित्र तथा सत्या के पति कैप्टेन महेन्द्रका सहपाठी ।

शोभा : बलराजकी पत्नी ।

सत्या : बलराजकी एकमात्र बहिन, नाटककी हीरोइन ।

कैप्टेन महेन्द्र : [परोक्षमें] सत्याका पति । द्वितीय महायुद्धमें बर्मा फ्रण्टपर शत्रु द्वारा बन्दी, फिर लापता ।

रमेश, मोहन
शोभा, कल्पना, रेखा : अतिथि ।

‘मध्यस्थ’ [सामाजिक व्यंग्य]

लीला : एक मध्यवर्गीय गृहिणी : मनोहरकी पत्नी ।

मनोहर : विनोदी प्रकृतिका सुखी गृहस्थ : मध्यवित्त पदाधिकारी ।

मौसी : [परोक्षमें टेलीफोनपर] लीलाकी मौसी ।

व्रजमोहन लाल : [परोक्षमें टेलीफोनपर] मनोहरके मित्र तथा दफ़्तरमें सह-कर्मचारी ।

नन्दू : मनोहरका नौकर ।

चन्द्रमोहन : व्रजमोहनलालका पुत्र तथा सरलाका नव-विवाहित पति ।

सरला : लीलाकी मौसेरी बहिन ।

'बरात चढ़े' [व्यंग्य]

पृष्ठभूमि :मध्यवर्गीय परिवारमें विवाहका समय ।
प्रकाश : एक नफ़ासत पसन्द शिक्षित नवयुवक, आधुनिक एटीकेटका क़ायल : वरका मित्र ।
रमा : प्रकाशकी पत्नी । वर पक्षके परिवारसे दूरका रिश्ता ।
रामसिंह : प्रकाशका नौकर ।
प्यारे मोहन : वरके बहनोई । अत्यन्त विनोदी प्रकृतिके व्यक्ति, प्रकाशसे हँसी-मज़ाकका सम्बन्ध मानते हैं ।
मुंशीजी : वरके पिता ।
मामा शौक़तराय : वरके मामा ।
श्यामू : वरका छोटा भाई ।
भोला : नाई ।
पण्डित : ....
राजू : नई उम्रका दूल्हा : कुपढ़ तथा दिमाग़से ठस, कृत्रिम रूपसे शरमीला, विवाहके स्वांगसे गौरवान्वित ।
चंपालाल : वरका होनेवाला साला ।
सरोज शांति-किरन : आधुनिक शिक्षा-प्राप्त फार्वर्ड लड़कियाँ, होनेवाली वधूकी मित्र तथा रिश्तेदार ।
गुलज़ारीलाल : वधू पक्षके सम्बन्धी । किरनके बड़े भाई ।
आवाज़ें : वर पक्षके घरमें काम करनेवाले सम्बन्धी ।

'लाउड स्पीकर' [सामाजिक व्यंग्य]

पृष्ठभूमि : शहरमें बाज़ारसे लगा शोरभरा गुंजान मुहल्ला ।
स्वरूप : एक चिड़चिड़ी गृहिणी ।
बुद्धू : बहरा नौकर । ऊँचा बोलनेवाला और ऊँचा ही सुन्नेवाला ।
सुधा : स्वरूपकी सातवर्षीय पुत्री : जन्मसे रोनी ।
दयाल : एक स्वतन्त्र साहित्यजीवी लेखक ।

'संवत्सर' [परिकल्पना]

पृष्ठभूमि : शकोंके आक्रमणकी छायासे आक्रान्त मालवाधिपति विक्रमका विभूतिमय युग ।

युग देवी : परिवर्तनशील इतिहासकी थकी आत्मा ।

संवत्सर : सामयिक परिवेशकी सीमामें निबद्ध चिरन्तन प्रवाह-मान काल ।

कालिदास : महाकवि, विक्रमादित्यका मानस-मित्र और सलाहकार ।

विक्रम : मालव गणराज्यका अधिपति, शकारि, विक्रमादित्य, अमरत्वका पथिक ।

स्वर्णश्री : स्वर्ण-युगकी आत्मा । विक्रमकी इष्टदेवी और महत्त्वा-कांक्षाओंकी प्रेरक शक्ति ।

[गान, युद्ध-वाद्य]

'पिकनिक' [कौमेडी]

पृष्ठभूमि : मध्यवर्गकी सतही रोमानी भावना तथा कैशोर उदासी । ज़िन्दगीकी थोथी समस्याओंको तूल देकर महत्त्वपूर्ण माननेकी प्रवृत्ति ।

अजीत : एक शिक्षित बेकार । सांस्कृतिक कार्योंमें दिखावटी रुचि रखनेवाला, गंभीर (सीरियस) समस्याओंके प्रति उदासीन ।

नौकर : बुड्ढा नौकर, जिसने सारी उम्र अजीतके घर नौकरीमें बिता दी है ।

श्याम : अजीतका मित्र । इंजीनियर, रोमानी उदासी तथा मध्यवर्गीय थोथेपनका मज़ाक़ उड़ाने वाला ।

राजेन्द्र : अजीतका मित्र । अजीतके नाट्य समारोहका एक कला-कार ।

किशन : कलाकार, नाटकमें भाग लेनेवाला ।
रमा : अजीतकी अविवाहित बहिन, कालेजकी छात्रा ।
माँ : अजीतकी माता । अधेड़ विधवा ।
रेखा : यूनिवर्सिटीमें अजीतकी सहपाठिनी ।
प्रकाश : रेखाके बहनोई ।
चंद्रा : रेखाकी बड़ी बहिन ।

'कमल और रोटी' [ऐतिहासिक]

पृष्ठभूमि : १८५७ की सशस्त्र क्रान्तिका आशंकापूर्ण वातावरण । तेज़ीसे बदलते इतिहासकी पीठिकापर टूटती हुई सामन्ती पद्धतियाँ तथा तद्जनित गहरा सामाजिक असंतोष । इतिहास प्रसिद्ध व्यक्तियोंसे अलग, क्रांतिमें पड़े सामान्य लोगोंका चित्र, जो सही अर्थमें विप्लवके परिचालक थे ।

इन्दरसिंह बुन्देला: कम्पनीकी सेनाका मामूली किन्तु प्रबुद्ध सिपाही ।

लालबहादुर : कम्पनीकी फ़ौजमें सूबेदार तथा उस युगके अनुसार अच्छा शिक्षित । फ़ौजका सर्वप्रिय अगुआ ।

अमानखाँ : हवलदार । फ़ौजका सबसे अनुभवी तथा बुद्धिमान व्यक्ति । झाँसी-क्रान्तिकी प्रेरक तथा नियामक शक्ति ।

बैरागी : धर्मके माध्यमसे नई चेतनाका प्रतीक । विद्रोहका दूत, क्रान्तिकी आग स्थानसे स्थानपर ले जानेवाले अज्ञात-नामा व्यक्तियोंमेंसे एक ।

जोगन : बैरागीकी शिष्या, भजन-कीर्त्तनके माध्यमसे विद्रोहकी भावनाको उभारने और फैलानेमें सहायक । बादमें इंदर-सिंहकी प्रेयसी ।

आवाज़ें	: छावनीके बाज़ारमें एकत्र फ़ौजी सिपाही।
चंदन शाह	: शहरके सबसे धनी व्यापारी। छावनीमें कमसरियटके ठेकेदार। अंग्रेज़ोंके ख़ैरख़्वाह तथा जासूस।
बख़्शीश अली	: जेल दरोग़ा। सबसे अधिक शिक्षित व्यक्ति। विद्रोह-के नेता।
टर्नबुल	: अंग्रेज़ लेफ़्टीनेंट।
परसंल	: अंग्रेज़ सार्जन्ट।
पहरेदार	: रानी लक्ष्मीबाईके महलोंके प्रमुख द्वारका प्रहरी।
सोना	: लालबहादुरकी बहिन। रानी लक्ष्मीबाईकी प्रधान अंग-रक्षिकाओंमें एक।
मुन्दर	: रानी लक्ष्मीबाईकी अंगरक्षिका, सोनाकी सखी।

[डोंडी फिरनेकी आवाज़]